ISLAMI ZINDAGI (HINDI)

रुसूमात के बयान पर मुश्तमिल तस्नीफ़

इस्लामी ज़िन्दगी

अव्वल
सफ़र
ज़िल हिज्जह
रबीउष्षानी
ज़िल क़ा'दा
जमादिल ऊला
शव्वाल
जमादिष्षानी
रमज़ान

मोअल्लिफ़ : हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी

रजब
शा'बान

अक़ीक़ा और ख़त्ना के इस्लामी तरीक़े	शादी की रस्मों का बयान	नए फ़ैशन की ख़राबियां
बच्चों की परवरिश का इस्लामी तरीक़ा	मुतबर्रक तारीख़ों के वज़ीफ़े और अ-मलियात	तिजारत के उसूल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त् (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	स़ = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ء
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबिता :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

खुशी ग़मी के मौक़ओ की रस्मों के बारे में शरई
रहनुमाई पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

इस्लामी ज़िन्दगी

मोअल्लिफ़
हकीमुल उम्मत, मुफ़स्सिरे शहीर,
मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
शो'बए तख़रीज (दा'वते इस्लामी)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना
421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद,
देहली - 6 फ़ोन : (011) 23284560

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ　　وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : इस्लामी ज़िन्दगी

मोअल्लिफ़ : ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی

पेशकश : शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : ज़िल हिज्जतुल ह़राम, सि. 1433 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, मटया मह़ल, देहली – 6

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- **अह़मदआबाद :** सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात, फ़ोन 079-25391168
- **मुम्बई :** 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
- **नागपुर :** मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/O) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शााह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290
- **अजमेर शरीफ़ :** 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385
- **हुबली :** A.J. मुधल कोम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड, ब्रीज के पास, हुबली – 580024
- **हैदरआबाद :** मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia@dawateislami.net

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"सादगी म-दनी आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم की सुन्नत है" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "19 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم :

"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(الجامع الصغیر،الحدیث۹۳۲۶،ص۵۵۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾15﴿ इस

ह़दीषे पाक “تَهَادَوْا تَحَابُّوْا” एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك ، ج۲،ص۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴾16﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (म-षलन 26) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾17﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईषाले षवाब करूंगा ﴾18﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾19﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

*अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान “**निय्यत का फल**” और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेम्फ़लेट **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइयें।*

बच्चे को क़ुरआन पढ़ाने की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान , साहिबे क़ुरआन, *मह़बूबे रह़मान* صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है, जो शख़्स* ***अपने बेटे को नाज़िरा क़ुरआने करीम सिखाए*** *उस के सब* ***अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।***

(مجمع الزوائد،الحديث: ۱۱۲۷۱،ج۷،ص ۳۴۴)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

*अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने खू़बी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का कि़याम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने खा़लिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे खै़रो ब-रकत, ह़ज़रते

अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **म-दनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** अकाबिरीने अहले सुन्नत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہِم बिल खुसूस इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن की मायए नाज़ कुतुब को ह़त्तल मक्दूर जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ शाएअ़ करने का अ़ज़्म रखती है। इस सिलिसले में कई कुतुबो रसाइल (तख़रीज व तसहील शुदा) त़बअ़ हो कर मन्ज़रे आ़म पर आ चुके हैं। जिन में "**बहारे शरीअ़त**" और "**जद्दुल मुम्तार**" जैसी ज़ख़ीम कुतुब भी शामिल हैं औलियाए किराम के फ़ैज़ान से येह सिलिसला जारी रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। ज़ेरे नज़र किताब "**इस्लामी ज़िन्दगी**" भी इस सिलिसले की एक कड़ी है जो कि ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَیہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की इस्लामी रुसूमात के बारे में एक मायए नाज़ तालीफ़ है।

इस किताब में उन रस्मों का बयान है जो मा'मूली फ़र्क़ के साथ पाक व हिन्द में राइज हैं। मुफ़्ती साहि़ब رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने अव्वलन मुरुव्वजा रस्में बयान कर के इन में पाई जाने वाली क़बाह़तों की निशानदेही की है फिर इस्लामी नुक्त़ए नज़र से इन की जाइज़ सूरतों की त़रफ़ रहनुमाई फरमाई है। येह किताब आज से तक़रीबन 64 बरस क़ब्ल लिखी गई थी येही वजह है कि ह़कीमुल उम्मत رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ने इन रस्मों के अख़राजात भी अपने दौर के मुत़ाबिक़ बयान किये हैं, फ़ी ज़माना इन रस्मों पर किये जाने वाले अख़राजात में कई गुना इज़ाफ़ा हो चुका है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इल्तेजा है कि हमें इस किताब की रोशनी में ना जाइज़ रस्मों का ख़ातिमा कर के इस्लामी रस्मों को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

आमीन

"**दा'वते इस्लामी**" की मजलिस "**अल मदीननतुल इल्मिय्या**" इस म-दनी गुलदस्ते को दौरे जदीद के तकाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुए पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है, जिस में म-दनी उ-लमाए किराम دامت فیوضھم ने दर्जे ज़ैल काम करने की कोशिश की है :

❁ किताब की नई कम्पोज़िंग, जिस में रुमूज़े अवक़ाफ़ का भी ख़याल रखने की कोशिश की गई है

❁ दीगर नुस्ख़ों से तकाबुल

❁ ह़वाला जात की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज

❁ अ़-रबी व फ़ारसी इबारात और आयाते क़ुरआनिय्या के मतन की तत़बीक़ व तस्ह़ीह़

❁ एह़तियात़ के साथ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ताकि अग़लात़ का इमकान कम हो

❁ ह़वाशी में दर्जे ज़ैल उमूर का एहतेमाम किया गया है :

★ मुश्किल अलफ़ाज की तस्हील, अ़-रबी व फ़ारसी इबारात का तर्जमा

★ क़ुरआनी आयात का तर्जमा "**कन्ज़ुल ईमान शरीफ़**" से

★ अह़ादीष व रिवायात के ह़वाल जात

❁ आख़िर में मआख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, उन के सिने वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

इस किताब को ह़त्तल मक़्दूर अह़सन अन्दाज़ में पेश करने में उ-लमाए किराम ने जो मह़नत व कोशिश की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाए, इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इल्मो अ़मल में ब-र-कतें अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

शो'बए तख़्रीज, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالۡعَاقِبَةُ لِلۡمُتَّقِیۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنۡ کَانَ نَبِیًّا وَّ اٰدَمُ بَیۡنَ الۡمَاءِ وَالطِّیۡنِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ اَجۡمَعِیۡنَ اِلٰی یَوۡمِ الدِّیۡنِ

मुसलमानों की बीमारियां और इन का इलाज

आज कौन सा दर्द रखने वाला दिल है जो मुसलमानों की मौजूदा पस्ती और इन की मौजूदा ज़िल्लतो ख़्वारी और नादारी पर न दुखता हो और कौन सी आंख है जो इन की गुर्बत, मुफ़्लिसी, बे रोज़गारी पर आंसू न बहाती हो, हुकूमत इन से छिनी, दौलत से येह महरूम हुए, इ़ज़्ज़त व वक़ार इन का ख़त्म हो चुका ज़माने की हर मुसीबत का शिकार मुसलमान बन रहे हैं इन हालात को देख कर कलेजा मुंह को आता है मगर दोस्तो ! फ़क़त रोने और दिल दुखाने से काम नहीं चलता बल्कि ज़रूरी है कि इस के इलाज पर ख़ुद मुसलमान क़ौम ग़ौर करे, इलाज के लिये चन्द चीज़ें सोचना चाहियें :

अव्वल येह कि अस्ल बीमारी क्या है, **दूसरे** येह कि इस की वजह क्या ? क्यूं मरज़ पैदा हुवा ? **तीसरे** येह कि इस का इलाज क्या है ? **चौथे** येह कि इस इलाज में परहेज़ क्या है ? अगर इन चार बातों को ग़ौर कर के मा'लूम कर लिया गया तो समझो कि इलाज आसान है। इस से पहले बहुत से लीडराने क़ौम और पेश्वायाने मुल्क ने बहुत ग़ौर किये और त़रह़ त़रह के इलाज सोचे। किसी ने सोचा कि मुसलमानों का इलाज सिर्फ़ दौलत है। माल कमाओ तरक़्क़ी पा जाओगे। किसी ने कहा : इस का इलाज इ़ज़्ज़त है। काउन्सिल के मेम्बर बनो आराम हो जाएगा। किसी ने कहा कि तमाम बीमारियों का इलाज सिर्फ़ बेल्चा है। बेल्चा उठाओ बेड़ा पार हो जाएगा। इन सब नादान त़बीबों ने कुछ रोज़

बहुत शोर मचाया मगर मरज़ बढ़ने के सिवा कुछ हासिल न हुवा। इन की मिषाल उस नादान मां की सी है जिस का बच्चा पेट के दर्द से रोता है और वोह ख़ामोश करने के लिये उस के मुंह में दूध देती है जिस से बच्चा कुछ देर के लिये बहल जाता है मगर फिर और भी ज़ियादा बीमार हो जाता है। क्यूंकि ज़रूरत तो इस की थी कि बच्चे को मुसहिल[1] दे कर उस का मे'दा साफ़ कर लिया जाए, इसी त़रह़ मैं दा'वे से कह सकता हूं कि आज तक किसी लीडर मुआ़लिज ने अस्ल मरज़ न पहचाना और सह़ीह़ इलाज इख़्तियार न किया और जिस अल्लाह के बन्दे ने मुसलमानों को उन का सह़ीह़ इलाज बताया तो मुस्लिम क़ौम ने उस का मज़ाक़ उड़ाया उस पर आवाज़े कसे[2] ज़बान त़ा'ना दराज़ की, ग़रज़े कि सह़ीह़ त़बीबों की आवाज़ पर कान न धरा। हम इस के मुतअ़ल्लिक़ अर्ज़ करने से पहले एक ह़िकायत अ़र्ज़ करते हैं :

एक बूढ़ा किसी ह़कीम के पास गया और कहने लगा कि "ह़कीम साह़िब ! मेरी निगाह मोटी हो गई है।" ह़कीम ने कहा : "बुढ़ापे की वजह से।" बूढ़ा बोला : "कमर में दर्द भी रहता है।" ह़कीम ने जवाब दिया : "बुढ़ापे की वजह से।" बुढ्ढे ने कहा : "चलने में सांस भी फूल जाता है।" जवाब मिला कि "बुढ़ापे की वजह से।" बुढ्ढा बोला : "ह़ाफ़िज़ा भी ख़राब हो गया, कोई बात याद नहीं रहती।" त़बीब ने कहा : "बुढ़ापे की वजह से।" बढ्ढे को ग़ुस्सा आ गया और बोला कि "ऐ बे वुक़ूफ़ ह़कीम ! तू ने सारी ह़िक्मत में बुढ़ापे के सिवा कुछ नहीं पढ़ा।" ह़कीम ने कहा कि "बुढ्ढे मियां ! आप को जो मुझ बे क़ुसूर पर बिला वजह ग़ुस्सा आ गया येह भी बुढ़ापे की वजह से है।"

---

1 ....या'नी पेट साफ़ करने वाली दवाई

2 ....त़न्ज़ किया

बि ऐ़निही आज हमारा भी येही ह़ाल है मुसलमानों की बादशाहत गई, इ़ज़्ज़त गई, दौलत गई, वक़ार गया, सिर्फ़ एक वजह से वोह येह कि हम ने शरीअ़ते मुस्त़फ़ा की पैरवी छोड़ दी हमारी ज़िन्दगी इस्लामी न रही। हमें ख़ुदा का ख़ौफ़, नबी की शर्म, आख़िरत का डर न रहा येह तमाम नुहूसतें सिर्फ़ इसी लिये हैं, आ'ला ह़ज़रत قدس سرہ फ़रमाते हैं।

दिन लह्व में खोना तुझे शब नींद भर सोना तुझे
शर्मे नबी, ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं (1)

मस्जिदें हमारी वीरान, मुसलमानों से सीनेमा व तमाशे आबाद हर क़िस्म के उ़यूब मुसलमानों में मौजूद। हिन्दवानी रस्में हम में क़ाइम हैं हम किस त़रह़ इ़ज़्ज़त पा सकते हैं। मुह़म्मद अ़ली जौहर ने ख़ूब कहा है।

बुल्बुल व गुल गए गए लेकिन !
हम को ग़म है चमन के जाने का !

दुन्यावी तमाम तरक़्क़ियां बुलबुलें थीं और दौलते ईमान चमन, अगर्चे चमन आबाद है हज़ारहा बुलबुलें फिर आ जाएंगी मगर जब चमन ही उजड़ गया तो अब बुलबुलों की आने की क्या उम्मीद है, मुसलमानों की अस्ल बीमारी तो शरीअ़ते मुस्त़फ़ा को छोड़ना है अब इस की वजह से और बहुत सी बीमारियां पैदा हो गईं। मुसलमानों की सद हा बीमारियां तीन क़िस्म में मुन्ह़सिर हैं। अव्वल रोज़ाना नए नए मज़्हबों की पैदावार और हर आवाज़ पर मुसलमानों का आंखें बन्द कर के चल पड़ना। दूसरे मुसलमानों की ख़ाना जंगियां और मुक़द्दमा बाज़ियां और आपस की अ़दावतें। तीसरे हमारे जाहिल बाप दादों की

---

1 .... ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ हिस्सए अव्वल, सफ़ह़ा 68 पर येह शे'र यूं लिखा है :
दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी, ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

ईजाद की हुई ख़िलाफ़े शरअ़ या फ़ुज़ूल रस्में। इन तीन क़िस्म की बीमारियों ने मुसलमानों को तबाह कर डाला, बरबाद कर दिया, घर से बे घर बना दिया मक़रूज़ कर दिया। गर्ज़ें कि ज़िल्लत के गढ़े में ढकेल दिया।

पहली बीमारी का इलाज सिर्फ़ येह है कि मुसलमान एक बात ख़ूब याद रखें वोह येह कि कपड़ा नया पहनो, मकान नया बनाओ, ग़िज़ाएं नई नई खाओ हर दुन्यावी काम नए नए करो मगर दीन वोही तेरह सो बरस वाला पुराना इख़्तियार करो हमारा नबी पुराना, दीन पुराना, क़ुरआन पुराना, का'बा पुराना, ख़ुदा तआ़ला पुराना (क़दीम) हम इस पुरानी लकीर के फ़क़ीर हैं येह कलिमात वोह हैं जो अकषर हज़रते क़िब्लए आ़लम पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह साहिब मर्हूम व मग़्फ़ूर पीरे त़रीक़त अ़ली पूरी फ़रमाया करते थे और इस का परहेज़ येह है कि हर बद मज़हब की सोहबत से बचो, उस मौलवी के पास बैठो जिस के पास बैठने से हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इश्क़ और इत्तिबाए़ शरीअ़त का जज़्बा पैदा हो।

दूसरी बीमारी का इलाज येह है कि अकषर फ़ित्ना व फ़साद की जड़ दो चीज़ें हैं एक गुस्सा और अपनी बड़ाई और दूसरे हुक़ूक़े शरइय्या से ग़फ़्लत। हर शख़्स चाहता है कि मैं सब से ऊंचा हूं और सब मेरे हुक़ूक़ अदा करें मगर मैं किसी का हक़ अदा न करूं अगर हमारी त़बीअ़त में से "ख़ुद" निकल जाए आ़जिज़ी और तवाज़ोअ़ पैदा हो हम में से हर शख़्स दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी जंगो जिदाल और मुक़द्दमा बाज़ी की नौबत ही न आए। फ़क़ीर की येह थोड़ी सी गुफ़्त-गू اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत नफ़्अ़ देगी ब शर्ते की इस पर अ़मल किया जाए।

तीसरी बीमारी वोह है जिस के इलाज के लिये येह किताब लिखी जा रही है हिन्दुस्तान के मुसलमानों में बच्चे की पैदाइश से ले कर मरने तक मुख़्तलिफ़ मौक़ओं पर ऐसी तबाहकुन रस्में जारी हैं जिन्हों ने मुसलमानों की जड़ें खोखली कर दी हैं मैं ने ख़ुद देखा है कि उन के मरने जीने शादी बियाह की रस्मों की ब दौलत सद हा मुसलमानों की जाएदादें, मकानात दुकानें, हिन्दुओं के पास सूदी क़र्ज़े में चली गईं और बहुत से आ'ला ख़ानदान के लोग आज किराये के मकानों में गुज़र कर रहे हैं और ठोकरें खाते फिरते हैं। एक निहायत शरीफ़ ख़ानदानी रईस ने अपने बाप की चालीसवें की रोटी के लिये एक हिन्दू से चार सो रूपिये क़र्ज़ लिये जिस से सताईस सो रूपै दे चुके हैं और पन्दरह सो और बाक़ी थे उन की जाएदाद भी तक़रीबन ख़त्म हो चुकी, अब वोह ज़िन्दा हैं, साहिबे औलाद हैं फ़ाक़े से गुज़र कर रहे हैं।

अपनी क़ौम की इस मुसीबत को देख कर मेरा दिल भर आया। तबीअत में जोश पैदा हुवा कि कुछ ख़िदमत करूं। रौशनाई के येह चन्द क़तरे हक़ीक़त में मेरे आंसूओं के क़तरे हैं ख़ुदा करे कि इस से क़ौम की इस्लाह हो जाए। मैं ने येह महसूस किया कि बहुत से लोग इन शादी बियाह की रस्मों से बेज़ार तो हैं मगर बिरादरी के ता'नों और अपनी नाक कटने के ख़ौफ़ से जिस तरह हो सकता है क़र्ज़ उधार ले कर इन जहालत की रस्मों को पूरा करते हैं। कोई ऐसा मर्दे मैदान नहीं बनता जो बिला ख़ौफ़ हर एक के ता'ने बरदाश्त कर के तमाम रस्मों पर लात मार दे और सुन्नत को ज़िन्दा कर के दिखा दे कि जो शख़्स सुन्नते मुअक्कदा को ज़िन्दा करे उस को सो शहीदों का षवाब मिलता है क्यूंकि शहीद तो एक दफ़्अ़ तल्वार का ज़ख़्म खा कर मर जाता है मगर येह अल्लाह का बन्दा उम्र भर लोगों की ज़बानों के ज़ख़्म खाता रहता है।

वाज़ेह़ रहे कि मुरुव्वजा रस्में दो क़िस्म की हैं एक तो वोह जो शरअ़न ना जाइज़ हैं दूसरी वोह जो तबाहकुन हैं और बहुत दफ़्आ़ उन के पूरा करने के लिये मुसलमान सूदी क़र्ज़ लेते हैं और सूद देना भी ह़राम है और लेना भी। इस लिये येह रस्में ह़राम काम का ज़रीआ़ हैं इस रिसाले में दोनों क़िस्म की रस्मों का ज़िक्र किया जाएगा और बयान का त़रीक़ा येह होगा कि इस रिसाले के अलाहि़दा अलाहि़दा **बाब** होंगे या'नी पेदाइश की रस्मों का एक **बाब** फिर बियाह शादी की रस्मों का एक **बाब** फिर मौत की रस्मों का अलाहि़दा **बाब** वग़ैरा वग़ैरा। हर रस्म के मुतअ़ल्लिक़ तीन बातें अ़र्ज़ की जाएंगी। अव्वल तो मुरुव्वजा रस्म और फिर उस की ख़राबियां फिर उस का मस्नून और जाइज़ त़रीक़ा।

इस किताब का नाम "**इस्लामी ज़िन्दगी**" रखता हूं और रब्बे करीम के करम से उम्मीद है कि वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में इस को इस्मे बा मुसम्मा बनाए और कबूल फ़रमा कर मुसलमानों को इस पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे और मेरे लिये इस को तोशए आख़िरत और सदक़ए जारिय्या बना दे।

اٰمِیْن اٰمِیْن یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ بِجَاہِ رَسُوْلِکَ الرَّءُوْفِ الرَّحِیْم

وَ اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

नाचीज़

अह़मद यार ख़ान नई़मी औझान्वी बदायूनी

दो सफ़रुल मुज़फ़्फ़र यौमे जुमुअ़तुल मुबारक सि 1363 हि.

पहला बाब

बच्चे की पैदाइश

मुरुव्वजा रस्में

बच्चे की पैदाइश के मौक़अ़ पर मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मुख़्तलिफ़ रस्में हैं मगर चन्द रस्में ऐसी हैं जो तक़रीबन किसी क़दर फ़र्क़ से हर जगह पाई जाती हैं वोह ह़स्बे ज़ैल हैं :

﴾1﴿ लड़का पैदा होने पर आ़म तौ़र पर ज़ियादा ख़ुशी की जाती है और अगर लड़की पैदा हो तो बा'ज़ लोग बजाए ख़ुशी के रन्जो ग़म मह़सूस करते हैं।

﴾2﴿ पहले बच्चे पर ज़ियादा ख़ुशी की जाती है फिर और बच्चों पर ख़ुशी मनाई तो जाती है मगर कम।

﴾3﴿ लड़का पैदा हो तो पैदाइश के छे रोज़ तक औ़रतें मिल कर ढोल बजाती हैं।

﴾4﴿ पैदाइश के दिन लड्डू या कोई मिठाई अहले क़राबत में तक़्सीम होती है।

﴾5﴿उस दिन मीराषी डोम, दूसरे गाने बजाने वाले घर घेर लेते हैं और बेहूदा गाने गा कर इन्आ़म के ख़्वास्तगार होते हैं। मुंह मांगी चीज़ ले कर जाते हैं।

﴾6﴿ बहन, बहनोई वग़ैरा को जोड़े रूपिये वग़ैरा बहुत सी रस्मों के मा तह़त दिये जाते हैं, लट धुलाई, गूंद बनवाई वग़ैरा।

﴾7﴿ दुल्हन के मां, बाप, भाई की त़रफ़ से छोछक आना ज़रूरी होता है जिस में कि दूल्हा दुल्हन, सास ससुर, नन्द नन्दोई ह़त्ता कि घर के बिहिश्ती, भंगी के लिये भी कपड़ों के जोड़े नक़दी और अगर लड़की

पैदा हुई है तो बच्ची के लिये छोटा छोटा ज़ेवर होना ज़रूरी है ग़र्ज़ें कि मैका व सुसराल का दीवालिया हो जाता है।

﴾8﴿ मालन और भटियारी [1] घर के दरवाज़े पर पत्तों का सहरा या काग़ज़ के फूल बांधती हैं जिस के मुआवज़े में एक जोड़ा और रूपिया कम अज़ कम वुसूल करती हैं।

इन रस्मों की ख़राबियां :

लड़की पैदा होने से रन्ज करना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है जिस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने करीम फ़रमाता है :

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِيْمٌ [2]

बल्कि ह़क़ येह है कि जिस औ़रत के पहले लड़की पैदा हो, वोह रब तआ़ला के फ़ज़्ल से ख़ुश नसीब है क्यूंकि ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने में अव्वल दुख़्तर ही पैदा हुई तो गोया रब तआ़ला ने सुन्नते नबी अ़त़ा फ़रमा दी।

जवान लड़कियों का गाना बजाना ह़राम है क्यूंकि औ़रत की आवाज़ का ना मह़रमों से पर्दा होना ज़रूरी है अगर औ़रत नमाज़ पढ़ रही हो और कोई आगे से गुज़रना चाहे तो येह औ़रत سُبْحٰنَ اللّٰه कह कर इस को इत्तिलाअ़ न दे बल्कि ताली से ख़बर दे [3] जब आवाज़ की इस क़दर पर्दा दारी है तो येह मुरुव्वजा गाने और बाजे का क्या पूछना।

---

1 ..... रोटी पकाने वाली

2 ..... तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन में किसी को बेटी होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह ग़ुस्सा खाता है।

(پ ١٤، النحل:٥٨)

3 ..... या'नी सीधे हाथ की उंगलियां उल्टे हाथ की पुश्त पर मारे।

(ردالمحتار على الدرالمختار، كتاب الصلاة، باب مايفسد الصلاة، ج ٢، ص ٤٨٦)

फ़रज़न्द की पैदाइश की खुशी में नवाफ़िल पढ़ना और स-दक़ा ख़ैरात करना कारे षवाब है मगर बिरादरी के डर, नाक कटने के ख़ौफ़ से मिठाई तक़्सीम करना बिल्कुल बे फ़ाइदा है और अगर सूदी क़र्ज़ा ले कर येह काम किये तो आख़िरत का गुनाह भी है इस लिये इस रस्म को बन्द करना चाहिये।

डोम मीराषी लोगों को देना हरगिज़ जाइज़ नहीं क्यूंकि उन की हमदर्दी करना दर अस्ल उन को गुनाह पर दिलेर करना है। अगर इन मौक़ओं पर उन को कुछ न मिले तो येह तमाम लोग इन ह़राम पेशों को छोड़ कर ह़लाल कमाई ह़ासिल करें मुझे तअ़ज्जुब होता है कि येह क़ौमें या'नी ज़नाने (खुन्सा) डोम मीराषी, रन्डियां सिर्फ़ मुसलमान क़ौम ही में हैं। ईसाई, यहूदी, हिन्दू, सिख और पारसी क़ौमों में येह लोग नहीं। इस की क्या वजह है? वजह सिर्फ़ येह है कि मुसलमानों में खुराफ़ाती रस्में ज़ियादा हैं, और इन लोगों की इन्ही रस्मों की वजह से परवरिश होती है और दीगर क़ौमों में न येह रस्में हैं न इस क़िस्म के लोग और यक़ीनन ऐसी पेशावर क़ौमें मुस्लिम क़ौम की पेशानी पर बदनुमा दाग़ हैं, खुदा करे येह लोग ह़लाल रोज़ी कमा कर गुज़ारा करें।

बहन, बहनोई या दीगर अहले क़राबत की ख़िदमत करना बेशक कारे षवाब है मगर जब कि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को खुश करने के लिये की जाए अगर दुन्या के नाम व नुमूद और दिखलावे के लिये येह ख़िदमतें हों तो बिल्कुल बेकार है। दिखलावे की नमाज़ भी बे फ़ाइदा होती है और इस मौक़अ़ पर किसी की निय्यत रिज़ाए इलाही नहीं होती मह़ज़ रस्म की पाबन्दी और दिखलावे के लिये सब कुछ होता है वरना क्या ज़रूरत है कि छोछक के आगे बाजा भी हो, दुन्या को भी जम्अ़ किया जाए, फिर मालदार आदमी इस ख़र्च को बरदाश्त कर लेता है मगर ग़रीब मुसलमान इन रस्मों को पूरा करने के लिये या तो सूदी क़र्ज़ लेता है या घर रहन

करता है लिहाज़ा इन तमाम मसारिफ़ को बन्द करना निहायत ज़रूरी है। हज़ारहा मौक़ओं पर अपनी लड़कियों और बहनों को इस लिये दो कि येह रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म है। मगर इन रस्मों को मिटा दो, ज़ुकाम रोको ताकि बुख़ार जाए। आज येह हालत है कि अगर बच्चा पैदा होने पर दुल्हन के मैके से येह रस्में पूरी न की जावें तो सास व नन्द के ता'नों से लड़की की ज़िन्दगी वबाल हो जाती है और इधर ख़ाना जंगी शुरूअ़ हो जाती है अगर येह रस्में मिट जाएं तो इन लड़ाइयों का दरवाज़ा ही बन्द हो जाए।

इस्लामी रस्में

बच्चे के पैदा होने पर येह काम करने चाहियें : बच्चा पैदा होते ही ग़ुस्ल दिया जाए, नाल काटा जाए और जिस क़दर जल्दी हो सके उस के दाहिने कान में अज़ान और बाएं कान में तक्बीर कही जाए ख़्वाह घर का कोई आदमी अज़ान और तक्बीर कह दे या मस्जिद का मुअज़्ज़िन या इमाम कहे और अगर अज़ान कहने पर ख़ैरात व स–दक़ा की निय्यत से उन की कोई ख़िदमत कर दी जाए तो बहुत अच्छा है क्यूं कि येह हक़ तआ़ला का शुक्रिया है फिर येह कोशिश की जावे कि बच्चे को पहली घुट्टी (गड़ती) कोई नेक आदमी दे क्यूंकि तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि "बच्चे में पहली घुट्टी देने वाले का अषर आता है और उस की सी आ़दात पैदा होती हैं" बल्कि सुन्नत तो येह है कि बच्चे की तह़नीक कर दी जाए। तह़नीक उसे कहते हैं कि कोई नेक आदमी अपने मुंह में खजूर या ख़ुरमा चबा कर बच्चे के तालू से लगा दे ताकि बच्चे के पेट में सब से पहले जो ग़िज़ा पहुंचे वोह ख़ुरमा हो और किसी बुज़ुर्ग के मुंह का लुआ़ब। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने बच्चों की तह़नीक कराया करते थे। दाई की उजरत मुक़र्रर होनी चाहिये जो इस काम के बा'द दे दी जाए अगर फ़रज़न्द की ख़ुशी में मीलाद शरीफ़ या फ़ातेहए बुज़ुर्गान कर दी जावे तो बहुत अच्छा है इस के सिवा तमाम रुसूमात बन्द कर दी जाएं। छोछक व भात को मिटाना सख़्त ज़रूरी है।

दूसरा बाब

अ़क़ीक़ा और ख़त्ना की मुरुव्वजा रस्में

आ़म तौ़र पर अ़क़ीक़ा और ख़त्ना के मौक़अ़ पर येह रस्में होती हैं, बहुत सी जगह अ़क़ीक़ा करते ही नहीं बल्कि छटी करते हैं, वोह येह कि बच्चे की पैदाइश के छटे दिन, रात के वक़्त औ़रतें जम्अ़ हो कर मिल कर गाती बजाती हैं फिर ज़च्चे को कोठड़ी से बाहर ला कर तारे दिखा कर गाती हैं फिर मीठे चावल तक़्सीम किये जाते हैं। गीत निहायत बेहूदा गाए जाते हैं **येह रस्म ख़ालिस हिन्दवानी** है और जो लोग अ़क़ीक़ा करते भी हैं तो वोह अपनी बिरादरी के लिहा़ज़ से जानवर ज़ब्ह़ करते हैं मैं ने येह देखा है कि बड़ी बिरादरी वाले लोग छे सात जानवर ज़ब्ह़ कर के तमाम गोश्त बिरादरी में तक़्सीम कर देते हैं या पुर तकल्लुफ़ खाना पका कर आ़म दा'वत करते हैं और येह भी मशहूर है कि दुल्हन का पहला बच्चा मैके में पैदा हो और अ़क़ीक़ा वग़ैरा का सारा ख़र्चा दुल्हन के मां बाप करें अगर वोह ऐसा न करें तो सख़्त बदनामी होती है। जब ख़त्ना का वक़्त आता है तो ऐसी रस्में होती हैं कि ख़ुदा की पनाह ! ख़त्ना से पहले रात जग राता होता है, जिसे ख़ुदाई रात कहते हैं जिस में सब औ़रतें जम्अ़ हो कर रात भर गाना गाती हैं और घर वाले गुलगुले पकाते हैं फिर फ़ज्र के वक़्त जवान लड़कियां और औ़रतें गाती हुई मस्जिद को जाती हैं वहां जा कर इन गुलगुलों से त़ाक़ भरती हैं या'नी घी का चराग़ और येह गुलगुले, कुछ पैसे त़ाक़ में रख कर गाती हुई वापस आती हैं येह रस्म बा'ज़ जगह शादी पर भी होती है और येह रस्म यू.पी. की बा'ज़ क़ौमों में ज़ियादा है मगर ख़त्ना के वक़्त इस का होना ज़रूरी है, जब ख़त्ना का वक़्त आया तो क़राबत दार जम्अ़ होते हैं जिन

की मौजूदगी में ख़त्ना होता है नाई ख़त्ना कर के अपनी कटोरी रख देता है जिस में हर शख़्स एक एक, दो दो या चार आना, आठ आने डालता है। सब मिल कर ग़ुरबा के यहां तो पन्दरह बीस रूपिये हो जाते हैं मगर अमीरों के घर सो, दो सो, ढाई सो रूपिये बनता है फिर बच्चे के वालिद की त़रफ़ से बिरादरी की रोटी होती है और बच्चे के वालिद अपनी बहनों बहनोई व दीगर अहले क़राबत को कपड़ों के जोड़े देता है, इधर बच्चे के नाना, मामूं की त़रफ़ से नक़दी, रूपिया, कपड़ों के जोड़े लाना ज़रूरी होता है। अहले क़राबत जो नाई की कटोरी में पैसे रूपिये डालते हैं वोह "न्योता" कहलाता है, येह दर ह़क़ीक़त बच्चे के वालिद पर क़र्ज़ की त़रह़ होता है कि जब उन लोगों के घर ख़त्ना हो तो येह भी उस के घर नक़दी दे।

इन रस्मों की ख़राबियां

छटी करना ख़ालिस हिन्दूओं की रस्म है जो कि उन्हों ने अ़क़ीके़ के मुक़ाबले में ईजाद की है। पहले अ़र्ज़ कर चुके हैं कि औ़रतों का गाना बजाना ह़राम है इसी त़रह़ ज़च्चे को तारे दिखाना मह़्ज़ लग़्विय्यात है फिर गाने वालियों को मीठे चावल खिलाना ह़राम काम का बदला है लिहाज़ा येह छटी की रस्म बिल्कुल बन्द कर देना ज़रूरी है अ़क़ीक़ा और ख़त्ना में इस क़दर ख़र्चा कराने का येह अषर पड़ेगा कि लोग ख़र्चे के ख़ौफ़ से येह सुन्नत ही छोड़ देंगे, अ़क़ीक़ा और ख़त्ना करना सुन्नत है और सुन्नत इ़बादत है, इ़बादत को इसी त़रह़ किया जाए जिस त़रह़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से षाबित है। अपनी त़रफ़ से इस में रस्में दाख़िल करना लग़्व है। नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, ह़ज करना इ़बादत है अब अगर कोई शख़्स नमाज़ को गाता बजाता हुवा जावे और

ज़कात देते वक़्त बिरादरी की रोटी को ज़रूरी समझे तो येह महूज़ बेहूदा बात है मैं ने एक जवान शख़्स को कहते हुए सुना है कि मेरा ख़त्ना नहीं हुवा। मैं ने पूछा क्यूं ? उस ने जवाब दिया कि मेरे बाप के पास बिरादरी की रोटी करने के लिये रूपिया न था, इस लिये मेरा ख़त्ना न हुवा ! देखा ! इन रस्मों की पाबन्दियों में येह ख़राबी है। बच्चे का ख़र्चा बाप के ज़िम्मे है उस का अ़क़ीक़ा और ख़त्ना बाप करे। येह पाबन्दी लगा देना कि पहले बच्चे का ख़त्ना नाना मामूं करें, इस्लामी क़ाइदे के ख़िलाफ़ है इसी त़रह़ बिरादरी की रोटी और नाई को इस क़दर चन्दा कर के देना सख़्त बुरी रस्म है इस को बन्द कर देना चाहिये। न्योता भी बहुत बुरी रस्म है जो ग़ालिबन दूसरी क़ौमों से हम ने सीखी है इस में ख़राबी येह है कि येह झगड़े और लड़ाई की जड़ है वोह इस त़रह़ कि फ़र्ज़ करो कि हम ने किसी के घर चार मौक़ओं पर दो दो रूपियें दिये हैं तो हम भी ह़िसाब लगाते रहते हैं और वोह भी जिस को येह रूपिया पहुंचा। अब हमारे घर कोई ख़ुशी का मौक़अ़ आया हम ने उस को बुलाया तो हमारी पूरी निय्यत येह होती है कि वोह शख़्स कम अज़ कम दस रूपै हमारे घर दे ताकि आठ रूपै वोह अदा हो जाएं और दो रूपै हम पर चढ़ जाएं इधर इस को भी येही ख़याल है कि अगर मेरे पास इतनी रक़म हो तो मैं वहां दा'वत खाने जाऊं वरना न जाऊं, अब अगर उस के पास उस वक़्त रूपिया नहीं तो वोह शर्मिन्दगी की वजह से आता ही नहीं और अगर आया तो दो चार रूपिये दे गया। बहर ह़ाल इधर से शिकायत पैदा हुई, त़ा'ने बाज़ियां हुईं, दिल बिगड़े। बा'ज़ लोग तो क़र्ज़ ले कर न्योता अदा करते हैं। बोलो ! येह ख़ुशी है या ए'लाने जंग ? लोग कहते हैं कि न्योता से एक शख़्स की वक़्तिया मदद हो जाती है। इस लिये येह रस्म अच्छी

है मगर दोस्तो ! मदद तो हो जाती है लेकिन दिल कैसे बुरे होते हैं और रूपिया किस त़रह़ फंस जाता है न मा'लूम येह रस्म कब से शुरूअ़ हुई, बाहमी इमदाद करना और बात है लेकिन येह बाहमी इमदाद नहीं, अगर बाहमी इमदाद होती तो फिर बदले का तक़ाज़ा कैसा ? लिहाज़ा येह **न्योता** की रस्म बिल्कुल बन्द होनी चाहिये। हां, अगर क़राबतदार को बत़ौरे मदद कुछ दिया जाए और उस के बदले की तवक़्क़ोअ़ न रखी जाए तो वाक़ेई मदद है इस में कोई मुज़ायक़ा नहीं, हदिय्ये से मह़ब्बत बढ़ती है और क़र्ज़ से मह़ब्बत टूटती है। अब **न्योता** बेहूदा क़र्ज़ हो गया है।

नोट ज़रूरी : अ़क़ीक़ा, ख़त्ना, शादी, मौत, हर वक़्त ही **न्योता** की रस्म जारी है येह बिल्कुल बन्द होनी चाहिये।

अ़क़ीक़ा और ख़त्ना के इस्लामी त़रीक़े

त़रीक़ए सुन्नत येह है कि बच्चे की पैदाइश के सातवें रोज़ अ़क़ीक़ा हो और अगर न हो सके तो पन्दरहवें दिन या इक्कीसवें रोज़ या'नी पैदाइश के दिन से एक दिन पेशतर अगर जुमुआ़ को बच्चा पैदा हुवा तो जब भी अ़क़ीक़ा हो जुमा'रात को हो, अ़क़ीक़े का हुक्म येह है कि लड़के की त़रफ़ से दो बकरियां एक साल की और लड़की की त़रफ़ से एक बकरी एक साल की ज़ब्ह़ कर दी जाए। अ़क़ीक़े के जानवर की सिरी नाई को और रान दाई को दी जाए, अगर येह दोनों मुसलमान हों।[1]

गोश्त के तीन ह़िस्से कर दिये जाएं : **एक** ह़िस्सा फ़ुक़रा को ख़ैरात कर दिया जाए, **दूसरा** ह़िस्सा अहले क़राबत में तक़्सीम हो, **तीसरा** ह़िस्सा अपने घर में खाया जाए। बेहतर येह है कि अ़क़ीक़े के

---

1 ...... बहारे शरीअ़त, अ़क़ीक़े का बयान ह़िस्सा : 15, जि. 3, स.154-155, मुलख़्ख़सन

जानवर की हड्डियां तोड़ी न जाएं बल्कि जोड़ों से अ़लाहिदा कर दी जाएं और गोश्त वग़ैरा खा कर हड्डियां दफ़्न कर दी जाएं। सातवें रोज़ ही बच्चे का नाम भी रखा जाए सब से बेहतर है "**मुहम्मद**" मगर जिस का नाम "**मुहम्मद**" हो उस को बिगाड़ कर न पुकारा जाए। अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रहमान और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नाम पर नाम रखना भी अच्छा है, ईसा, मूसा, इब्राहीम, इस्माईल, अ़ब्बास, उ़मर वग़ैरा और बे मा'ना नाम न रखे जाएं जैसे बुध्धू, जुमा'राती, ख़ैराती वग़ैरा, इसी त़रह जिन नामों में फ़ख़्र ज़ाहिर होता हो न रखे जाएं जैसे शाहजहान, नवाब, राजा, बादशाह वग़ैरा। लड़कियों के नाम क़मरुन्निसा, जहांआरा बेगम वग़ैरा न रखो बल्कि उन के नाम फ़ातिमा, आमिना, आइशा, मरयम, ज़ैनब, कुल्सूम वग़ैरा रखो। अ़क़ीक़े के वक़्त जब जानवर ज़ब्ह़ हो तब बच्चे के बाल भी मुंडवा दिये जाएं और बालों को चांदी से वज़्न कर के ख़ैरात कर दी जाए और सर पर ज़ा'फ़रान भिगो कर मल दिया जाए।

येह जो मश्हूर है कि बच्चे के मां बाप अ़क़ीक़े का गोश्त न खाएं महूज़ ग़लत़ है। अ़क़ीक़े वाले को इख़्तियार है कि ख़्वाह कच्चा गोश्त तक़्सीम कर दे या पका कर दा'वत कर दे मगर ख़याल रहे कि नामो नुमूद को इस में दख़्ल न हो, फ़क़त़ सुन्नत की निय्यत से हो, नाई और क़साई की उजरत पहले से मुक़र्रर हो जो अ़क़ीक़े के बा'द दे दी जाए, अगर नाई अपना क़दीमी ख़िदमत गुज़ार है तो उस को ज़ियादा उजरत दो, जिस से उस का ह़क़ अदा हो जाए और अगर नहीं तो वाजबी उजरत दे दो। येह भी जाइज़ है कि एक गाय ख़रीद कर चन्द बच्चों का अ़क़ीक़ा एक ही गाय में कर दिया जाए, या'नी लड़के के लिये गाय के दो सातवें हिस्से और लड़की के लिये एक हिस्सा। येह भी जाइज़ है कि अगर क़ुरबानी की गाय में अ़क़ीक़े का हिस्सा डाल दिया जाए कि लड़के के लिये दो हिस्से और लड़की के लिये एक हिस्सा।

नोट ज़रूरी : अ़क़ीक़ा फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है सिर्फ़ सुन्नते मुस्तह़ब्बा है, ग़रीब आदमी को हरगिज़ जाइज़ नहीं कि सूदी क़र्ज़ा ले कर अ़क़ीक़ा करे। क़र्ज़ा ले कर तो ज़कात भी देना जाइज़ नहीं अ़क़ीक़ा ज़कात से बढ़ कर नहीं है। मैं ने बा'ज़ ग़रीब मुसलमानों को देखा है कि क़र्ज़ ले कर अ़क़ीक़ा करते हैं अगर अ़क़ीक़ा न करें तो बेचारों की नाक कट जाए, वोह बिग़ैर नाक के रह जाएं ग़रज़ कि सुन्नत का ख़याल नहीं अपनी नाक का ख़याल है ऐसी नाक ख़ुदा करे कट ही जावे।

ख़त्ना

ख़त्ना का सुन्नत त़रीक़ा येह है सातवें बरस बच्चे का ख़त्ना करा दिया जाए, ख़त्ना की उ़म्र सात साल से बारह बरस तक है, या'नी बारह बरस से ज़ियादा देर लगाना मन्अ़ है। (عالمگیری)[1]

और अगर सात साल से पहले ख़त्ना कर दिया गया जब भी ह़रज नहीं। बा'ज़ लोग अ़क़ीक़े के साथ ही ख़त्ना करते हैं, येह आसानी और आराम से हो जाता है क्यूंकि उस वक़्त बच्चा चलने फ़िरने के क़ाबिल तो है नहीं, ताकि ज़ख़्म बढ़ा ले। अगर मां का दूध उस पर डाला जाता रहे तो बहुत जल्द ज़ख़्म भर जाता है। ख़त्ना करने से पहले नाई की उजरत त़े होना ज़रूरी है जो कि उस को ख़त्ना के बा'द दे दी जाए। इलाज में ख़ास कर निगरानी रखी जाए, तजरिबा कार नाई से ख़त्ना कराया जाए और तजरिबा कार आदमी इस का ख़याल रखे, ख़त्ना सिर्फ़ इस काम का नाम है। बाक़ी बिरादरी की रोटी, बहन बहनोइयों के पचास पचास जोड़े और गाने वाली औ़रतों और मीराषियों के अख़राजात येह सब मुसलमानों की कमज़ोर नाक ने पैदा कर दिये हैं येह सब चीज़ें बिल्कुल बन्द कर दी जाएं।

---

1 ......الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب التاسع عشر، ج ٥، ص ٣٥٧

तीसरा बाब

बच्चों की परवरिश

परवरिश की मुरुव्वजा रस्में

आ़म मुसलमानों में येह मशहूर है कि "लड़के को दो साल मां अपना दूध पिलाए और लड़की को सवा दो साल" येह बिल्कुल ग़लत़ है। मुसलमानों में येह त़रीक़ा है कि बचपन में औलाद के अख़्लाक़ व आदाब का ख़याल नहीं रखते। ग़रीब लोग तो अपने बच्चों को आवारा लड़कों के साथ खेलने कूदने की इजाज़त देते हैं और उन की ता'लीम का ज़माना ख़राब सोह़बतों और खेल कूद में बरबाद कर देते हैं, वोह बच्चे या तो जवान हो कर भीक मांगते फिरते हैं या ज़िल्लत की नौकरियां करते हैं या डाकू चोर और बद मुआ़श बन कर अपनी ज़िन्दगी जेल ख़ाने में गुज़ार देते हैं और मालदार लोग अपने बच्चों को शुरूअ़ से शौक़ीन मिज़ाज बनाते हैं, इंग्रेज़ी बाल रखाना, फ़ुज़ूल ख़र्च करना सिखाते हैं। हर वक़्त सूट व बूट वग़ैरा पहनाते हैं, फिर अपने साथ सिनेमा और नाच की मजलिसों में उन्हें शरीक करते हैं, जब येह नौ निहाल कुछ होश संभालता है तो उस को कलिमा तक न सिखाया, कॉलिज या स्कूल में डाल दिया जहां ज़ियादा ख़र्च करना, फ़ैश्नेबल बनना सिखाया गया। ख़राब सोह़बतों से सिह़्ह़त और मज़हब दोनों बरबाद हो गए अब जब नौ निहाल कॉलिज से बाहर आए तो अगर ख़ातिर ख़्वाह नौकरी मिल गई तो साहिब बहादुर [1] बन गए कि न मां का अदब जानें न बाप को पहचानें, न बीवियों के हुक़ूक़ की ख़बर, न औलाद की परवरिश से वाक़िफ़, उन के ज़ेहन में आ'ला तरक़्क़ी येह आई कि हम को लोग इंग्रेज़

---

1 .....वोह शख़्स जो यूरोपियन तहज़ीब व तमद्दुन इख़्तियार करे।

(उर्दू लुग़त, तरक़्क़िये उर्दू बोर्ड, जिल्द. 12, स. 831)

समझें भला अपने को दूसरी क़ौम में फ़ना कर देना भी कोई तरक़्क़ी है ! अगर कोई मा'क़ूल जगह न मिली तो इन बेचारों को बहुत मुसीबत पड़ती है क्यूंकि कॉलिज में ख़र्च करना सीखा, कमाना न सीखा, खिलाना न सीखा, अपना काम नौकरों से कराना सीखा, ख़ुद करना न सीखा,

न पढ़ते तो सो तरह खाते कमा कर
वोह खोए गए, और ता'लीम पा कर

अब येह लोग कॉलिज की सी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये शरीफ़ बद मुआ़श हो जाते हैं या जा'ली नोट बना कर अपनी ज़िन्दगी जेल में गुज़ारते हैं या डाकू बद मुआ़श बनते हैं (अकषर डाकू ता'लीम याफ़्ता, ग्रेज्यूएट पाए गए) येह वोही लोग हैं।

इन रस्मों की ख़राबियां

लड़की को सवा दो साल दूध पिलाना जाइज़ नहीं लड़की हो या लड़का दोनों को दो, दो साल दूध पिलाया जाए। क़ुरआने करीम फ़रमाता है : [1] وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ

मां बाप चाहें तो दो साल से पहले दूध छुड़वा दे मगर दो साल के बा'द दूध पिलाना मन्अ़ है, जो बच्चे की परवरिश के ज़माने में अच्छी सोह़बतें नहीं पाते वोह जवान हो कर मां बाप को बहुत परेशान करते हैं हम ने बड़े फ़ैश्नेबल साहिबज़ादों के मां बाप को देखा है कि वोह रोते फिरते हैं, मुफ़्ती साहिब ता'वीज़ दो जिस से बच्चा कहना माने, हमारे क़बज़े में आए। मगर दोस्तो ! फ़क़त़ ता'वीज़ से काम नहीं चलता कुछ ठीक अ़मल भी करना चाहिये।

---

1 ..... तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और माएं दूध पिलाएं अपने बच्चों को पूरे दो बरस।

(پ۲،البقرة:۲۳۳)

एक बुड्ढे ने अपने फ़रज़न्द को विलायत पढ़ने के लिये भेजा। जब बरख़ूरदार फ़ारिग़ हो कर वत़न आने लगा तो बुड्ढा बाप इस्तिक़्बाल के लिये स्टेशन पर गया। लड़के ने गाड़ी से उतर कर बाप से पूछा : "वेल बुड्ढा तो अच्छा है ?" इस ना लाइक़ बेटे को दोस्तों ने पूछा कि साहिब बहादुर येह बुड्ढा कौन है ? फ़रमाने लगा : "मेरा आश्ना है।" बुड्ढे बाप ने कहा कि "साहिबो ! मैं साहिब बहादुर का आश्ना नहीं, बल्कि उन की वालिदा का आश्ना हूं।" येह इस नई तहज़ीब के नतीजे हैं।

ह़ज़रते मौलाना अह़मद जीवन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जो सुल्त़ान ग़ाज़ी मुह़्युद्दीन आ़लमगीर औरंगज़ेब عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के उस्ताद और शाहजहां के यहां बहुत अच्छी हैसिय्यत से मुलाज़िम थे। मश्हूर येह है कि एक बार जुमुआ़ के वक़्त मौलाना के वालिद मा'मूली लिबास में जामेअ़ मस्जिद देहली में आए उस वक़्त मौलाना शाहजहां के पास बैठे हुवे थे। पहली सफ़ से उठ कर भागे अपने बाप की जूतियां साफ़ कीं। गर्दो ग़ुबार आप के इमामे से झाड़ा। हौज़ पर ला कर वुज़ू कराया और ख़ास शाहजहां के बराबर ला कर बैठा दिया और कहा कि येह मेरे वालिद हैं नमाज़ के बा'द शाहजहां बादशाह ने उन से कहा कि आप ठहरो, शाही मेहमान बनो। उन्हों ने जवाब दिया कि मैं सिर्फ़ येह देखने आया था कि मेरा बच्चा आप के यहां रह कर मुसलमान रहा है या बे दीन बन गया है पहचानेगा या नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ बच्चा मुसलमान है।

گندم از گندم برو جوز جو !   از مکافات عمل غافل مشو (1)

जैसा बोना वैसा काटना।

---

(1) .... तर्जमा : गन्दुम से गन्दुम और जव से जव उगते हैं, मकाफ़ात अ़मल से ग़ाफ़िल मत हो।

बच्चों की परवरिश का इस्लामी त़रीक़ा

लड़के और लड़की को दो साल से ज़ियादा दूध न पिलाओ, जब बच्चा कुछ बोलने के लाइक़ हो तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाओ पहले माएं "**अल्लाह अल्लाह**" कह कर बच्चों को सुलाती थीं और अब घर के रेडियो और ग्रामोफ़ोन बाजे बजा कर बेहलाती हैं। जब बच्चा समझदार हो जावे तो उस के सामने ऐसी ह़-रकत न करो जिस से बच्चे के अख़्लाक़ ख़राब हों क्यूंकि बच्चों में नक़्ल करने की ज़ियादा आ़दत होती है जो कुछ मां बाप को करते देखते हैं वोही ख़ुद भी करते हैं उन के सामने नमाज़ें पढ़ो, क़ुरआने पाक की तिलावत करो, अपने साथ मस्जिदों में नमाज़ के लिये ले जाओ और उन को बुज़ुर्गों के क़िस्से कहानियां सुनाओ। बच्चों को कहानियां सुनने का बहुत शौक़ होता है। सबक़ आमोज़ कहानियां सुन कर अच्छी आ़दतें पड़ेंगी।

जब और ज़ियादा होश संभालें तो सब से पहले उन को पांचों कलिमे ईमाने मुज्मल, ईमाने मुफ़स्सल फिर नमाज़ सिखाओ। किसी मुत्तक़ी या ह़ाफ़िज़ या मौलवी के पास कुछ रोज़ बिठा कर क़ुरआने पाक और उर्दू के दीनिय्यात के रिसाले ज़रूर पढ़वा दो जिस से बच्चा मा'लूम करे कि मैं किस दरख़्त की शाख़ और किस शाख़ का फल हूं, और पाकी पलीदी वग़ैरा के अह़काम याद करे। अगर ह़क़ तआ़ला ने आप को चार पांच लड़के दिये हैं तो कम अज़ कम एक लड़के को आ़लिम या ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनाओ क्यूंकि एक ह़ाफ़िज़ अपनी तीन पुश्तों को और आ़लिम सात पुश्तों को बख़्वाएगा। येह ख़याल मह़ज़ ग़लत़ है कि आ़लिमे दीन को रोटी नहीं मिलती। यक़ीन कर लो कि इंग्रेज़ी पढ़ने से तक़्दीर से ज़ियादा नहीं मिलता। अ़-रबी पढ़ने से आदमी बद नसीब नहीं हो जाता, मिलेगा वोह ही जो रज़्ज़ाक़ ने क़िस्मत में लिखा है। बल्कि तजरिबा येह है कि अगर आ़लिम पूरा आ़लिम और सह़ीह़ुल अ़क़ीदा हो

तो बड़े आराम में रहता है और जो लोग उर्दू की चन्द किताबें देख कर वा'ज़ गोई को भीक का ज़रीआ़ बना लेते हैं कि वा'ज़ कह कर पैसा पैसा मांगना शुरूअ़ कर दिया। उन को देख कर आ़लिमे दीन से न डर, येह वोह लोग हैं जिन्हों ने अपना बचपन आवारगी मैं ख़राब कर दिया है और अब मुहज़्ज़ब भिकारी हैं। वरना उ़-लमाए दीन की अब भी बहुत क़द्रो इ़ज़्ज़त है। जब ग्रेज्यूएट मारे मारे फिरते हैं तो मुदर्रिसीन उ़-लमा की तलाश होती है और नहीं मिलते। अपने लड़कों को शौक़ीन मिज़ाज ख़र्चीला न बनाओ बल्कि उन को सादगी और अपना काम अपने हाथ से करना सिखाओ, क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल हरगिज़ न खेलाओ। क्यूंकि येह खेल कुछ फ़ाइदा मन्द नहीं बल्कि उन को बनवट लकड़ी का हुनर, डन्ड, कसरत, कुश्ती का फ़न, अगर मुमकिन हो तो तल्वार चलाना वग़ैरा सिखाओ जिस से तन्दुरुस्ती भी अच्छी रहे और कुछ हुनर भी आ जावे और ताश बाज़ी और पतंग बाज़ी, कबूतर बाज़ी, सीनेमा बाज़ी से बच्चों को बचाओ क्यूंकि येह खेल ह़राम हैं बल्कि मेरी राय तो येह है कि बच्चों को इ़ल्म के साथ कुछ दूसरे हुनर भी सिखाओ जिस से बच्चा कमा कर अपना पेट पाल सके। येह समझ लो कि हुनर मन्द कभी ख़ुदा के फ़ज़्ल से भूका नहीं मरता। इस मालो दौलत का कोई ए'तिबार नहीं इन बातों के साथ इंग्रेज़ी सिखाओ कॉलिज में पढ़ाओ। जज बनाओ, कलेक्टर बनाओ दुन्या की हर जाइज़ तरक़्क़ी कराओ मगर पहले इस को ऐसा मुसलमान कर दो कि कोठी में भी मुसलमान ही रहे। हम ने देखा है कि क़ादियानियों और राफ़ज़ियों के बच्चे ग्रेज्यूएट हो कर किसी ओ़-हदे पर पहुंच जाएं मगर अपने मज़हब से पूरे वाक़िफ़ होते हैं मुसलमानों के बच्चे ऐसे उल्लू होते हैं कि मज़हब की एक बात भी नहीं जानते। ख़राब सोह़बत पा कर बे दीन बन जाते हैं। जिस क़दर लोग क़ादियानी, नेचरी, वग़ैरा बन गए। येह सब पहले मुसलमान थे और मुसलमानों के बच्चे थे मगर अपनी मज़हबी ता'लीम न होने की वजह से बद मज़हबों

का शिकार हो गए। यक़ीन करो कि इस का वबाल उन के मां बाप पर भी ज़रूर पड़ेगा।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की परवरिश बारगाहे नुबुव्वत में ऐसी कामिल हुई कि जब वोह मैदाने जंग में आते तो आ'ला द–रजे के ग़ाज़ी होते थे और मस्जिद में आ कर आ'ला द–रजे के नमाज़ी, घरबार में पहुंच कर आ'ला द–रजे के कारोबारी, कचेहरी में आ कर आ'ला द–रजे के क़ाज़ी होते थे, अपने बच्चों को इस ता'लीम का नुमूना बनाओ अगर दीनो दुन्या में भलाई चाहते हो तो येह किताबें ख़ुद भी मुता–लए में रखो और अपनी बीवी बच्चों को भी पढ़ाओ। बहारे शरीअ़त मुसन्निफ़ह़ू ह़ज़रते मौलाना अमजद अ़ली साहि़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه, किताबुल अ़क़ाइद मुसन्निफ़ह़ू ह़ज़रते मुर्शिदी व उस्तादी मौलाना मौलवी मुहम्मद नईमुद्दीन साहि़ब دَامَ ظِلُّهُمْ शाने ह़बीबुर्रह़मान सल्त़नते मुस्त़फ़ा मुसन्निफ़ह़ू फ़क़ीर ह़क़ीर पुर अज़ तक़्सीर अह़मद यार ख़ां नईमी।

लड़कियों को खाना पकाना, सीना, पिरौना, और घर के कामकाज, पाक दामनी और शर्मो ह़या सिखाओ कि येह लडकियों का हुनर है उन को कॉलेजियेट और ग्रेज्यूएट न बनाओ कि लडकियों के लिये इस ज़माने में कॉलिज और बाज़ार में कुछ फ़र्क़ नहीं बल्कि बाज़ारी औ़रत के पास लोग जाते हैं और कॉलिज की लड़की लोगों के पास जाती है, जिस का दिन रात मुशा–हदा हो रहा है।

तौबा की फ़ज़ीलत

ह़दीषे पाक में है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهٗ

या'नी "गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।"

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٥٠، ج٤، ص ٤٩١)

चौथा बाब

बियाह शादी की रस्में

ع अब जिगर थाम कर बैठो मेरी बारी आई

निकाह् इस्लाम में इबादत है, कभी तो फ़र्ज़ है और अकषर सुन्नत। (शामी) [1] मगर हिन्दुस्तान में मौजूदा ज़माने में निकाह इन हिन्दवानी और ह़राम रस्मों और फ़ुज़ूल ख़र्चियों की वजह से वबाले जान बन गया है। इस का नाम शादी ख़ाना आबादी, अब इन रस्मों ने इसे बना दिया, शादी ख़ाना बरबादी बल्कि ख़ानहा बरबादी क्यूंकि इस में लड़के और लड़की दोनों के घरों की तबाही आती है। निकाह् के मुतअ़ल्लिक़ तीन क़िस्म की रस्में हैं : बा'ज़ वोह जो निकाह् से पहले की जाती हैं। बा'ज़ निकाह् के वक़्त और बा'ज़ निकाह् के बा'द पहले तो लड़की की तलाश (मंगनी), तारीख़ मुक़र्रर होना, फिर निकाह् के बा'द चोथी [2], चाला [3] कंगना खोलने [4] की रस्में, लिहाज़ा हम इस बाब की चन्द फ़स्लें करते हैं।

---

1 ......الدر المختار و رد المحتار، كتاب النكاح، ج٤، ص٧٢

2 ..... शादी के चौथे दिन की जाने वाली एक रस्म जिस में दुल्हन के घर जा कर फूलों की छडियां, सब्ज़ियां और मेवे एक दूसरे पर फेंके जाते हैं।

(फ़ीरोजुल्लुग़ात, स. 569)

3 ..... या'नी नई दुल्हन का शादी के बा'द सुसराल से चार बार मैके जाना।

(फ़ीरोजुल्लुग़ात, स. 538)

4 .....एक रस्म जिस में दुल्हन दुल्हे के हाथ पर बन्धे हुवे धागों की गांठें खोलती है।

(उर्दू लुग़त, तरक़्क़िये उर्दू बोर्ड, जि. 15, स. 265 व इस्लामी ज़िन्दगी, स. 64)

पहली फ़स्ल

दुल्हन की तलाश, मंगनी और तारीख़ ठहराना

मौजूदा रस्में

हिन्दुस्तान में आ़म तौ़र पर लड़के वालों की तमन्ना येह होती है कि मालदार की लड़की घर में आवे जहां हमारे बच्चे के ख़ूब अरमान निकलें, इस क़दर जहेज़ लावे कि घर भर जाए। उधर लड़की वालों की येह आरज़ू होती है लड़का मालदार और शौक़ीन हो, इंग्रेज़ी बाल कटाता हो, दाढ़ी मुंडाता हो, ताकि हमारी लड़की को सीनेमा दिखाए और उस के हर ना जाइज़ अरमान निकाले। मैं ने बहुत मुसलमानों को कहते सुना कि हम दाढ़ी वाले को अपनी लड़की न देंगे, लड़का शौक़ीन चाहिये और बहुत जगह अपनी आंखों से देखा कि लड़की वालों ने दूल्हा से मुता़–लबा किया कि दाढ़ी मुंडवा दो तो लड़की दी जा सकती है, चुनान्चे लड़कों ने दाढ़ियां मुंडवाईं, कहां तक दुख की बातें सुनाऊं, येह भी कहते सुना गया कि नमाज़ी को लड़की न देंगे, वोह मस्जिद का मुल्ला है, हमारी लड़की के अरमान और शौक़ पूरे न करेगा। पंजाब में येह आग ज़ियादा लगी हुई है। जब अपनी मरज़ी का लड़का मिल गया तो अब ख़ैर से मंगनी (कुड़माई) का वक़्त आया, इस में दुल्हन वालों की त़रफ़ से मुता़–लबा हुवा कि ऐसे कपड़ों का जोड़ा, इस क़दर सोने का ज़ेवर चढ़ाओ, इस फ़रमाइश को पूरा करने के लिये लड़के वाले अकषर क़र्ज़ ले कर या किसी जगह से ज़ेवर मांग कर चढ़ा देते हैं। जब मंगनी का वक़्त आया तो लड़के वाला अपने क़राबतदारों को जम्अ़ कर के अव्वलन उन की दा'वत अपने घर करता है फिर दुल्हन के यहां इन सब को ले जाता है। जहां दुल्हन वालों के क़राबत दार पहले ही से जम्अ़ होते हैं ग़रज़ कि दुल्हन के घर दो क़िस्म के मैले लग जाते हैं फिर उन की पुर तकल्लुफ़

दा'वत होती है । यू.पी. में तो खाने की दा'वत होती है मगर पंजाब में मिठाई और चाय की दा'वत जिस में इस रस्म पर दोनों त़रफ़ से चार पांच सो रूपिये तक ख़र्च हो जाते हैं फिर दुल्हन के यहां से लड़के को सोने की अंगूठी और कुछ कपड़े मिलते हैं और लड़की को दूल्हा वालों की त़रफ़ से क़ीमती जोड़ा, भारी सुथरा ज़ेवर दिया जाता है फिर मंगनी से शादी तक हर ईद, बक़र ईद वग़ैरा पर कपड़े और वक़्तन फ़ वक़्तन मौसमी मेवा (फ्रुट) और मिठाइयां लड़के के घर से जाना ज़रूरी है । तारीख़ ठहराने पर लोगों का मज्मअ़, दा'वत और मिठाई तक़्सीम होती है फिर तारीख़ मुक़र्रर होने से शादी तक दोनों घरों में औ़रतों का जम्अ़ हो कर इश्क़िया गाने, ढोल बजाना लाज़िम होता है जिस में हर तीसरे दिन मिठाई ज़रूर तक़्सीम होती है इस में भी काफ़ी ख़र्चा होता है, इन तमाम रस्मों में ब दस्तूर रस्म माइयों (माइयां) और उपटन की रस्में हैं जिस में अपनी पराई औ़रतें जम्अ़ हो कर दूल्हा के उपटन, महेंदी लगाती हैं, आपस में हंसी, दिल्लगी, दूल्हा से मज़ाक़ वग़ैरा बहुत बे इ़ज़्ज़ती की बातें होती हैं । येह मैं ने वोह रस्में अ़र्ज़ की हैं जो क़रीब क़रीब हर जगह कुछ फ़र्क़ से होती हैं और जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़ास ख़ास रस्में जारी हैं उन का शुमार मुश्किल है ।

इन रस्मों की ख़राबियां

सख़्त ग़-लती येह है कि लड़की और लड़के मालदार तलाश किये जाएं क्यूंकि मालदार की तलाश में लड़के और लडकियां जवान, जवान बैठे रहते हैं न कोई ख़ातिर ख़्वाह मालदार मिलता है न शादियां होती हैं और जवान लड़की, मां बाप के लिये पहाड़ है उस को घर में बिग़ैर निकाह़ रखना सख़्त ख़राबियों की जड़ है । दूसरी येह कि जो महब्बत व अख़्लाक़ ग़रीबों में है वोह मालदारों में नहीं, तीसरे येह कि अगर मालदार को तुम अपनी खाल भी उतार कर दे दो, उन की आंख में

नहीं आता, येह ता'ने होते हैं कि हमें कुछ नहीं मिला और अगर दुल्हन वाले मालदार हैं तो दामाद मिष्ले नौकर के सुसराल में रहते हैं। बीवी पर शौहर का कोई रो'ब नहीं होता। अगर दूल्हा वाले मालदार हैं तो लड़की उस घर में लौंडी या नौकरानी की त़रह़ होती है अपनी लड़की ऐसे घर में दो, जहां वोह लड़की ग़नीमत समझी जाए। तजरिबे ने बताया कि ग़रीब और शरीफ़ घराने वाली लड़कियां उन लड़कियों से आराम में हैं जो मालदारों में गईं। लड़की वालों को चाहिये कि दूल्हा में तीन बातें देखें, अव्वल तन्दुरुस्त हो, क्यूंकि ज़िन्दगी की बहार तन्दुरुस्ती से है। दूसरे उस के चाल चलन अच्छे हों, बद मुआ़श न हो, शरीफ़ लोग हों, तीसरे येह कि लड़का हुनर मन्द और कमाव हो कि कमा कर अपने बीवी बच्चों को पाल सके। मालदारी का कोई ए'तिबार नहीं येह चलती फिरती चांदनी है। ह़दीषे पाक में है कि निकाह़ में कोई माल देखता है कोई जमाल मगर [1] عَلَيكَ بِذَاتِ الدِّينِ "तुम दीनदारी देखो।"

येह भी याद रखो कि तीन क़िस्म के मालों में ब-रकत नहीं। एक तो ज़मीन का पैसा या'नी ज़मीन या मकान फ़रोख़्त कर के खाओ। इस में कभी ब-रकत नहीं, चाहिये कि या तो ज़मीन न फ़रोख़्त करो और अगर फ़रोख़्त करो तो उस का पैसा ज़मीन ही में ख़र्च करो। (ह़दीष) [2]

दूसरे लड़की का पैसा या'नी लड़की वाले जो रूपिया ले कर शादी करते हैं उस में ब-रकत नहीं और पैसा लेना ह़राम है क्यूंकि या तो येह लड़की की क़ीमत है या रिश्वत येह दोनों ह़राम हैं। तीसरे वोह जहेज़ व माल जो लड़की अपने मैके से लावे अगर दूल्हा उस को गुज़र अवक़ात का ज़रीआ़ बना दे तो इस में ब-रकत नहीं होगी। अपनी

---

1 ......صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب استحباب نكاح...الخ، الحديث:١٤٦٦، ص٧٧٢

2 ......مسند للامام احمد بن حنبل، مسند سعيد بن زيد...الخ، الحديث:١٦٥٠، ج١، ص٤٠٢

कुव्वते बाज़ू पर भरोसा करो, दाढ़ी और नमाज़ का मज़ाक़ उड़ाने वाले सब काफ़िर हुए।[1] येह भी याद रखो कि मौलवियों और दीनदारों की बीवियां फ़ैशन वालों की बीवियों से ज़ियादा आराम में रहती है। अव्वल तो इस लिये कि दीनदार आदमी ख़ुदा के ख़ौफ़ से बीवी बच्चों का ह़क़ पहचानता है। दूसरे येह कि दीनदार आदमी की निगाह सिर्फ़ अपनी बीवी पर ही होती है और आज़ाद लोगों की टेम्परारी बीवियां बहुत सी होती हैं जिन का दिन रात तजरिबा हो रहा है। वोह हर फूल को सूंघता और हर बाग़ में जाता है। कुछ दिनों तो अपनी बीवी से मह़ब्बत करता है फिर आंख फेर लेता है। मंगनी की रस्मों की ख़राबियां बयान से बाहर हैं। बहुत से लोग सूदी क़र्ज़ से या मांग कर ज़ेवर चढ़ा देते हैं। शादी के बा'द फिर दुल्हन से वोह ज़ेवर ह़ीले बहाने से ले कर वापस करते हैं। जिस की वजह से आपस में ख़ूब लड़ाइयां होती हैं और शुरूअ़ की वोह लड़ाई ऐसी होती है कि फिर ख़त्म नहीं होती और कहीं ऐसा भी होता है कि मंगनी छूट जाती है फिर दुल्हन वालों से ज़ेवर वापस मांगा जाता है उधर से इन्कार होता है जिस पर मुक़द्दमा बाज़ी की नौबत आती है। इसी त़रह़ मंगनी के वक़्त दा'वत और फ़ुज़ूल ख़र्ची का ह़ाल है अगर मंगनी छूट गई तो मुत़ा-लबा होता है कि हमारा ख़र्चा वापस कर दो और दोनों फ़रीक़ ख़ूब लड़ते हैं। बा'ज़ दफ़्आ़ मंगनी में इतना ख़र्च हो जाता है कि फ़रीक़ैन में शादी के ख़र्च की हिम्मत नहीं रहती। फिर कभी कभी कपड़ों के जोड़े और मिठाइयों का ख़र्च लड़के वालों का दीवालिया निकाल देता

---

[1]....दाढ़ी और नमाज़ का मज़ाक़ उड़ाने से मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुन्फ़रिद तसनीफ़ **"कुफ़्रिय्या कलेमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 362 ता 377 और 417 ता 422 का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

है और शादी के वक़्त ग़ौर करता है कि दुल्हन वाले ने इस क़दर जहेज़ और ज़ेवर वग़ैरा दिया नहीं जो मेरा ख़र्च करा चुका है, अगर लड़की वाले ने इतना न दिया तो लड़की की जान सूली पर रहती है कि तेरे बाप ने हमारा ले ले कर खाया, दिया क्या ? और अगर ख़ूब दिया तो कहते हैं कि क्या दिया ! हम से भी तो ख़ूब ख़र्च करा लिया। बाक़ी गाने बजाने की रस्मों में वोह ख़राबियां हैं जो हम पहले बयान कर चुके हैं। माइयां और उपटन की रस्में बहुत से ह़राम कामों का मज्मूआ़ हैं इस लिये इन तमाम रस्मों को बन्द करना ज़रूरी है।

इस्लामी रस्में

लड़की के लिये लड़का और लड़के के लिये लड़की ऐसी तलाश की जाए जो शरीफ़ और दीनदार हो ताकि आपस में मह़ब्बत रहे। जहां लड़के की मरज़ी न हो वहां हरगिज़ निकाह़ न हो। इसी त़रह़ जहां लड़की या लड़की की मां की मन्शा न हो वहां निकाह़ करना ज़ह्रे क़ातिल है, हम ने देखा है कि ऐसी शादियां काम्याब नहीं होतीं। इसी लिये शरअ़न ज़रूरी है कि लड़की से इज़्न लेते वक़्त लड़के का नाम मअ़ उस के वालिद के और महर के बताया जाए कि "ऐ बेटी ! हम तेरा निकाह़ फुलां लड़के के फुलां के बेटे से कर दें वो कहे हां तब निकाह़ होता है। येह इज़्न लड़की की राय मा'लूम करने के लिये ही तो है अगर मौक़अ़ हो तो लड़के को लड़की पैग़ाम से पहले किसी बहाने से ख़ुफ़्या त़ौर पर दिखा दी जाए कि लड़की को येह ख़बर न हो। (ह़दीष) बल्कि निकाह़ से पेशतर अपने सारे क़राबतदारों का मश्वरा लेना भी बेहतर है। क़ुरआने करीम फ़रमाता है : وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ[1] ऐसे निकाह़ के सारे

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन का काम उन के आपस के मश्वरे से है। (پ۲۵،الشوریٰ:۳۸)

क़राबतदार ज़िम्मादार हो जाते हैं और अगर दुल्हन और दूल्हा में ना इत्तिफ़ाक़ी हो जाए तो येह लोग मिल कर इत्तिफ़ाक़ की कोशिश करते हैं। मंगनी दर अस्ल निकाह़ का वा'दा है अगर येह न भी हो जब भी कोई ह़रज नहीं। लिहाज़ा बेहतर येह है कि मंगनी की रस्म बिल्कुल ख़त्म कर दी जाए इस की कोई ज़रूरत नहीं है और सिवाए नुक़्सान के इस से कोई फ़ाइदा नहीं ग़ालिबन हम ने येह रस्में हिन्दूओं से सीखी हैं क्यूंकि सिवाए हिन्दुस्तान के और कहीं येह रस्म नहीं होती बल्कि अ़-रबी और फ़ारसी ज़बानों में इस का कोई नाम भी नहीं। इस के जितने नाम मिलते हैं सब हिन्दी ज़बान के हैं। चुनान्चे **मंगनी, सगाई, कुड़माई, साख** येह इस के नाम हैं और इन में से कोई भी अ़-रबी, फ़ारसी नहीं। और अगर इस का करना ज़रूरी ही हो तो इस त़रह़ करो कि पहले लड़के वाले के यहां उस के क़राबतदार जम्अ़ हों और वोह उन की ख़ात़िर व तवाज़ोअ़ सिर्फ़ पान और चाय से करे। अगर कहीं पान का रवाज न हो जैसे पंजाब तो वोह सिर्फ़ ख़ाली चाय से जिस के साथ कोई मिठाई न हो, फिर येह लोग उठ कर लड़की वाले के यहां आ जावें वोह भी इन की तवाज़ोअ़ सिर्फ़ पान या ख़ाली चाय से करे। लड़के वाले अपने साथ दुल्हन के लिये एक सूती दूपट्टा और एक सोने की नथ (नथनी) लाए जो पेश कर दे। दुल्हन वालों की त़रफ़ से लड़के को एक सूती रूमाल एक चांदी की अंगूठी, एक नगीने वाली पेश कर दी जाए जिस का वज़्न सवा चार माशा से ज़ियादा न हो क्यूंकि मर्द को रेशम और सोना पहनना ह़राम है, लो येह मंगनी हो गई अगर दूसरे शहर से मंगनी करने वाले आए हैं तो उन में सात आदमी से ज़ियादा न आएं और दुल्हन वाले मेहमानी के लिह़ाज़ से उन को खाना खिलावें मगर उस खाने में दूसरे मह़ल्ले वालों की आ़म दा'वत की कोई ज़रूरत नहीं फिर इस के बा'द लड़के वाले जब भी आएं तो उन पर मिठाई और कपड़ों

के जोड़ों की पाबन्दी न हो। अगर अपनी ख़ुशी से ही बच्चों के लिये थोड़ी सी मिठाई लाएं तो उस को महल्ले में तक़्सीम करने की कोई ज़रूरत नहीं। ह़दीषे पाक में है कि एक दूसरे को हदिय्या दो मह़ब्बत बढ़ेगी।[1]

मगर इस हदिये को टेक्स न बना लो कि वोह बेचारा इस के बग़ैर आ ही न सके। तारीख़ का मुक़र्रर करना भी इसी सादगी से होना ज़रूरी है कि अगर इसी शहर से लोग आ रहे हैं तो उन की तवाज़ोअ़ सिर्फ़ पान या ख़ाली चाय से हो और अगर दूसरे शहर से आ रहे हैं तो पांच आदमी से ज़ियादा न हों। जिन की तवाज़ोअ़ खाने से की जाए और मुक़र्रर करने वाले सिन रसीदा बुज़ुर्ग लोग हों और बेहतर येह है कि शादी के लिये जुमुआ़ या सोमवार (पीर) का दिन मुक़र्रर हो क्यूंकि येह बहुत ब–रकत वाले दिन हैं फिर तारीख़ के बा'द गाने बजाने ढोल वग़ैरा न हों बल्कि अगर हो सके तो हर तीसरे दिन मह़फ़िले मीलाद कर दिया करें, जिस में ना'त ख़्वानी और दुरूदे पाक की तिलावत हो ऐसे वा'ज़ किये जाएं जिस में मौजूदा रस्मों की बुराइयां बयान हों। माइयों और उपटन की तमाम रस्में बिल्कुल बन्द कर दी जाएं या'नी अगर दुल्हन को एक जगह बिठा दिया जाए या कि दूल्हा दुल्हन के ख़ुश्बू या'नी उपटन मला जाए तो कोई ह़रज नहीं कि येह उपटन एक त़रह़ की ख़ुश्बू है और ख़ुश्बू नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द थी बल्कि शादी के वक़्त ख़ुश्बू इस्ते'माल करना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से षाबित है लेकिन इन कामों के साथ की ह़राम रस्में गाना बजाना औरतों मर्दों का ख़ल्त़ मल्त़ होना, बेहूदा मज़ाक़ सब बन्द कर दिये जाएं। ग़रज़ कि दीनी और दुन्यावी कामों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी दीनो दुन्या की भलाई का ज़रीआ़ है। इस ज़माने में बा'ज़ लोग

---

1 ......شعب الايمان للبيهقى، باب فى مقاربة وموادة اهل الدين، الحديث:٨٩٧٦،ج٦،ص٤٧٩

दूल्हा को चांदी का ज़ेवर पहनाते हैं या छुरी चाक़ू उन के साथ रखते हैं ताकि उस को भूत न चिमट जाए येह सब ना जाइज़ रस्में हैं। अगर दूल्हा पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है तो सुब्ह़ो शाम **आयतुल कुर्सी** पढ़ कर ख़ुद अपने पर दम कर लिया करे। बल्कि नमाज़ी आदमी को कभी कोई आसेब ब फ़ज़्लिही तआ़ला नहीं छूता, क़ुरआने पाक अच्छा निगेहबान है, इस को इख़्तियार करो।

दूसरी फ़स्ल

निकाह़ और रुख़्सत की रस्में

मौजूदा रस्में

निकाह़ के वक़्त दो त़रह़ की रस्में होती हैं। कुछ वोह जो दूल्हा के घर की जाती हैं और कुछ वोह जो दुल्हन के घर। दूल्हा के तो येह होता है कि दूल्हा को नाई ग़ुस्ल देता है वोह ही कपड़े बदलवाता है, सुर्ख़ रंग की पगड़ी बांध कर उस पर सुनहरी गोटा लपेट दिया जाता है, फिर उस पर सेहरा बांधता है जिस में फूल पत्ती और नलकियां लगी होती हैं। नाई येह काम कर के एक थाली रख देता है जिस में तमाम क़राबतदार मर्द, रूपिया पैसा निछावर कर के डालते हैं। इस के बा'द औ़रतें निछावर करती हैं जो नाई की बीवी नाइन का ह़क़ होता है और आज से पहले सारे क़राबतदार जम्अ़ हो चुकते हैं जो खाना खाते जाते हैं और न्योते के रूपै दिये जाते हैं लिखने वाला वोह रूपै लिखता जाता है। इस खाने का नाम बरात की रोटी है। इस वक़्त ज़ियादा क़ाबिले रह़्म दूल्हा के नाना मामूं की ह़ालत होती है क्यूंकि उन पर ज़रूरी है कि भात ले कर आएं वरना नाक कट जाएगी इस भात की रस्म ने सदहा घर बरबाद कर दिये। भात में ज़रूरी है कि दूल्हा और उस के तमाम क़राबत दारों के

लिये कपड़े के जोड़े, कुछ नक़दी और कुछ ग़ल्लाह लावें। बा'ज़ जगह चालीस पचास जोड़े तक लाने पड़ते हैं। अगर एक जोड़ा पांच रूपै में भी बनाओ तो ढाई सो रूपै ठंडे हो गए। खुद मैं ने एक दुकानदार को देखा कि बड़े मज़े से गुज़र कर रहा था, भांजी की शादी आन पड़ी, मैं ने उन को बहुत समझाया कि भात न दे या अपनी हैषिय्यत के मुताबिक़ दे वोह न माना। आख़िरे कार उस की दुकान भात की नज़्र हो गई अब बहुत मुसीबत में है।

भांजी के निकाह़ में येह भी ज़रूरी होता है कि कपड़ों के जोड़ों के सिवा भांजी को ज़ेवर या बरात की रोटी मामूं करे। ग़रज़ कि एक शादी में चार घरों की बरबादी हो जाती है। जब येह सब रस्में हो चुकीं तो अब बरात चली, जिस के साथ बरी और आगे बाजा। बल्कि बा'ज़ दफ़्अ़ा आगे आगे नाचने वाली रन्डियां भी होती हैं। गोले चलते जाते हैं, आतशबाज़ी में आग लगती जाती है। बरी उस मेवे (फ्रूट) को कहते हैं जो दूल्हा की त़रफ़ से जाती है जिस में शकर, एक मन नारियल, मखाना वग़ैरा, तीस सेर कच्चा दूध वग़ैरा भी होता है। दुल्हन के घर येह चीज़ें दी जाती हैं जो बा'द शादी तक़्सीम होती हैं। जब बारात दुल्हन के मकान पर पहुंची तो अव्वल वहां आतशबाज़ी में आग लगाई गई, फिर फूल पत्ती लुटाई गई, फिर तमाम बारातियों को दुल्हन वालों की त़रफ़ से आ़म दा'वत दी गई, फिर निकाह़ हुवा, दूल्हा मकान में गया जहां पहले से औ़रतों का मज्मअ़ ला हुवा है। इस मौक़अ़ पर बड़ी पर्दानशीन औ़रतें भी दूल्हा के सामने बे तकल्लुफ़ बिग़ैर पर्दा आ जाती हैं। गालियां से भरे हुए गाने गाए जाते हैं। सालियां बहनोई से क़िस्म क़िस्म के मज़ाक़ करती हैं (हालांकि सालियों का बहनोई से पर्दा

सख़्त ज़रूरी है), मीराषन वग़ैरा अपने हुक़ूक़ वुसूल करती हैं फिर रुख़्सत की तैयारी होती है जहेज़ दिखाया जाता है। जहेज़ में तीन क़िस्म की चीज़ें होती हैं, एक तो दूल्हा वालों के लिये कपड़ों के जोड़े या'नी दूल्हा उस के मां बाप, दादा दादी, नाना नानी, मामूं, भाई, चचा, ताया ताई, भंगी, बहिश्ती, नाई ग़रज़ कि सब को जोड़े ज़रूर दिये जाते हैं। जिन का मज्मूआ़ बा'ज़ जगह अस्सी बल्कि नव्वे जोड़े होते हैं दूसरे : काठ कबाड़ या'नी मेजें, कुर्सियां, बरतन, चारपाइयां वग़ैरा तीसरे : ज़ेवर इन सब की नुमाइश के बा'द रुख़्सत हुई, जिस में बाहर बाजा का शोर अन्दर रोने चिल्लाने वालों का ज़ोर होता है। पालकी में दुल्हन सुवार आगे दूल्हा घौड़े पर सुवार पालकी पर पैसों बल्कि पंजाब में रूपों और चांदी के छल्ले और अंगूठियों की बिखैर होती हुई रवानगी हुई। سُبْحٰنَ الله क्या पाकीज़ा मजलिस है कि आगे भंगियों और चमारों के बच्चे लूटने वालों का हुजूम फिर बाजे वाले मीराषियों की जमाअ़त और जमाअ़ते शु-रफ़ा पीछे, अगर आंख हो तो ऐसी मजलिस में शिर्कत भी मा'यूब समझो, कहां तक बयान किया जावे ? बा'ज़ वोह रस्में हैं जिन के बयान से शर्म भी आती है कि इस किताब को ग़ैर मुस्लिम क़ौमें भी पढ़ेंगी वोह मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ क्या राय क़ाइम करेंगी ! हक़ येह है कि हम अपने बुज़ुर्गों के ऐसे ना ख़लफ़ औलाद हुए कि हम ने उन के नाम को डिबो दिया। आज ऐसी वाहियात रस्में भंगी चमारों में भी नहीं जो मुसलमानों में हैं।

इन रस्मों की ख़राबियां

इन रस्मों की ख़राबियां मैं क्या बयान करूं, सिर्फ़ इतना अ़र्ज़ कर देता हूं कि इन रस्मों ने मुसलमान मालदारों को ग़रीब कंगाल बना दिया। घर वालों को बे घर कर दिया। मुसलमानों के मह़ल्ले हिन्दूओं के

पास पहुंच गए, हर शख़्स अपने शहर में सद हा मिषालें अपनी आंखों से देखता है। अब चन्द ख़राबियां जो मोटी मोटी हैं अ़र्ज़ करता हूं। अव्वल ख़राबी येह है कि इस में माल की बरबादी और ह़क़ तआ़ला की ना फ़रमानी है

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम न इधर के रहे न उधर के रहे

दूसरे येह कि येह सारे काम अपने नाम के लिये किये जाते हैं। मगर दोस्तो ! सिवाए बदनामी के कुछ भी ह़ासिल नहीं होता। खाने वाले तो खाने में ऐ़ब निकालते हुए जाते हैं कि इस में घी विलायती था, नमक ज़ियादा था, मिर्च अच्छी न थी और दूल्हा वाले हमेशा शिकायत ही करते देखे गए, लड़की के लिये वहां त़ा'ने ही त़ा'ने होते हैं।

लत़ीफ़ा : येह अ़जीब बात है कि हमारे घर येह बराती उ़म्दा उ़म्दा मज़ेदार माल खा कर जाएं मगर उन का मुंह सीधा नहीं होता खाने में ऐ़ब निकालते हैं मगर औलियाउल्लाह और पीरो मुर्शिदों के घर सूखी रोटियां और दाल दलिया ख़ुशी से खा कर तबर्रुक समझ कर ता'रीफ़ें करते हैं। वोह सूखी रोटियां अपने बच्चों को परदेस में भेजते हैं, जा कर देखो अजमेर शरीफ़ का दलिया और बग़दाद शरीफ़ और दूसरे आस्तानों की दाल रोटियां, इस की वजह क्या है ?

दोस्तो ! वजह सिर्फ़ येह है कि येह खाने मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये हैं और वोह ख़ुश्क रोटियां ख़ालिक़ के लिये अगर हम भी शादी बियाह के मौक़अ़ पर खाना, जहेज़ वग़ैरा फ़क़त़ सुन्नत की निय्यत से सुन्नत त़रीक़े पर करें तो कभी कोई ए'तिराज़ हो सकता ही नहीं। हमारे दोस्त शेठ अ़ब्दुल ग़नी साहिब हर साल बक़र ईद के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से क़ुरबानी करते हैं। और पुलाओ पका कर आ़म मुसलमानों की दा'वत करते हैं।

मैं ने देखा है कि वोह मुअ़ज़्ज़ज़ मुसलमान जो किसी की शादी बियाह में बड़े नख़्रे से जाते हैं वोह बिग़ैर बुलाए यहां आ जाते हैं और अगर आख़िरी एक अषर भी पा लेते हैं तो तबर्रुक समझ कर खाते हैं। अभी क़रीब में ही अन्जुमने ख़ुद्दामुस्सूफ़िया के सद्र फ़ज़्ले इलाही साहि़ब पगानवाला रईसे गुजरात ने वलीमा की दा'वत सुन्नत निय्यत से की न किसी को शिकायत पैदा हुई और न किसी ने ऐ़ब निकाला। अ़र्ज़ येह है कि हु़ज़ूर नबिये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ऐ़ब पोश है जिस चीज़ पर उन का नाम आ जाए उस के सब ऐ़ब छुप जाते हैं अगर हम लोग वलीमा का खाना सुन्नत की निय्यत से करें तो अगर दाल रोटी भी मुसलमानों के सामने रख देंगे वोह भी मुसलमान ब-रकत की निय्यत से सेर हो कर खाएंगे।

तीसरी ख़राबी इन रस्मों में येह है कि इन की वजह से शरीफ़ ग़रीबों की लड़कियां बैठी रहती हैं और मालदारों की लड़कियां ठिकाने लग जाती हैं। क्यूंकि लोग अपने बेटों का पैग़ाम वहां ही ले जाते हैं जहां ज़ियादा जहेज़ मिले अगर हर जगह के लिये जहेज़ मुक़र्रर हो जाए कि अमीर व ग़रीब सब इतना ही जहेज़ वग़ैरा दें तो हर मुसलमान की लड़की जल्द ठिकाने लग जाए।

चौथी ख़राबी येह है कि इन रस्मों की वजह से मुसलमानों को अपनी औलाद वबाले जान मा'लूम होने लगी कि अगर किसी के लड़की पैदा हुई समझा कि या तो अब मेरे मकान की ख़ैर नहीं या जाएदाद व दुकान चली। इसी लिये लोग लड़की पैदा होने पर घबराते हैं येह इन रस्मों की "ब-रकत" हैं।

पांचवीं ख़राबी येह है कि निकाह़ से मक़्सूद होता है दो क़ौमों का मिल जाना या'नी लड़के वाले लड़की वाले के क़राबत दार और मुह़िब्ब बन जावें और लड़की वाले, लड़के वाले के, इसी लिये इस का नाम निकाह़ है, निकाह़ के मा'ना हैं मिल जाना तो येह निकाह़ क़बीलों और जमाअ़तों को मिलाने वाली चीज़ है। मिष्ल मश्हूर है कि निकाह़ में लड़की दे कर लड़का लेते हैं और लड़का दे कर लड़की ह़ासिल करते हैं मगर अब मुसलमानों ने समझ लिया कि निकाह़ माल ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है जिस के चार फ़रज़न्द हो गए वोह समझा कि मेरी चार जाएदादें हो गईं कि इन को बियाहूंगा, जहेज़ों से घर भर लूंगा। अब जब दुल्हन ख़ातिर ख़्वाह जहेज़ न लाई लड़ाई क़ाइम हो गई और अब आ़म तौ़र निकाह़ लड़ाई की जड़ बन कर रह गया है कि अपने अ़ज़ीज़ों में लड़की दो तो आपस का पुराना रिश्ता भी ख़त्म हो जाता है क्यूं ? इस लिये कि निकाह़ को एक माली कारोबार समझ लिया गया है।

छटी ख़राबी येह है कि अगर किसी शख़्स के चन्द औलाद हैं पहले का निकाह़ तो बहुत धूमधाम से किया इस एक निकाह़ में इस का मसालह़ा ख़त्म हो गया। बाक़ी औलाद के फ़क़त़ निकाह़ ही हुए, कोई रस्म अदा न हुई, क्यूंकि रूपिया न था तो अब इस औलाद को मां बाप से शिकायत पैदा होती है कि बड़े भाई में क्या ख़ूबी थी जो हम में न थी तो बाप और औलाद में ऐसी बिगड़ती है कि ख़ुदा की पनाह !

सातवीं ख़राबी येह है कि लड़की वालों ने दूल्हा के निकाह़ के वक़्त इतना ख़र्च कराया कि उस का मकान भी रहन हो गया, बहुत क़र्ज़ा सर पर सुवार हो गया, अब दुल्हन साह़िबा जब घर में आईं तो मकान भी हाथ से गया और मुसीबत भी आ पड़ी तो नाम येह होता है येह दुल्हन ऐसी मन्हूस आई कि उस के आते ही हमारे घर की ख़ैरो

ब-रकत उड़ गई इस से फिर लड़ाइयां शुरूअ़ हो जाती हैं येह ख़बर नहीं कि बेचारी दुल्हन का क़ुसूर नहीं बल्कि तुम्हारी इन हिन्दवानी रस्मों की "**ब-रकत**" है।

आठवीं ख़राबी येह है कि इन रस्मों को पूरा करने के लिये ग़रीब लोग लड़की के पैदा होते ही फ़िक्र करने लगते हैं, जूं जूं औलाद जवान होती है उन की फ़िक्रें बढ़ती जाती हैं अब न रोटी अच्छी मा'लूम होती है न पानी। फ़िक्र येह होती है कि किसी सूरत से रूपिया जम्अ़ करो कि येह रस्में पूरी हों अब रूपिया जम्अ़ कर रहे हैं। इस रूपिये में ज़कात भी वाजिब है और ह़ज भी फ़र्ज़ हो जाता है वोह नहीं अदा करते क्यूंकि अगर इन इबादात में येह रूपिया ख़र्च हो गया तो वोह शैत़ानी रस्में किस त़रह़ पूरी होंगी। मैं ने एक साह़िब को देखा कि उन के पास तक़रीबन दो हज़ार रूपिया था, मैं ने कहा : "आप पर ह़ज फ़र्ज़ है, ह़ज को जाओ।" फ़रमाने लगे कि "बड़ा ह़ज तो लड़की की शादी और उस का जहेज़ है !" मैं ने कहा ! शादी के अख़राजात जो अपनी क़ौम ने बना लिये हैं, वोह फ़र्ज़ नहीं हैं और ह़ज फ़र्ज़ है, फ़रमाने लगे : "कुछ भी हो नाक तो नहीं कटवाई जाती।" आख़िर ह़ज न किया, लड़की की शादी में गुलछर्रे उड़ाए।

आप ने बहुत मालदारों को देखा होगा कि ह़ज उन को नसीब नहीं होता लगातार शादियों से ही उन्हें छुटकारा नहीं मिलता इधर तवज्जोह कैसे करें येह भी ख़याल रहे कि ह़ज करना हर उस शख़्स का फ़र्ज़ है जिस के पास मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाने आने का किराया और बाक़ी मसारिफ़ हों। येह जो मश्हूर है कि बुढ़ापे में ह़ज करो ग़लत़ है क्या ख़बर कि बुढ़ापा हम को लेगा या नहीं और येह माल रहेगा या नहीं।

नवीं ख़राबी येह है कि ग़रीब लोग लड़की के पचपन ही से कपड़े जम्अ़ करने शुरूअ़ करते हैं क्यूंकि इतने जोड़े वोह एक दम नहीं बना सकते। जब तक लड़की जवान होती है कपड़े गल जाते हैं उन्हीं गले हुए कपड़ों के जोड़े बना कर देते हैं। जब वोह पहने जाते हैं तो दो दिन में फट जाते हैं जिस से पहनने वाले गालियां देते हैं कि ऐसे कपड़े देने की क्या ज़रूरत थी?

दस्वीं ख़राबी येह है कि दुल्हन वाले मुसीबत उठा कर पैसा बरबाद कर के काठ कबाड़ या'नी मेज व कुर्सियां, मस्हरियां लड़की को दे तो देते हैं मगर दूल्हा का घर इतना तंग और छोटा होता है कि वहां रखने को जगह नहीं और अगर दूल्हा मियां किराये के मकान में रहते हैं तो जब दो चार दफ़्अ़ा मकान बदलना पड़ता है तो येह तमाम काठ कबाड़ टूट फूट कर ज़ाएअ़ हो जाता है। जितने रूपै का जहेज़ दिया गया अगर इतना रूपिया नक़्द दिया जाता या उस रूपिये की कोई दुकान या मकान लड़की को दे दिया जाता तो लड़के के काम आता और उस की औलाद उ़म्र भर आप को दुआ़एं देती और लड़की की भी सुसराल में इ़ज़्ज़त होती और अगर ख़ुदा न करे कि कभी लड़की पर कोई मुसीबत आती तो उस के किराये से अपना बुरा वक़्त निकाल लेती।

मुसलमानों के कुछ बहाने

जब येह ख़राबियां मुसलमानों को बताई जाती हैं तो उन को चन्द क़िस्म के उ़ज़्र होते हैं **एक** तो येह कि साहिब हम क्या करें, हमारी औ़रतें और लड़के नहीं मानते, हम उन की वजह से मजबूर हैं। येह उ़ज़्र मह्ज़ बेकार है, ह़क़ीक़त येह है कि आधी मरज़ी ख़ुद मर्दों की भी होती है तब उन की औ़रतें और लड़के इशारा या नर्मी पा कर ज़िद करते हैं वरना मुमकिन नहीं कि हमारे घर में हमारी मरज़ी के बिग़ैर कोई काम हो जाए। अगर हांडी में नमक ज़ियादा हो जाए तो औ़रत बेचारी की शामत

और अगर औलाद या बीवी किसी वक़्त नमाज़ न पढ़े तो बिल्कुल परवाह ही नहीं, जान लो कि हक़ तआ़ला निय्यत से ख़बरदार है बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि आगे आगे फ़रज़न्द की बरात मअ़ नाच बाजे के जा रही है और पीछे पीछे येह ह़ज़रात भी لَاحَوْل पढ़ते हुए चले जा रहे हैं और कहते हैं क्या करें बच्चा नहीं मानता, यक़ीनन येह لَاحَوْل ख़ुशी की है। ह़ज़रते सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने क्या ख़ूब फ़रमाया,

که لاحول گویند شادی کناں [1]

दूसरे : पंजाब में येह क़ानून है कि मां बाप के माल से लड़की मीराष नहीं पाती लखपती बाप के बा'द सारा माल, जाएदाद, मकानात सब कुछ लड़के का है, लड़की एक पाई की ह़क़दार नहीं। बहाना येह करते हैं कि हम लड़की की मीराष के बदले उस की शादी धूमधाम से कर देते हैं। سُبْحٰنَ اللهِ अपने नाम के लिये रूपिया ह़राम कामों में बरबाद करो और लड़की के ह़िस्से से काटो। क्यूं जनाब ! आप जो लड़के की शादी और उस की पढ़ाई लिखाई पर जो रूपिया ख़र्च करते हैं। बी.ए., एम.ए. की डिग्री दिलवाते हैं क्या वोह भी फ़रज़न्द की मीराष से काटते हैं हरगिज़ नहीं फिर येह उ़ज़्र कैसा ? येह मह़ज़ धोका देना है।

तीसरे : येह कि हम को उ़-लमाए किराम ने येह बातें बताई ही नहीं इस लिये हम लोग इस से ग़ाफ़िल रहे, अब जब कि येह रुसूम चल पड़ीं लिहाज़ा इन का बन्द होना मुश्किल है। लेकिन येह बहाना भी ग़लत़ है उ़-लमाए अहले सुन्नत دامت فیوضهم ने इस के मुतअ़ल्लिक़ किताबें लिखीं मुसलमानों ने क़बूल न किया चुनान्चे इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी قُدِّسَ سِرُّهٗ ने एक किताब लिखी "**जलिय्युसौत**" जिस में साफ़ साफ़ फ़रमाया कि मय्यित की रोटी

---

1 .....तरजमा : या'नी لَاحَوْل कहते हैं ख़ुश हो जाते हैं।

अमीरों के लिये खाना ह़राम है सिर्फ़ ग़रीब लोग खाएं। एक किताब लिखी "هَادِی النَّاسِ اِلٰی اَحْکَامِ الْاَعْرَاسِ"[1] जिस में शादी बियाह की मुरुव्वजा रस्मों की बुराइयां बताईं और शरई रस्में बयान फ़रमाईं, एक किताब लिखी "**मुरूजुन्नजा**" जिस में षाबित फ़रमाया कि सिवा चन्द मौक़ओं के बाक़ी जगह औ़रत को घर से निकलना ह़राम है और भी उ़-लमाए अहले सुन्नत ने इन बातों के मुतअ़ल्लिक़ किताबें लिखीं। अफ़्सोस ! कि अपना क़ुसूर उ़-लमा के सर लगाते हो।

चौथा : बहाना येह करते हैं कि अगर शादी बियाहों में येह रस्में न हों तो हमारे घर लोग जम्अ़ न होंगे जिस से शादी में रौनक़ न होगी। मगर येह भी फ़क़त़ वहम व धोका है ह़क़ येह है कि शादी व निकाह़ में शिर्कत अगर सुन्नत की निय्यत से हो तो इ़बादत है अब तो हमारे निकाह़ों में लोग तमाशाई बन कर या खाने के लिये आते हैं जिस का कुछ षवाब नहीं पाते और जब اِنْ شَآءَاللّٰہ इ़बादत की निय्यत से आया करेंगे तो जैसे अब लोग ई़द की नमाज़ के लिये ई़दगाह में जाते हैं तब اِنْ شَآءَاللّٰہ रौनक़ ही कुछ और होगी और बहार ही कुछ और आवेगी। अभी यहां गुजरात में भाई फ़ज़्ले इलाही साह़िब के घर ऐसी ही सीधी सादी शादी हुई। इस क़दर मज्मअ़ था कि मैं ने आज तक किसी बरात में ऐसा मज्मअ़ न देखा, बहुत से मुसलमान तो वुज़ू कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए इस सारे जुलूस में शरीक हुए।

पांचवां : बहाना येह करते हैं कि लोग हम को त़ा'ना करेंगे कि ख़र्च कम करने के लिये रस्में बन्द की हैं और बा'ज़ लोग येह कहेंगे कि येह मातम की मजलिस है यहां नाच नहीं बाजा नहीं गोया तीजा पढ़ा जा रहा है येह उ़ज़्र भी बेकार है। एक सुन्नत को ज़िन्दा करने में सो शहीदों

---

[1] ..... फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, जि. 23 (मत़्बूआ़ रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर) में इस मुबारक रिसाले का नाम "ھادی الناس فی رسوم الاعراس" लिखा है।

का षवाब मिलता है क्या येह षवाब मुफ़्त में मिल जाएगा ? लोगों के ता़ने अ़वाम के मज़ाक़, अव्वल अव्वल बरदाश्त करने पड़ेंगे और दोस्तो ! अब भी लोग ता़'ने से कब बाज़ आते हैं, कोई खाने का मज़ाक़ उड़ाता है, कोई जहेज़ का कोई और त़रह़ की शिकायत करता है ग़रज़ कि लोगों के ता़'ने से कोई किसी वक़्त नहीं बच सकता। लोगों ने तो ख़ुदा तआ़ला और उस के रसूलों को ऐ़ब लगाए और ता़'ने दिये तुम इन की ज़बान से किस त़रह़ बच सकते हो। येह भी याद रखो कि पहले तो कुछ मुश्किल पड़ेगी मगर बा'द में اِنْ شَآءَاللّٰہ वोह ही ता़'ने देने वाले लोग तुम को दुआ़एं देंगे और ग़रीब व ग़ुरबा की मुश्किलें आसान हो जाएंगी। अल्लाह और हु़ज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام भी राज़ी होंगे और मुसलमान भी, मज़बूती से क़ाइम रहना शर्त़ है।

बियाह शादी की इस्लामी रस्में

सब से बेहतर तो येह होगा कि अपनी औलाद के निकाह़ के लिये ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत शहज़ादिये इस्लाम फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के निकाहे़ पाक को नुमूना बनाओ और यक़ीन करो कि हमारी औलाद उन के क़दमे पाक पर क़ुरबान और येह भी समझ लो कि अगर हु़ज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़ी होती कि मेरी लख़्ते जिगर की शादी बड़ी धूमधाम से हो और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से उस के लिये चन्दा (न्योता) वग़ैरा के लिये हुक्म फ़रमा दिया जाता तो उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ज़ाना मौजूद था। जो एक एक जंग के लिये नव नव सो ऊंट और नव नव सो अशरफ़ियां ह़ाज़िर कर देते थे। लेकिन चूंकि मन्शा येह था कि क़ियामत तक येह शादी मुसलमानों के लिये नुमूना बन जाए इस लिये निहायत सादगी से येह इस्लामी रस्म अदा की गई। लिहाज़ा मुसलमानो ! अव्वलन तो अपनी बियाह बरात से सारी ह़राम रस्में निकाल डालो, बाजे, आतशबाज़ी,

औ़रतों के गाने, मीराषी डोम वग़ैरा के गीत, रन्डियों के नाच, औ़रतों और मर्दों का मैल जोल, फूल पत्ती का लुटाना एक दम अल्लाह का नाम ले कर मिटा दो। अब रही फ़ुज़ूल ख़र्ची की रस्में उन को या तो बन्द ही कर दो अगर बन्द न कर सको तो उन के लिये ऐसी ह़द मुक़र्रर कर दो जिस से फ़ुज़ूल ख़र्ची न रहे और घर की बरबादी न हो। जिन्हें अमीर व ग़रीब सब बे तकल्लुफ़ पूरा कर सकें लिहाज़ा हमारी राय येह है कि इस त़रीक़े से निकाह़ की रस्म अदा होनी चाहिये।

भात (नानकी छोछक) की रस्म बिल्कुल बन्द कर दी जाए अगर दूल्हा, दुल्हन का मामूं नाना कुछ इमदाद करना चाहें तो रस्म बना कर न करें बल्कि मह़ज़ इस लिये कि क़राबतदारों की मदद करना रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म है इस लिये बजाए कपड़ों के नक़्द रूपिया दे दें जो कि पच्चीस रूपिये से ज़ियादा हरगिज़ न हों, या'नी कम तो हों मगर इस से ज़ियादा न हों और येह इमदाद ख़ुफ़िया की जावे दिखावे को इस में दख़्ल न हो ताकि रस्म न बन जाए। दूल्हा दुल्हन निकाह़ से पहले उपटन या ख़ुश्बू का इस्ते'माल करें मगर महेंदी और तेल लगाने और उपटन की रस्म बन्द कर दी जाएं या'नी गाना बाजा औ़रतों का जम्अ़ होना बन्द कर दो। अब अगर बरात शहर की शहर में है तो ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर बरात का मज्मअ़ दूल्हा के घर जम्अ़ हो और दुल्हन वाले लोग दुल्हन के घर जम्अ़ हों। दुल्हन के यहां उस वक़्त ना'तख़्वानी या वा'ज़ या दुरूद शरीफ़ की मजलिस गर्म हो। इधर दूल्हा को अच्छा उ़म्दा सहरा बांध कर या पैदल या घौड़े पर सुवार कर के इस त़रह़ बरात का जुलूस रवाना हो कि आगे आगे उ़म्दा ना'तख़्वानी होती जावे, तमाम बाज़ारों में येह जुलूस निकाला जाए। जब येह बरात दुल्हन के घर पहुंचे तो दुल्हन वाले इस बरात को किसी क़िस्म की रोटी या खाना हरगिज़ न दें क्यूंकि ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعالٰی عَنْهَا के निकाह़ में

हुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام ने कोई खाना न दिया ग़रज़ कि लड़की वाले के घर खाना न हो बल्कि पान या ख़ाली चाय से तवाज़ोअ़ कर दी जाए। फिर उ़म्दा तरीक़े से ख़ुत़्बए निकाह़ पढ़ कर निकाह़ हो जाए अगर निकाह़ मस्जिद में हो तो और भी अच्छा है निकाह़ का मस्जिद में होना मुस्तह़ब है और अगर लड़की के घर हो तब भी कोई ह़रज नहीं। निकाह़ होते ही बराती लोग वापस हो जाएं येह तमाम काम अ़स्र से पहले हो जावें और बा'दे मग़रिब को दुल्हन को रुख़्सत कर दिया जाए ख़्वाह रुख़्सत टांगे में हो या डोली वग़ैर में मगर इस पर किसी क़िस्म का निछावर और बिखेर बिल्कुल न हो कि बिखेर करने में पैसे गुम हो जाते हैं। हां निकाह़ के वक़्त ख़ुरमे लुटाना सुन्नत हैं और अगर निकाह़ के वक़्त दो चार गोले चला दिये जाएं या ए'लान की निय्यत से जहां निकाह़ हुवा है वहां ही कोई नक्कारा या नौबत इस त़रह़ बिग़ैर गीत के पीट दी जाए जैसे सह़री के वक़्त उठाने के लिये र-मज़ान शरीफ़ में पीटी जाती है तो भी बहुत अच्छा है येह ही ज़र्बे दफ़ के मा'ने हैं।

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है, **تَسَوَّکُوْا فَاِنَّ السِّوَاکَ مَطْهَرَةٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّب** *या'नी मिस्वाक करो क्यूंकि मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की ख़ुशनूदी का सबब है।*

(سنن ابن ماجه، کتاب الطهارة و سننها، باب السواك، الحديث ٢٨٩، ج ١، ص ١٨٦)

जहेज़

जहेज़ के लिये भी कोई ह़द होनी चाहिये कि जिस की हर अमीरो ग़रीब पाबन्दी करे। अमीर लोग और मौक़अ़ पर अपनी लड़कियों को जो चाहें दें। मगर जहेज़ वोह दें जो मुक़र्रर हो गया याद रखो अगर तुम जहेज़ से दूल्हा का घर भी भर दोगे तो भी तुम्हारा नाम नहीं हो सकता है। क्यूंकि बा'ज़ जगह भंगी चमारों ने इतना जहेज़ दे दिया है कि मुसलमान बड़े मालदार भी नहीं दे सकते। चुनान्चे चन्द साल गुज़रे कि आगरे के एक चमार ने अपनी लड़की को इतना जहेज़ दिया कि वोह बरात के साथ जुलूस की शक्ल में एक मील में था इस की निगरानी के लिये पोलीस बुलानी पड़ी जब उस से कहा गया कि इतना जहेज़ रखने के लिये दूल्हा के पास मकान नहीं है तो फ़ौरन छ छ हज़ार के या'नी बारह हज़ार रूपै के मकान ख़रीद कर दूल्हा को दे दिये चुनान्चे अब हम ने ख़ुद देखा कि जो मुसलमान अपनी जाएदाद व मकान फ़रोख़्त कर के इतना अच्छा जहेज़ देते हैं तो देखने वाले इस चमार के जहेज़ का ज़िक्र शुरूअ़ करते हैं और कहते हैं कि भाई वोह चमार जहेज़ का रिकॉर्ड तोड़ गया। उस मुसलमान बेचारे का नाम न ता'रीफ़ लिहाज़ा ऐ मुसलमानो ! होश करो, इस नामवरी के लालच में अपने घर को आग न लगाओ याद रखो कि नाम और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में है। लिहाज़ा जो जहेज़ हम अ़र्ज़ करते हैं इस से ज़ियादा हरगिज़ न दो।

बरतन 11 अ़दद, चारपाई दरमियानी एक अ़दद, लिहाफ़ एक अ़दद। तोशक (गदेला) एक अ़दद, तक्या एक अ़दद, चादर एक अ़दद, दुल्हन को जोड़े चार अ़दद, जिस में दो अ़दद सूती हों और दो रेश्मी। दूल्हा को जोड़े दो अ़दद, दूल्हा के वालिद को जोड़ा एक अ़दद, दूल्हा की मां को जोड़ा एक अ़दद, मुसल्ला (जाए नमाज़) एक अ़दद, क़ुरआन शरीफ़ मअ़ रिह़ल एक अ़दद, ज़ेवर ब क़दरे हिम्मत मगर इस में भी

ज़ियादती न करो। अगर हो सके तो इस के इलावा नक़्द रूपिया लड़की के नाम में जम्अ़ करवा दो और अगर तुम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दिया है तो लड़की को कोई मकान, दुकान, जाएदाद की शक्ल में ख़रीद दो लड़की के नाम रजिस्ट्री हो। येह भी याद रखो कि तमाम लड़कियों में बराबरी होना ज़रूरी है लिहाज़ा अगर नक़्दी रूपिया या जाएदाद एक को दी है तो सब को दो वरना गुनहगार हो गए। जो औलाद में बराबरी न रखे ह़दीष शरीफ़ में उस को ज़ालिम कहा गया है।(1)

और अपनी लड़कियों को सिखा दो कि अगर उन की सास या नन्द त़ा'ना दें तो वोह जवाब दें कि मैं सुन्नत त़रीक़े और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ग़ुलामी में तुम्हारे घर आई हूं अगर तुम ने मुझ पर त़ा'ना किया तो तुम्हारा येह त़ा'ना मुझ पर न होगा बल्कि इस्लाम और बानिये इस्लाम عَلَیْہِ السَّلَام पर होगा। सास नन्द भी ख़ूब याद रखें कि अगर उन्हों ने येह जवाब सुन कर भी ज़बान न रोकी। तो उन के ईमान का ख़त़रा है।

लत़ीफ़ा : ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक शख़्स आया और अ़र्ज़ करने लगा। कि मैं ने क़सम खाई थी कि अपनी बेटी को जहेज़ में हर चीज़ दूंगा। अब क्या करूं कि क़सम पूरी हो क्यूंकि हर चीज़ तो बादशाह भी नहीं दे सकता। आप ने फ़रमाया कि तू अपनी लड़की को जहेज़ में क़ुरआन शरीफ़ दे दे क्यूंकि क़ुरआन शरीफ़ में हर चीज़ है और आयत पढ़ दी وَلَا رَطْبٍ وَّلَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ کِتٰبٍ مُّبِیْنٍ (2) (रूहुल बयान पारह ग्यारहवां सूरए यूनुस की पहली आयत)(3)

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الھبات، باب کراھۃ تفضیل...الخ، الحدیث:١٦٢٣، ١٦٢٤، ص ٨٧٧

2 ....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक रोशन किताब में न लिखा हो (پ٧، الانعام:٥٩)

3 ......تفسیر روح البیان، یونس، تحت الآیۃ ١، ج٤، ص ٤

लिहाज़ा लड़कियों और उन की सास नन्दों को याद रखना चाहिये कि जिस ने क़ुरआन शरीफ़ जहेज़ में दे दिया उस ने सब कुछ दे दिया क्या चक्की, चूल्हा और दुन्या की चीज़ें क़ुरआन शरीफ़ से बढ़ कर है।

और अगर बरात दूसरे शहर से आई है तो बरात में आने वाले आदमी मर्द और औ़रत 25 से ज़ियादा न हों और इन मेहमानों को लड़की वाला खाना खिलाए मगर येह खाना मेहमानी के ह़क़ का होगा न की बरात की रोटी। इस त़रह़ दुल्हन वाले के घर जो अपनी बिरादरी और बस्ती की आ़म दा'वत होती है। वोह बिल्कुल बन्द कर दी जाए। हां बाहर के मेहमान और बरात के मुन्तज़िमीन ज़रूर खाना खाएं। मक़्सूद सिर्फ़ येह है कि दुल्हन के घर आ़म बिरादरी की दा'वत न हो कि येह बिला वजह का बोझ है। जहां तक हो सके लड़की वाले का बोझ हल्का कर दो।

जब दुल्हन ख़ैर से घर पहुंचे तो रुख़्सत के दूसरे दिन या'नी शबे उ़रूसी की सुब्ह़ को दूल्हा के घर दा'वते वलीमा होनी चाहिये, येह दा'वत अपनी हैषिय्यत के मुत़ाबिक़ हो कि येह सुन्नत है मगर इस की धूमधाम के लिये सूदी क़र्ज़ा न लिया जाए और मालदारों के साथ कुछ ग़ु-रबा और मसाकीन को भी दा'वत में बुलाया जाए याद रखो कि जिस शादी में ख़र्चा कम होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह शादी बड़ी मुबारक और दुल्हन बड़ी ख़ुश नसीब होगी हम ने देखा कि ज़ियादा जहेज़ ले जाने वाली लड़कियां सुसराल में तक्लीफ़ से रहीं और कम जहेज़ लाने वालियां बड़े आराम से गुज़ारा कर रही हैं।

हम ने ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की शादी और उन का जहेज़ और उन की ख़ानगी ज़िन्दगी शरीफ़ नज़्म में लिखी है, और आप को सुनाएं, सुनो और इ़ब्रत पकड़ो।

शहज़ादिये इस्लाम मलिकए दारुस्सलाम

ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا का निकाह़

गोशे दिल से मो'मिनो सुन लो ज़रा — है येह क़िस्सा फ़ातिमा के अ़क़्द का !

पन्दरह साला नबी की लाडली — और थी बाईस साल उ़म्रे अ़ली

अ़क़्द का पैग़ाम हैदर ने दिया — मुस्त़फ़ा ने मरह़बन अहलन कहा

पीर का दिन सत्तरह माहे रजब — दूसरा सिने हिजरत शाहे अ़रब

फिर मदीना में हुवा ए'लाने आ़म — ज़ोहर के वक़्त आएं सारे ख़ासो आ़म

इस ख़बर से शोर बरपा हो गया — कूचा व बाज़ार में गुल सा मचा

आज है मौला की दुख़्तर का निकाह़ — आज है उस नेक अख़्तर का निकाह़

आज है उस पाक व सच्ची का निकाह़ — आज है बे मां की बच्ची का निकाह़

ख़ैर से जब वक़्त आया ज़ोहर का — मस्जिदे न-बवी में मज्मअ़ हो गया

एक जानिब हैं अबू बक्रो उ़मर — एक त़रफ़ उ़स्मान भी हैं जल्वागर

हर त़रफ़ अस्ह़ाबो अन्सार हैं — दरमियान में अह़मदे मुख़्तार हैं

सामने नौशा अ़ली मुर्तज़ा — हैदरे क़र्रार शाहे ला फ़ता

आज गोया अ़र्श आया है उतर — या कि क़ुदसी आ गए हैं फ़र्श पर

जम्अ़ जब येह सारा मज्मअ़ हो गया — सय्यिदुल कौनैन ने ख़ुत़बा पढ़ा

जब हुए ख़ुत़्बे से फ़ारिग़ मुस्त़फ़ा — अ़क़्द ज़हरा का अ़ली से कर दिया

चार सो मिस्क़ाल चांदी महर था — वज़्न जिस का डेढ़ सो तोला हुवा

बा'द में ख़ुरमे लुटाए ला कलाम　मां सिवा इस के न था कोई त़आ़म
उन के ह़क़ में फिर दुआ़ए ख़ैर की　और हर इक ने मुबारकबाद दी
घर से रुख़्सत जिस घड़ी ज़हरा हुईं　वालिदा की याद में रोने लगीं
दी तसल्ली अह़मदे मुख़्तार ने　और फ़रमाया शहे अबरार ने
फ़ाति़मा हर त़रह़ से बाला हो तुम　मैका व सुसराल में आ'ला हो तुम
बाप तेरा है इमामुल अम्बिया　और शोहर औलिया के पेश्वा
माहे ज़ुल हि़ज्जा में जब रुख़्सत हुई　तब अ़ली के घर में एक दा'वत हुई
जिस में थी दस सेर जव की रोटियां　कुछ पनीर और थोड़े ख़ुरमे बे गुमां
इस ज़ियाफ़त का वलीमा नाम है　और येह दा'वत सुन्नते इस्लाम है
सब को इन की राह चलना चाहिये　और बुरी रस्मों से बचना चाहिये

जहेज़

फ़ाति़मा ज़हरा का जिस दिन अ़क़्द था　सुन लो उन के साथ क्या क्या नक़्द था
एक चादर सत्तरह पैवन्द की　मुस्त़फ़ा ने अपनी दुख़्तर को जो दी
एक तोशक जिस का चमड़े का गि़लाफ़　एक तक्या एक ऐसा ही लिहाफ़
जिस के अन्दर ऊन न रेशम रूई　बल्कि उस में छाल ख़ुरमे की भरी
एक चक्की पीसने के वासित़े　एक मश्कीज़ा था पानी के लिये
एक लकड़ी का पियाला साथ में　नक़रई कंगन की जोड़ी हाथ में
और गले में हार हाथी दांत का　एक जोड़ा भी खड़ाओ का दिया

शाहज़ादी सय्यिदुल कौनैन की	बे सुवारी ही अ़ली के गर गई
वासिते जिन के बने दोनों जहां	उन के घर थीं सीधी सादी शादियां
इस जहेज़े पाक पर लाखों सलाम	साहिबे लौलाक पर लाखों सलाम

शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की ज़िन्दगी

आई जब ख़ातूने जन्नत अपने घर	पड़ गए सब काम उन की ज़ात पर
काम से कपड़े भी काले पड़ गए	हाथ में चक्की से छाले पड़ गए
दी ख़बर ज़हरा को असदुल्लाह ने	बांटे हैं क़ैदी रसूलुल्लाह ने
एक लौंडी भी अगर हम को मिले	इस मुसीबत से तुम्हें राहत मिले
सुन के ज़हरा आईं सिद्दीक़ा के घर	ताकि देखें हाथ के छाले पिदर
पर न थे दौलत कदा में शाहे दीं	वालिदा से अ़र्ज़ कर के आ गईं
घर में जब आए ह़बीबे किब्रिया	वालिदा ने माजरा सारा कहा
फ़ातिमा छाले दिखाने आईं थीं	घर की तक्लीफ़ें सुनाने आईं थीं
आप को घर में न पाया शाहे दीं	मुझ से सब दुख दर्द अपना कह गईं
एक ख़ादिम आप अगर उन को भी दें	चक्की और चूल्हे के वोह दुख से बचें
शब को आए मुस्तफ़ा ज़हरा के घर	और कहा दुख़्तर से ऐ जाने पिदर
हैं येह ख़ादिम उन यतीमों के लिये	बाप जिन के जंग में मारे गए
तुम पे साया है रसूलुल्लाह का	आसरा रखो फ़क़त अल्लाह का
हम तुम्हें तस्बीह इक ऐसी बताएं	आप जिस से ख़ादिमों को भूल जाएं

अव्वलन سُبۡحٰنَ اللّٰه *33 बार हो* *और फिर* اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه *इतनी ही पढ़ो*
और 34 बार हो तक्बीर भी *ताकि सो 100 हो जाएं येह मिल कर सभी*
पढ़ लिया करना इसे हर सुब्हो शाम *विर्द में रखना इसे अपने मुदाम*
खुल्द की मुख़्तार राज़ी हो गईं *सुन के येह गुफ़्तार खुश खुश हो गईं*

***सालिक** इन की राह जो कोई चले*
दीनो दुन्या की मुसीबत से बचे

हिदायत :

निकाह़ के बा'द कभी शौहर बीवी में ना इत्तिफ़ाक़ी हो जाती है जिस की वजह से शौहर औ़रत की सूरत से बेज़ार होता है और औ़रत शौहर के नाम से घबराती है जिस में कभी तो कुसूर औ़रत का होता है कभी मर्द का। मर्द तो दूसरा निकाह़ कर लेता है और अपनी ज़िन्दगी आराम से गुज़ारता है मगर बेचारी औ़रत ही नहीं बल्कि उस के मैके वालों तक की ज़िन्दगी तल्ख़ हो जाती है जिस का दिन रात तजरिबा हो रहा है। लड़की वाले रो रहे हैं। कभी मर्द ग़ाइब या दीवाना पागल हो जाता है जिस की त़लाक़ का शरअ़न ए'तिबार नहीं, अब औ़रत बे बस है ग़ैर मुस्लिम क़ौमें मुसलमानों पर त़ा'न देती हैं कि इस्लाम में औ़रतों पर ज़ुल्म और मर्दों को बेजा आज़ादी है इस का इ़लाज औ़रतों ने तो येह सोचा कि वोह मर्द से त़लाक़ ह़ासिल करने के लिये मुरतद्द होने लगीं या'नी कुछ रोज़ के लिये ईसाई या आर्या वग़ैरा बन गईं फिर दोबारा इस्लाम ला कर दूसरे निकाह़ में चली गईं, येह इ़लाज ख़त़रनाक है और ग़लत़ भी क्यूंकि इस में मुस्लिम क़ौम के दामन पर निहायत बदनाम धब्बा लगता है और बहुत सी औ़रतें फिर इस्लाम में वापस नहीं आईं

जिस की मिषालें मेरे सामने मौजूद हैं नीज़ औ़रत बे ईमान बन जाने से पेहला निकाह़ टूटता भी नहीं बल्कि क़ाइम रहता है। बा'ज़ लीडराने क़ौम ने इस का येह इलाज सोचा कि फ़स्खे़ निकाह़ का क़ानून बनवा दिया लेकिन इस क़ानून से भी शरअ़न निकाह़ नहीं टूटता। त़लाक़ शौहर दे तब ही हो सकती है बा'ज़ अ़क्लमन्द लोगों ने येह तदबीर सोची के बड़े बड़े महर बंधवाए पचास हज़ार एक लाख रूपिये या अपनी लड़कियों के नाम दूल्हा से मकान या जाएदाद लिखवाई मगर येह इलाज भी मुफ़ीद षाबित न हुवा क्यूंकि इतने बड़े महर के वुसूल करने के लिये औ़रत के पास काफ़ी रूपिया चाहिये और बहुत दफ़्अ़ ऐसा हुवा कि मुक़द्दमा चला। शौहर ने अदाए महर के झूटे गवाह खड़े कर दिये कि मैं ने महर दे दिया है या उस ने मुआ़फ़ कर दिया है इस की भी मिषालें मौजूद हैं। अगर कोई मकान वग़ैरा नाम करा लिया तो भी बेकार क्यूंकि जब मर्द औ़रत से आंख फेर लेता है तो फिर मकान या थोड़ी ज़मीन की परवाह नहीं करता अगर वोह मकान छोड़ बैठे तो क्या औ़रत मकान चाटेगी। ऐसे ही अगर शौहर से कुछ माहवार तनख़्वाह लिखवा ली तो अव्वलन तो वुसूल करना मुश्किल, अगर शौहर ग़ाइब हो गया या वोह ग़रीब आदमी है तो किस त़रह़ अदा करे और अगर तनख़्वाह मिलती भी रही तो जवानी की उ़म्र क्यूं कर गुज़ारे। दोस्तो ! येह सारे इलाज ग़लत़ है इस का सिर्फ़ एक इलाज है वोह येह कि निकाह़ के वक़्त काबीन नामा शौहर से लिखवा लिया जाए। काबीन नामा येह है कि एक तह़रीर लिखी जाए जिस में शौहर की त़रफ़ से लिखा हो कि अगर मैं ला पता हो जाऊं या इस बीवी की मौजूदगी में दूसरा निकाह़ कर के इस पर ज़ुल्म करूं या इस के हुक़ूक़े शरई अदा न करूं वग़ैरा वग़ैरा तो इस औ़रत को त़लाक़े बाइना लेने का ह़क़ है लेकिन येह तह़रीर निकाह़ के इजाब व क़बूल के बा'द कराई जाए या निकाह़ ख़्वाह क़ाज़ी ईजाब तो मर्द की

तरफ़ से करे और औ़रत इस शर्त़ पर क़बूल करे कि मुझ को फुलां फुलां सूरत में त़लाक़ लेने का ह़क़ होगा फिर اِنْ شَآءَاللّٰه शौहर किसी क़िस्म की बद सुलूकी न कर सकेगा और अगर करे तो औ़रत ख़ुद त़लाक़ ले कर मर्द से आज़ाद हो सकेगी।

इस में शरअ़न कुछ ह़रज नहीं और येह इलाज बहुत मुफ़ीद षाबित हुवा। इस से येह मक़्सूद नहीं है कि मुसलमानों के घर बिगड़ें बल्कि मैं येह चाहता हूं कि बिगड़ने से बचें मर्द इस डर से औ़रतों के साथ बद सुलूकी करने से बाज़ रहें।

दूसरी हिदायत

पंजाब और काठियावाड़ में त़लाक़ का बहुत रवाज है मा'मूली सी बातों पर तीन त़लाक़ें दे देते हैं और हिन्दू मुह़र्रिरों से त़लाक़ नामा लिखवाते हैं जो इस्लामी मसाइल से बिल्कुल जाहिल हैं फिर बा'द में पछता कर मुफ़्ती साह़िब के पास रोते हुए आते हैं कि मौलवी साह़िब ख़ुदा के लिये कोई सूरत निकालो कि मेरी बीवी फिर निकाह़ में आ जावे मैं चूंकि फ़त्वों का काम करता हूं इस लिये मुझे इन वाक़ेआ़त से बहुत साबिक़ा पड़ता रहता है फिर बहाना येह बताते हैं कि ग़ुस्से में ऐसा हो गया।

दोस्तो! त़लाक़ ग़ुस्से में ही दी जाती है, ख़ुशी में कौन देता है फिर येह ह़ीला करते हैं कि वहाबियों से मस्अला लिखवाते हैं कि एक दम तीन त़लाक़ें एक त़लाक़ होती हैं, इस में रुजूअ़ जाइज़ है। दोस्तो ! येह ह़ीला बहाना बिल्कुल बेकार है अगर तुम वहाबी क्या ईसाई, आर्या से भी लिखवा लाओ कि त़लाक़ न हुई। क्या इस से शरई हुक्म बदल जाएगा ? हरगिज़ नहीं, (इस की तह़क़ीक़ कि त़लाक़ें एक होती हैं या नहीं

हमारे फ़तावा में देखो जिस में इस मस्अले की पूरी तह्क़ीक़ कर दी गई है और मुस्लिम की ह़दीष से जो धोका दिया जाता है उस को भी साफ़ कर दिया गया है)

लिहाज़ा मेरा मश्वरा येह है कि अव्वल तो त़लाक़ का नाम ही न लो, येह बहुत बुरी चीज़ है [1] "اَبْغَضُ الْمُبَاحَاتِ الطَّلَاقُ"

अगर ऐसा करना ही हो तो सिर्फ़ एक त़लाक़ दो ताकि अगर बा'द को और दोबारा निकाह़ की गुन्जाइश रहे और हमेशा त़लाक़ नामा मुसलमान वाक़िफ़े कार मुह़र्रिर या किसी आ़लिमे दीन की राय से लिखवाए।

तीसरी फ़स्ल

निकाह़ के बा'द की रस्में

मुरव्वजा रस्में

शादी के बा'द भी मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रस्में क़रीब क़रीब हर जगह मौजूद हैं लेकिन निकाह़ के बा'द की रस्मों में यू.पी. का अ़लाक़ा सब मुल्कों से आगे बढ़ा हुवा है यू.पी. में तीन त़रह़ की रस्में जारी हैं : एक चौथी, दूसरी कंगना और सहरा खोलने की रस्म, तीसरी खीर की रस्म, चौथी को येह होता है कि रुख़्सत के दूसरे दिन दुल्हन के मैके से तीस या चालीस आदमी या कुछ कमो बेश चौथी लुटाने के लिये दूल्हा के घर जाते हैं, जहां उन की पुर तकल्लुफ़ दा'वत होती है खाना खा कर मीठे चावलों के थाल में अपनी हैषिय्यत से ज़ियादा रूपिया रखते हैं येह

---

1 .....या'नी जाइज़ चीज़ों में सब से ना पसन्दीदा शै त़लाक़ है

(فتح القدیر ، کتاب الطلاق،ج۳،ص٤٤٤)

रूपिया भी दुल्हन वालों की त़रफ़ से चन्दा हो कर ब त़ौरे न्योता जम्अ़ होता है बा'ज़ बा'ज़ जगह उस वक़्त थाल में सो या दो सो या कुछ ज़ियादा रूपै डाले जाते हैं फिर लड़की को अपने हमराह ले आते हैं चौथे दिन दूल्हा की त़रफ़ से कुछ औ़रतें और कुछ मर्द दुल्हन के मैके जाते हैं अपने साथ सब्ज़ तरकारियां आलू, बैंगन वग़ैरा और कुछ मीठाई जिस में लड्डू ज़रूर हों ले जाते हैं। वहां उन की तवाज़ोअ़ ख़ातिर के लिये पतली पतली खीर तय्यार होती है। एक टुटी कुर्सी पर खीर की थाली भरी हुई रख कर ऊपर से सफ़ेद चादर डाल देते हैं दूल्हा को बैठने के लिये वोह कुर्सी पेश की जाती है दूल्हा मियां बे ख़बर उस पर बैठता है, बैठते ही तमाम कपड़े खीर में ख़राब हो जाते हैं और हंसी उड़ती है फिर दुल्हन वाले दूल्हा वालों के कपड़े और मुंह ख़ूब अच्छी त़रह़ ख़राब करने की कोशिश करते हैं वोह अपना बचाव करते हैं इस में ख़ूब दिल्लगी रहती है जब इस शैत़ानी रस्म से नजात हुई तब खाना खिलाया।

बा'द नमाज़े ज़ोहर एक चौकी पर दुल्हन दूल्हा आमने सामने बैठे वोह लड्डू जो दूल्हा की त़रफ़ से लाए गए हैं आस पास फिकवाए गए या'नी दूल्हा ने दुल्हन की त़रफ़ फेंका और दुल्हन ने दूल्हा की त़रफ़ जब सात चक्कर पूरे हो गए तब वोह तूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा होता है कि शैत़ान भी दुम दबा कर भाग जाए। वोह तरकारियां और आलू, शल्ग़म, बैगन वग़ैरा जो दूल्हा वाले साथ लाए थे अब उन के दो ह़िस्से किये जाते हैं एक ह़िस्सा दूल्हा वालों का और दूसरा ह़िस्सा दुल्हन वालों का। फिर एक दूसरे को इस से मार लगाते हैं इस के बा'द जो और तरक़्क़ी होती है वोह बयान के क़ाबिल नहीं, येह तो चौथी हुई अब आगे चलिये जब दुल्हन को वापस सुसराल ले गए तब कंगना खोलने की रस्म अदा हुई वोह इस त़रह़ कि दुल्हन से कंगना खुलवाया गया उधर से

दुल्हा ने उस की गांठें सख़्त कर रखी है इधर से दुल्हन की पूरी कोशिश है कि इस को खोल डाले जब येह ब मुश्किल तमाम खोला जा चुका तब आपस में एक दूसरे पर पानी फेंका और इस में बड़ा हर [1] वोह माना जाता है जो किसी शरीफ़ आदमी को धोके से बुला कर उस को भिगो दे और जब वोह ख़फ़ा हो तो उधर से ख़ुशी में तालियां बजें। सहरा खोलने की येह रस्म है कि जब सहरा खोला गया तो किसी क़रीब के दरिया में और अगर दरिया मौजूद न हो तो किसी तालाब में और अगर तालाब भी न हो तो किसी ग़ैर आबाद कूंएं में डाल दिया जाए मगर येह सहरा अगर डालने के लिये औ़रतें जाएं तो गाती बजाती हुई और वापस हों तो गाती बजाती हुई और अगर मर्द जा कर डालें तो पढ़े लिखे तो वैसे ही फेंक आते हैं और जाहिल लोग दरिया को सलाम कर के उस में डालते हैं फिर कुछ मीठे चावल पका कर ख़्वाजा ख़िज़्र की फ़ातेहा नियाज़ होती है, लीजिये जनाब आज इन रस्मों ने पीछा छोड़ा।

इन रस्मों की ख़राबियां

येह रस्में सारी हिन्दवानी हैं जिस में औ़रतों मर्दों का इख़्तिलात़ या'नी मैलजोल है येह भी ह़राम और खीर और तरकारियों की बरबादी है येह भी ह़राम है, मुसलमानों के कपड़े ख़राब कर के उन को तक्लीफ़ पहुंचानी येह भी ह़राम फिर चौथी में एक दूसरे की मरम्मत करना ईज़ा देना येह भी ह़राम कि इस में दिल शिकनी भी है और सर शिकनी भी, दरिया को और पानी को सलाम करना येह भी ह़राम बल्कि मुश्रिकों का काम है गाना बजाना येह भी ह़राम है।

इन की इस्लाह़

इन रस्मों की इस्लाह़ येह है कि अज़ अव्वल ता आख़िर येह

1.... या'नी बड़ा माहिर।

तमाम रस्में बिल्कुल बन्द कर दी जाएं, बा'ज़ जगह येह भी रवाज है कि दुल्हन सुसराल में काम नहीं करती और जब पहला काम करती है तो उस से पूरियां पकवा कर तक़्सीम कराई जाती हैं येह भी बिल्कुल फ़ुज़ूल है इस से कोई फ़ाइदा नहीं अगर उस वक़्त ब-रकत के लिये उस के हाथ का पहला खाना पकवा कर हुज़ूरे ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ की फ़ातेहा दी जाए ता कि ब-रकत रहे तो बहुत ही अच्छा है।

दूसरी हिदायात

सुसराल की लड़ाइयां चन्द वजह से होती हैं कभी तो दुल्हन तेज़ ज़बान और गुस्ताख़ होती है सास नन्द को सख़्त जवाब देती है इस लिये लड़ाई होती है, कभी शौहर की चीज़ों को हक़ीर जानती है और वहां अपने मैके की बड़ाई करती रहती है कि मेरे बाप के घर येह था वोह था, कभी सास नन्दें दुल्हन के मां बाप को उस की मौजूदगी में बुरा भला कहती हैं, जिस को वोह बरदाश्त नहीं कर सकती, कभी सुसराल के काम से जी चुराती है क्यूंकि मैके में काम करने की आदत न थी कभी मैके भेजने पर झगड़ा होता है कि दुल्हन कहती है कि मैं मैके जाऊंगी सुसराल वाले नहीं भेजते फिर दुल्हन अपनी तक्लीफ़ें अपने मैके वालों से जा कर कहती है तो वोह इस की त़रफ़ से लड़ाई करते हैं येह ऐसी आग लगती है कि बुझाए नहीं बुझती कभी सास नन्दें बिला वजह दुल्हन पर बद गुमानी करती हैं कि दुल्हन हमारी चीज़ों की चोरी कर के मैके पहुंचाती है।

येह वोह शिकायात हैं जिन की वजह से हमारे यहां ख़ाना जंगियां रहती हैं और इन शिकायात की जड़ येह है कि एक दूसरे के हुक़ूक़ से बे ख़बर हैं। दुल्हन को नहीं मा'लूम कि मुझ पर शौहर और सास के क्या हक़ हैं और सास और शौहर को नहीं ख़बर कि हम पर दुल्हन के क्या हक़ हैं? सासों और शौहरों को येह ख़याल चाहिये कि नई

दुल्हन एक क़िस्म की चिड़िया है जो अभी अभी क़फ़्स (पिन्जरे) में फंसी है तो फड़फड़ाती भी है और भागने की भी कोशिश करती है मगर शिकारी और पालने वाला उस को खाने पानी का लालच दे कर प्यार कर के बेहलाता और उस के दिल लगाने की कोशिश करता है फिर आहिस्ता आहिस्ता उस का दिल लग जाता है इसी त़रह़ सास, नन्दों और शौहरों को चाहिये कि उस के साथ ऐसा अच्छा बरतावा करें कि वोह जल्द उन से हिल मिल जाए। दोस्तो ! चार दिन तो क़ब्र के भी भारी होते हैं और ख़याल रखो कि लड़की सब कुछ सुन सकती है मगर अपने मां बाप बहन भाई की बुराई नहीं सुन सकती, उस के सामने उस के मां बाप को हरगिज़ बुरा न कहो, देखो अबू जहल का फ़रज़न्द इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब ईमान लाए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن को हुक्म दिया कि इकरमा के सामने कोई भी उन के बाप अबू जहल को बुरा न कहे। (مدارج النبوۃ)[1]

येह क्यूं था सिर्फ़ इस लिये कि हर शख़्स की फ़ित़री आ़दत है कि अपने मां बाप की बुराई न सुन सके, अगर लड़की को किसी कामकाज में महारत न हो तो आहिस्तगी से सिखा लें ग़रज़ कि उस के साथ वोह सुलूक करें जो अपनी औलाद से करते हैं या अपनी बेटी के लिये हम ख़ुद चाहते हैं वोह भी तो किसी की बच्ची है जो चीज़ अपनी बच्ची के लिये गवारा न करो वोह दूसरे की बच्ची से भी गवारा न करो और किसी पर बिला वजह बद गुमानी करना ह़राम है। इस बद गुमानी ने सद हा घरों को तबाह कर डाला, दुल्हनों को चाहिये कि इस का ख़याल रखें कि ज़बाने शीरीं से मुल्क गीरी होती है। नर्म ज़बान से इन्सान जानवरों को क़ब्ज़े में कर लेता है येह सास, नन्दें तो फिर इन्सान

---

1 ......مدارج النبوت،قسم سوم،وصل:عزیمتِ سفربسوئے مکہ،ذکرعکرمہ بن ابی جھل،ج۲،ص۲۹۸

हैं, ख़याल रखो कि क़ुदरत ने पकड़ने के लिये दो हाथ, चलने के लिये दो पाउं, देखने के लिये दो आंखें और सुनने के लिये दो कान दिये मगर बोलने के लिये ज़बान सिर्फ़ एक ही दी जिस का मक़्सद सिर्फ़ येह है कि बोलो कम मगर काम ज़ियादा करो, अगर तुम अपने मां बाप की बड़ाई सब को जतलाती फिरो तो बेकार है लुत्फ़ तो जब है कि तुम्हारी रफ़्तार गुफ़्तार, ख़ुश ख़ल्क़ी, काम धन्दा, अच्छे अख़्लाक़ ऐसे हों कि सास नन्द और शौहर या कि हर देखने वाला तुम को देख कर तुम्हारे मां बाप की ता'रीफ़ करें कि देखो तो लड़की को कैसी उ़म्दा ता'लीम तरबिय्यत दी। सुसराल में कैसी ही लड़ाई हो जावे मां बाप को हरगिज़ इस की ख़बर न करो, अगर कोई बात तुम्हारी मरज़ी के ख़िलाफ़ भी हो जाए तो सब्र से काम लो, कुछ दिनों में येह सास, सुसर, नन्दें और शौहर सब तुम्हारी मरज़ी पर चलेंगे। हम ने वोह लाइक़ शरीफ़ लड़कियां भी देखी हैं जिन्हों ने सुसराल में पहले कुछ दुश्वारी उठाई फिर अपने अख़्लाक़ से सुसराल वालों को ऐसा गिरवीदा बना लिया कि उन्हों ने सारे के सारे इख़्तियार दुल्हन को दे दिये और कहने लगे कि बेटी घरबार तू जाने, हम को तो दो वक़्त जो तेरा जी चाहे पका कर दे दिया करो और ख़याल रहे कि तुम्हारे शौहर की रिज़ा में **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी है

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अगर ख़ुदा के सिवा किसी को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शौहरों को सज्दा करें। [1]

और ऐ शौहरो ! तुम याद रखो कि दुन्या में इन्सान के चार बाप होते हैं एक तो नस्बी बाप, दूसरे अपना सुसर, तीसरे अपना उस्ताद, चौथे

---

1 ......سنن ابن ماجه، کتاب النکاح ، باب حق الزوج علی المراۃ ،الحدیث:۱۸۵۲،ج۲، ص ۴۱۱

अपना पीर। अगर तुम ने अपने सुसर को बुरा कहा तो समझ लो कि अपने बाप को बुरा कहा, हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया है : "बहुत काम्याब शख़्स वोह है जिस की बीवी बच्चे उस से राज़ी हों।"

ख़याल रखो कि तुम्हारी बीवी ने सिर्फ़ तुम्हारी वजह से अपने सारे मैके को छोड़ा बल्कि बा'ज़ सूरतों में देस छोड़ कर तुम्हारे साथ परदेसी बनी अगर तुम भी उस को आंखें दिखाओ तो वोह किस की हो कर रहे तुम्हारे ज़िम्मे मां बाप, भाई बहन, बीवी बच्चे सब के हक़ हैं किसी के हक़ के अदा करने में ग़फ़्लत न करो और कोशिश करो कि दुन्या से बन्दों के हक़ का बोझ अपने पर न ले जाओ, ख़ुदा के तो हम सब गुनहगार हैं मगर मख़्लूक़ के गुनहगार न बनें, हक़ तआ़ला मेरे इन टूटे फूटे लफ़्ज़ों में तासीर दे और मुसलमानों के घरों में इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा वे और जो कोई इस रिसाले से फ़ाइदा उठाए वोह मुझ फ़क़ीर के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत और हुस्ने ख़ातिमा करे।

दो बातें और भी याद रखो ! एक तो येह कि जैसा तुम अपने मां बाप से सुलूक करोगे वैसा ही तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ सुलूक करेगी, जैसा कि तुम दूसरे की औलाद के साथ सुलूक करोगे वैसा ही दूसरे तुम्हारी औलाद से सुलूक करेंगे या'नी अगर तुम अपने सास सुसर को गलियां दोगे तुम्हारे दामाद तुम को देंगे।

दूसरे येह कि ह़दीष शरीफ़ में है कि "क़राबतदारों से सुलूक करने से उ़म्र और माल बढ़ते हैं।" (1) मुसलमानों को चाहिये कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगिये पाक मा'लूम करने के लिये हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सवानेहे उ़म्रियां पढ़ें, जिन से पता लगे कि अहले क़राबत के साथ कैसा बरतावा करना चाहिये।

---

(1)......سنن الترمذی، کتاب البر و الصلة،باب ماجاء فی تعلیم النسب،الحدیث:۱۹۸٦،ج۳،ص ۳۹٤

पांचवा बाब

मुहर्रम, शबे बराअत, ईद बक़र ईद की रस्में

मुरुव्वजा रस्में

हमारे मुल्क में इन मुबारक महीनों में ह़स्बे ज़ैल रस्में होती हैं मुह़र्रम के पहले दस दिन और ख़ास कर दस्वीं मुह़र्रम या'नी आ़शूरा का दिन खेलकूद, तमाशा और मेलों का ज़माना समझा गया है। काठियावाड़ में इस ज़माने में ता'ज़ियादारी के साथ कुत्ते, गधे, बन्दर, की सी सूरतें बना कर मुसलमान ता'ज़ियों के आगे कूदते हुए निकलते हैं और सबीलों की ख़ूब ज़ैबाइश करते हैं और शराबें पी पी कर चौकारों में खड़े हो कर मातम के बहाने से कूदते हैं और यू.पी. में मुसलमान इन दस दिनों में बराबर राफ़िज़ियों की मजलिसों में मरसिये सुनने और मिठाई लेने पहुंच जाते हैं फिर आठवीं तारीख़ को अ़लम और नवीं तारीख़ को ता'ज़ियों के गश्त और दसवीं को ता'ज़ियों का जुलूस ख़ुद भी निकालते हैं और राफ़िज़ियों के ता'ज़ियों के जुलूस में भी शिर्कत करते हैं बा'ज़ जाहिल लोग मातम भी करते हुए जाते हैं फिर बारहवीं मुह़र्रम को ता'ज़ियों का तीजा और 20 सफ़र को ता'ज़ियों का चालीसवां निकाला जाता है जिस में चन्द त़रह़ के जुलूस निकलते हैं, सफ़र के आख़िरी बुध को मुसलमानों के घर पुरियां पकाई जाती हैं ख़ुशी मनाई जाती है और काठियावाड़ में लोग अ़स्र के बा'द षवाब की निय्यत से जंगल में तफ़रीह़ करने जाते हैं और यू.पी. में बा'ज़ जगह इस दिन पुरानी मिट्टी के बरतन फोड़ कर नए ख़रीदते हैं येह तमाम बातें इस लिये होती हैं कि मुसलमानों में मश्हूर येह

है कि आखिरी चहारशम्बा को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने गुस्ले सिह्हत फ़रमाया और तफ़्रीह के लिये मदीनए मुनव्वरा से बाहर तशरीफ़ ले गए थे।

रबीउ़ल अव्वल में आ़म मुसलमान मह़फ़ीले मीलाद शरीफ़ की मजलिसें करते हैं जिन में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदाइशे पाक का ज़िक्र और क़ियाम, ना'त ख़्वानी दुरूद शरीफ़ की कषरत होती है और बारहवीं रबीउ़ल अव्वल को जुलूस निकाला जाता है और रबीउ़ल आख़िर शरीफ़ में ग्यारहवीं शरीफ़ हुज़ूरे ग़ौषे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मजलिसें करते हैं जिस में ह़ज़रते ग़ौषे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ह़ालात पढ़ कर सामेईन को सुनाते हैं और बा'दे फ़ातेह़ा तक़्सीमे शिरीनी करते हैं या मुसलमानों को खाना खिलाते हैं मगर इस ज़माने के मुस्लिम नुमा मुर्तदीन या'नी देवबन्दी वहाबी इन पाक मजलिसों को बिद्अ़त कह कर रोकते हैं चुनान्चे पंजाब के अकषर अ़लाक़े में येह रस्में बिल्कुल बन्द कर दी गई हैं।

रजब में 27 तारीख़ को मुसलमान ईदे मे'राजुन्नबी की तक़रीब में जल्से करते हैं जिस को रजबी शरीफ़ कहते हैं। इसे कुफ़्फ़ार रोकते हैं, शबे बराअत या'नी पन्दरहवीं शा'बान को मुसलमान बच्चे इस क़दर आतशबाज़ी चलाते हैं कि रास्ता चलना मुश्किल होता है और बहुत जगह इस से आग लग जाती है।

र-मज़ान शरीफ़ में बा'ज़ बे ग़ैरत मुसलमान रोज़ादारों के सामने और सरे आ़म बाज़ारों में खाते पीते हैं बल्कि रोटी की दुकानों में भी पर्दा डाल कर खाना खाते हैं।

ईद और बक़र ईद के दिन ईद की नमाज़ पढ़ कर सारा दिन खेलकूद में गुज़ारते हैं और शहरों में इन दिनों में ईद, बक़र ईद की ख़ुशी में सीनेमा के चार चार शो होते हैं सीनेमा के हॉल मुसलमानों से खचाखच भरे रहते हैं और जिन की नई शादी हो वोह पहली ईद ज़रूर सुसराल में करते हैं, जिन लड़कों की मंगनी हो गई है उन के घर से दुल्हन के घर जोड़ा जाना ज़रूरी है।

इन रस्मों की ख़राबियां

मुह़र्रम का महीना निहायत मुबारक महीना है, ख़ास कर आशूरा का दिन बहुत ही मुबारक है कि दस्वीं मुह़र्रम जुमुआ के दिन ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام किश्ती से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और इसी तारीख़ और इसी दिन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔन से नजात पाई और फ़िरऔन ग़रक़ हुवा, इसी दिन और इसी तारीख़ में सय्यिदुश्शो–हदा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने करबला के मैदान में शहादत पाई और इसी जुमुआ का दिन और ग़ालिबन इसी दस्वीं मुह़र्रम को क़ियामत आएगी। ग़रज़ कि जुमुआ का दिन और दस्वीं मुह़र्रम बहुत मुबारक दिन है इस्लाम में सब से पहले सिर्फ़ आशूरा का रोज़ा फ़र्ज़ हुवा फिर र–मज़ान शरीफ़ के रोज़ों से इस रोज़े की फ़र्ज़िय्यत तो मन्सूख़ हो गई मगर इस दिन का रोज़ा अब भी सुन्नत है। लिहाज़ा इन दिनों में जिस त़रह़ नेक काम करने का षवाब ज़ियादा है इसी त़रह़ गुनाह करने का अ़ज़ाब भी ज़ियादा। ता'ज़िया दारी और अ़लम निकालना, कूदना, नाचना येह वोह काम हैं जो यज़ीदी लोगों ने किये थे कि इमामे हुसैन व दीगर शो–हदाए करबला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن के सर नेज़ों पर रख कर उन के आगे कूदते नाचते ख़ुशिया मनाते हुए करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से दिमिश्क़ यज़ीदे पलीद के पास ले गए। बाक़ी अहले बैत ने न कभी ता'ज़िया दारी की और न अ़लम निकाले,

न सीने कूटे न मातम किये। लिहाज़ा ऐ मुसलमानो : इन मुबारक दिनों में येह काम हरगिज़ न करो वरना सख़्त गुनहगार होंगे। ख़ुद भी इन जुलूसों और मातम में शरीक न हो और अपने बच्चों, अपनी बीवियों, दोस्तों को भी रोको, राफ़्ज़ियों की मजलिस में हरगिज़ शिर्कत न करो। बल्कि ख़ुद अपनी सुन्नियों की मजलिसें करो जिस में शहादत के सच्चे वाक़ेआत बयान हों। आख़िरी चहार शम्बा माहे सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ जो रिवायत मशहूर है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस तारीख़ ग़ुस्ले सिह़्ह़त फ़रमाया, वोह मह़ज़ ग़लत़ है 27 सफ़र को मरज़ शरीफ़ या'नी दर्दे सर और बुख़ार शुरूअ़ हुवा और बारहवीं रबीउ़ल अव्वल दो शम्बा के दिन वफ़ात हो गई। दरमियान में सिह़्ह़त न हुई, फ़ातेह़ा और क़ुरआन ख़्वानी जब भी करो ह़रज नहीं मगर घड़े, बरतन फोड़ना माल को बरबाद करना है जो ह़राम है। रबीउ़ल अव्वल में मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ और रबीउ़ष्षानी में मजलिसे ग्यारहवीं शरीफ़ बहुत बा ब-रकत मजलीसें हैं इन को बन्द करना बहुत नादानी है तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ की ब-रकत साल भर तक घर में रहती है।[1]

इस के लिये हमारी किताब जा अल ह़क़ देखो। इन मजलिसों की वजह से मुसलमानों को नसीह़त करने का मौक़अ़ मिल जाता है और मुसलमानों में हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पैदा होती है जो ईमान की जड़ है।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि अबू लहब ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पैदा होने की ख़ुशी में अपनी लौंडी सुवैबा को आज़ाद किया था, उस के मरने के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देखा पूछा : तेरा ह़ाल क्या

---

1 ......تفسیر روح البیان، الفتح، تحت الآیۃ:۲۹، ج۹، ص۵۷

है ? उस ने कहा : ह़ाल तो बहुत ख़राब है मगर सोमवार (पीर) के दिन अ़ज़ाब में कमी हो जाती है क्यूंकि मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पैदा होने की ख़ुशी की थी।[1]

जब काफ़िर अबू लहब को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैदाइश की ख़ुशी का कुछ न कुछ फ़ाइदा मिल गया तो मुसलमान अगर इन की ख़ुशी मनाए तो ज़रूर षवाब पाएगा लेकिन येह ख़याल रहे कि जवान औ़रतों का इस त़रह़ ना'तें पढ़ना कि उन की आवाज़ ग़ैर मर्दों को पहुंचे ह़राम है क्यूंकि औ़रत की आवाज़ का ग़ैर मर्दों से पर्दा है, इसी त़रह़ रबीउ़ल अव्वल में जुलूस निकालना बहुत मुबारक काम है जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में हिजरत कर के तशरीफ़ लाए तो मदीनए पाक के जवान व बच्चे वहां के बाज़ारों कूचों और गलियों में " **या रसूलल्लाह !** " के ना'रे लगाते फिरते थे और जुलूस निकाले गए थे। (مسلم)[2]

और इस जुलूस के ज़रीए़ से वोह कुफ़्फ़ार और दूसरी क़ौमें भी हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक ह़ालात सुन लेंगी जो इस्लामी जल्सों में नहीं आते उन के दिलों में इस्लाम की हैबत और बानिये इस्लाम عَلَیْہِ السَّلَام की इ़ज़्ज़त पैदा होगी मगर जुलूस के आगे बाजा वग़ैरा का होना या साथ में औ़रतों का जाना ह़राम है।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب وامھاتکم...الخ، الحدیث: ۵۱۰۱، ج۳، ص۴۳۲ وعمدة القاری شرح صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب وامھاتکم...الخ، تحت الحدیث: ۵۱۰۱، ج۱۴، ص۴۵

2 ......صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب فی حدیث الھجرة...الخ، الحدیث: ۲۰۰۹، ص۱۶۰۶

रजब शरीफ़

इस महीने की 22 तारीख़ को हिन्द व पाक में कुंडे होते हैं या'नी नए कुंडे मंगाए जाते हैं और सवा पाऊ मैदा, सवा पाऊ शक्कर, सवा पाऊ घी की पूरियां बना कर ह़ज़रते इमामे जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की फ़ातेह़ा करते हैं, इस रस्म में सिर्फ़ दो ख़राबियां पैदा कर दी गई हैं एक तो येह कि फ़ातेह़ा दिलाने वालों का अ़क़ीदा येह हो गया है अगर फ़ातेह़ा के अव्वल लकड़ी वाले का क़िस्सा न पढ़ा जाए तो फ़ातेह़ा न होगी और येह पूरियां घर से बाहिर नहीं जा सकतीं और बिग़ैर नए कुंडे के येह फ़ातेह़ा नहीं हो सकती, येह सारे ख़याल ग़लत़ हैं फ़ातेह़ा हर कुंडे पर और हर बरतन में हो जाएगी, अगर सिर्फ़ ज़ियादा सफ़ाई के लिए नए कुंडे मंगा लें तो ह़रज नहीं, दूसरी फ़ातेह़ा के खानों की त़रह़ इस को भी बाहर भेजा जा सकता है, रजबी शरीफ़ भी ह़क़ीक़त में हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मे'राज की ख़ुशी है इस में कोई ह़रज नहीं मगर इस में भी जवान अ़ौरतों को ना'तें बुलन्द आवाज़ से पढ़ना कि जिस से बाहिर आवाज़ पहुंचे ह़राम है।

शबे बराअत

शबे बराअत की रात बहुत मुबारक है इस रात में साल भर में होने वाले सारे इन्तिज़ामात फ़िरिश्तों के सिपुर्द कर दिये जाते हैं कि इस साल में फुलां फुलां की मौत है, फुलां फुलां जगह इतना पानी बरसाया जावेगा, फुलां को मालदार और फुलां को ग़रीब बनाया जाएगा, और जो इस रात में इ़बादत करते हैं उन को अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारा या'नी रिहाई मिलती है, इस लिये इस रात का नाम शबे बराअत है। अ़-रबी में बराअत के मा'ना रिहाई और छुटकारा हैं। या'नी येह रात रिहाई की रात है क़ुरआने करीम फ़रमाता है :

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ (1)

इस रात को ज़मज़म के कूंएं में पानी बढ़ाया जाता है इस रात हक़ तआ़ला की रह़मतें बहुत ज़ियादा उतरती हैं।

(تفسیر روح البیان، سورہ دخان)(2)

इस रात को गुनाह में गुज़ारना बड़ी मह़रूमी की बात है, आतश बाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ मशहूर येह है कि येह नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फैंके। काठीयावाड़ में हिन्दू लोग होली और दीवाली के मौक़अ़ पर आतश बाज़ी चलाते हैं। हिन्द व पाक में येह रस्म मुसलमानों ने हिन्दूओं से सीखी, मगर अफ़्सोस कि हिन्दू तो इस को छोड़ चुके हैं मगर मुसलमानों का लाखों रूपया सालाना इस रस्म में बरबाद हो जाता है और हर साल ख़बरें आती हैं कि फुलां जगह से इतने घर आतश बाज़ी से जल गए और इतने आदमी जल कर मर गए। इस में जान का ख़त़रा और माल की बरबादी, मकानों में आग लगने का अन्देशा है अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर ख़ुदा तआ़ला की नाफ़रमानी का वबाल सर पर डालना है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस बेहूदा और ह़राम काम से बचो। अपने बच्चों और क़राबत दारों को रोको जहां आवारा बच्चे येह खेल खेल रहे हों वहां तमाशा देखने के लिये भी न जाओ। आतशबाज़ी बनाना इस का बेचना, इस का ख़रीदना और ख़रीदवाना, इस का चलाना और चलवाना सब ह़राम है।

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम।
(پ۲۵،الدخان:۴)

2.....تفسیر روح البیان،الدخان،تحت الآیة:۴،ج۸،ص۴۰۴

र-मज़ान शरीफ़ में दिन को सब के सामने खाना, पीना सख़्त गुनाह और बे ह़याई है पहले ज़माने में हिन्दू और दूसरे कुफ़्फ़ार भी र-मज़ान में बाज़ारों में खाने पीने से बचते थे कि येह मुसलमानों के रोज़े का ज़माना है मगर जब मुसलमानों ने ख़ुद ही इस महीने का अदब छोड़ दिया तो दूसरों की शिकायत क्या है।

ईद, बक़्र ईद भी इबादत के दिन हैं इन में भी मुसलमान गुनाह और बे ह़याई करते हैं अगर मुसलमान क़ौम हि़साब लगाए तो हिन्द व पाक में हज़ारहा रुपिया रोज़ाना सिनेमाओं, थियेटरों और दूसरी अय्याशी में ख़र्च हो रहा है। अगर क़ौम का येह रुपिया बच जाए और किसी क़ौमी काम में ख़र्च हो तो क़ौम के ग़रीब लोग पल जाएं और मुसलमानों के दिन बदल जाएं ग़रज़ कि इन दिनों में येह काम सख़्त गुनाह हैं।

इन दिनों में इस्लामी रस्में

इन महीनों में क्या काम करने चाहिएं येह तो हम اِنْ شَآءَاللّٰہ इस किताब के आख़िर में अ़र्ज़ करेंगे, कुछ ज़रूरी बातें यहां बताते हैं मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ को ह़लीम (खिचड़ा) पकाना बहुत बेहतर है क्यूं कि जब ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام इस दिन अपनी किश्ती से ज़मीन पर आए तो कोई ग़ल्ला न रहा था किश्ती वालों के पास जो कुछ ग़ल्ले के दाने थे वोह सब मिला कर पकाए गए।

(تفسیر روح البیان،پارہ بارھواں،آیت قصہ نوح)[1]

और ह़दीष शरीफ़ में आया कि जो कोई आ़शूरा के दिन अपने घर खाने में वुस्अ़त करे या'नी ख़ूब पकाए और खिलाए तो साल भर

---

1 ......تفسیرروح البیان، ھود، تحت الآیۃ:۳۸، ج٤، ص١٤٢

उस के घर में ब-रकत रहेगी। (شامی)[1]

और खिचड़े (ह़लीम) में हर खाना पड़ता है लिहाज़ा उम्मीद है कि हर खाने में साल भर तक ब-रकत रहेगी, स-दक़ा व ख़ैरात करे, अपने घर और मह़ल्ले में ज़िक्रे शहादते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मजलिस करे जिस में अगर रोना आए तो आंसूओं से रोए कपड़े फाड़ना मातम करना, मुंह पीटना, सोग करना ह़राम है राफ़िज़ियों की मजलिसों में हरगिज़ न जाओ कि वहां अकषर तबर्रा होता है या'नी सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن को गालियां देते हैं। रबीउ़ल अव्वल में महीने भर तक जब चाहो मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ करो मगर इस के पढ़ने वाले या तो मर्द हों या छोटी लड़कियां और अगर जवान लड़कियां और औ़रतें पढ़ें तो इतनी नीची आवाज़ से रिवायतें पढ़ें कि उन की अवाज़ बाहर न जाए और मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ में रोज़े नमाज़ और पर्दे वग़ैरा के अह़काम भी सुनाए जाएं ताकि ना'त शरीफ़ के साथ अह़कामे इस्लाम की भी तब्लीग़ हो और जिस क़दर खुशी मनाओ, इ़त्र मलो, गुलाब छिड़को, हार फूल डालो बहुत षवाब है, हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पैदाइश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर खुशी मनाना कुरआने करीम का हुक्म है, कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है : قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا (2)

---

1 ......ردالمحتار علی الدرالمختار، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم ومالا یفسد، مطلب فی حدیث التوسعة علی العیال...الخ، ج۳، ص۴۵۷ و کشف الخفاء، حرف المیم، الحدیث:۲۶۴۱، ج۲، ص۲۵۳

2 .... तर-ज-मए कन्जु़ल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि खुशी करें। (پ۱۱، یونس:۵۸)

बल्कि हर ख़ुशी व ग़म के मौक़अ़ पर मीलाद शरीफ़ करो, शादी बियाह, मौत बीमारी हर वक़्त उन के गीत गाओ क्यूं कि

उन के निषार कोई कैसे ही रन्ज में हो

जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

रजब के महीने में 22 तारीख़ को कूंडों की रस्म बहुत अच्छी और ब-रकत वाली है मगर इस में से येह क़ैद निकाल दो कि फ़ातिहा की चीज़ बाहर न जाए और लकड़ी वाले का क़िस्सा ज़रूर पढ़ा जाए।

शबे बराअत में रात भर जागो, क़ब्रों की ज़ियारत करो, रात भर नफ़्ल पढ़ो, हल्वे पर फ़ातिहा पढ़ कर ख़ैरात करो और बाक़ी इस के अह़काम आख़िर में लिखे जाएंगे।

र-मज़ान शरीफ़ में जो कोई किसी उ़ज़्र की वजह से रोज़ा न रखे वोह भी किसी के सामने न खाए पिये। चार वजह से रोज़ा मुआ़फ़ है : औ़रत को हैज़ या निफ़ास आना, ऐसी बीमारी जिस में रोज़ा नुक़्सान करे और सफ़र। मगर इन सब सूरतों में क़ज़ा करनी पड़ेगी।

सत्ताईसवीं र-मज़ान ग़ालिबन शबे क़द्र है इस रात को हो सके तो सारी रात जाग कर इ़बादत करो, वरना सहरी खा कर फिर न सोओ सुब्ह़ तक क़ुरआने मजीद और नफ़्ल पढ़ो, र-मज़ान शरीफ़ में हर नेक काम का षवाब सत्तर गुना मिलता है इस लिये पूरा माहे र-मज़ान क़ुरआने मजीद की तिलावत और नवाफ़िल पढ़ने और स-दक़ा व ख़ैरात में गुज़ार दो।

ईद के दिन

अच्छे कपड़े पहनना, ग़ुस्ल करना, ख़ुश्बू मलना सुन्नत है,

एक दूसरे को मुबारक बाद दो, अगर तुम्हारे पास 56 रूपै नक़्द [1] या इस क़ीमत का कोई तिजारती माल या साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोना है और क़र्ज़ वग़ैरा नहीं है तो अपनी तरफ़ से अपने छोटे बच्चों की तरफ़ से फ़ित्रा अदा करो। फ़ित्रा ख़्वाह र–मज़ान में दे दो या ईद की नमाज़ से पहले ईद के दिन दे दो। फ़ित्रा एक शख़्स की तरफ़ से 175 रुपिया अठन्नी भर [2] गेहूं या इस से दो गुना जव या इस की क़ीमत का बाजरा, चावल वग़ैरा है। फिर कुछ खुरमे खा कर ईदगाह को जाओ। रास्ते में आहिस्ता आहिस्ता तक्बीर कहते जाओ एक रास्ते से, वापस आओ दूसरे रास्ते से।

बक़र ईद के दिन येह काम करो

गुस्ल करना, कपड़े बदलना, खुश्बू लगाना मगर इस दिन बिग़ैर कुछ खाए ईदगाह को जाओ। रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहते हुए जाओ और अगर तुम्हारे पास इतना माल है जो फ़ित्रे के लिये बयान किया गया तो बा'द नमाज़ के अपनी तरफ़ से कुरबानी कर दो। याद रखो कि साल भर में पांच दिन रोज़ा रखना मन्अ़ है : एक ईदुल फ़ित्र का और चार दिन बक़र ईद के या'नी दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं बाक़ी अह़काम के लिये बहारे शरीअ़त देखो, फ़ुज़ूल ख़र्चियों को बन्द करो और इस से जो पैसा बचे उस से अपने क़राबत दारों और मह़ल्ले वालों, यतीम ख़ानों और दीनी मद्रसों की मदद करना चाहिये यक़ीन जानो कि मुसलमान क़ौम की ईद जब ही होगी जब सारी क़ौम खुशहाल, हुनर मन्द और परहेज़ गार हो, अगर तुम ने अपने बच्चों को

---

1 .....नक़्द रक़म या माले तिजारत की मालिय्यत का ए'तबार साढ़े बावत तोले चांदी की क़ीमत से किया जाएगा, उस दौर में साढ़े बावन तोले चांदी की क़ीमत 56 रूपै होगी।

2 ....या'नी दो सैर तीन छटांक आधा तोला या दो किलो और तक़रीबन पचास ग्राम।

ईद के दिन कपड़ों से लाद दिया लेकिन तुम्हारी मुस्लिम क़ौम के ग़रीब बच्चे उस दिन दर ब दर भीक मांगते फिरे तो समझ लो कि येह ईद क़ौम की नहीं। हक़ तआ़ला मुस्लिम क़ौम को सच्ची ईद नसीब फ़रमावे। आमीन

छटा बाब

नया फ़ेशन और पर्दा

नए ता'लीम याफ़्ता लोगों ने मुसलमानों की मौजूदा पस्ती और इन की बीमारियों का इलाज येह सोचा है कि मुसलमान मग़रिबी तहज़ीब में अपने आप को फ़ना कर डालें इस त़रह़ कि मर्द तो दाढ़ियां मुंडवा दें मूंछें लम्बी करें, नीकर (जांघिया) कोट पतलून, हेट इस्ति'माल करें, नमाज़ को ख़ैरबाद कह दें और अपने को ऐसा ज़ाहिर करें कि येह किसी अंग्रेज़ के फ़रज़न्द हैं और औ़रतों को घरों से बाहर निकाले पर्दा तोड़ दे, अपनी बीवियों को साथ ले कर बाज़ारों, कम्पनी, बाग़ों[1] और तफ़रीह़ गाहों में घूमते फिरें, रात को बेगम को ले कर सिनेमा जाएं बल्कि कॉलेज और स्कूलों में लड़के लड़कियां एक साथ बैठ कर ता'लीम ह़ासिल करें बल्कि मर्द व औ़रतें मिल कर टेनिस, हॉकी वग़ैरा खेलें येह भूत इन अ़क्ल मन्दों पर ऐसा सुवार हुवा है कि जो इन को समझाता है उस के येह दुश्मन हैं। उस को मुल्लां या मस्जिद का लोटा या पुरानी टाइप का बुड्ढा कह कर उस का मज़ाक़ उड़ा कर रख देते हैं, अख़्बारों और रिसालों में बराबर पर्दे के ख़िलाफ़ मज़ामीन छप रहे हैं, क़ुरआनी आयतों और अह़ादीषे शरीफ़ा को खींच तान कर पर्दे के ख़िलाफ़ चस्पां किया जा रहा है। मैं तो अब तक न समझ सका कि इन ह़-र-कतों से मुस्लिम क़ौम तरक़्क़ी क्यूं कर सकेगी और जिन साहिबों

1.... सरकारी बाग़ों

ने अपने घरों में पेरिस और लन्दन का नुमूना पैदा किया है उन्हों ने अब तक कितने मुल्क जीते और उन्हों ने मुसलमानों को अपनी ज़ात से क्या फ़ाएदे पहुंचाए। हम इस बाब की दो फ़स्लें करते हैं, पहली फ़स्ल में नए फ़ेशन की ख़राबियां और दूसरी फ़स्ल में पर्दे के फ़ाएदे और बे पर्दगी के नक़्ली और अक़्ली नुक़्सानात बयान करेंगे। हक़ तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से क़बूल फ़रमाए और मुसलमानों को अ़मल की तौफ़ीक़ दे।

पहली फ़स्ल

नए फ़ेशन की ख़राबियां

कु़रआने करीम फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً (1)

ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ।

इन्सान को कु़दरत ने दो क़िस्म के आ'ज़ा दिये हैं एक ज़ाहिरी, दूसरे छुपे हुए।

ज़ाहिरी उ़ज़्व तो सूरत, चेहरा, आंख, नाक, कान वग़ैरा हैं और छुपे हुए उ़ज़्व दिल, दिमाग़, जिगर वग़ैरा। मुसलमान कामिल ईमान वाला जब हो सकता है कि सूरत में भी मुसलमान हो और दिल से भी या'नी इस्लाम का उस पर ऐसा रंग चढ़े कि सूरत और सीरत दोनों को रंग दे, दिल में **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त का जज़्बा मौजें मार रहा हो, उस में ईमान की शम्अ़ जल रही हो और सूरत ऐसी हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द थी या'नी मुसलमान की सी, अगर दिल में ईमान है मगर सूरत भगवान दास की सी तो समझ लो कि इस्लाम में पूरे दाख़िल न हुए सीरत भी अच्छी बनाओ और

1....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! इस्लाम में पूरे दाख़िल हो। (پ۲،البقرة:۲۰۸)

सूरत भी। ग़ौर से सुनो ! हज़रते मुग़ीरा इब्ने शैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कि सहाबिये रसूलुल्लाह हैं, एक बार उन की मूंछें कुछ बढ़ गई थीं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ मुग़ीरा ! तुम्हारी मूंछें बढ़ गईं, काट लो। उन्हों ने ख़याल किया कि घर जा कर कैंची से काट दूंगा। मगर सरकारी फ़रमान हुवा कि हमारी मिस्वाक लो। इस पर बढ़े हुए बाल रख कर छुरी से काट दो।(1) या'नी इतनी भी मोहलत न दी कि घर जा कर कैंची से काटें, "नहीं यहां ही काट दो" जिस से मा'लूम हुवा कि बड़ी मूछें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ना पसन्द थीं। दुन्या में हज़ारों पैग़म्बर तशरीफ़ लाए मगर किसी नबी ने न दाढ़ी मुंडाई और न मूछें रखाईं, लिहाज़ा दाढ़ी फ़ित्रत या'नी सुन्नते अम्बिया है हदीषे पाक में है दाढ़ियां बढ़ाओ और मूंछें पस्त करो और मुश्रिकीन की मुख़ा-लफ़त करो।(2)

इस के इलावा बहुत सी नक़्ली दलीलें दी जा सकती हैं मगर हमारे नए ता'लीम याफ़्ता लोग नक़्ली दलाइल के मुक़ाबले में अ़क़्ली बातों को ज़ियादा मानते हैं गोया गुलाब के फूल के मुक़ाबले में गेंदे के फूल उन को ज़ियादा प्यारे हैं इस लिये अ़क़्ली बातें भी अ़र्ज़ करता हूं सुनो ! इस्लामी शक्ल और इस्लामी लिबास में इतने फ़ाएदे हैं :

﴾1﴿ गवर्नमेन्ट ने हज़ारों महूकमे बना दिये हैं, रेल्वे, डाकख़ाना, पोलीस, फ़ोज और कचहरी वग़ैरा और हर महूकमे के लिये वर्दी अ़लाहिदा अ़लाहिदा मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों आदमियों में किसी महूकमे का आदमी खड़ा हो तो साफ़ पहचान में आ जाता है, अगर कोई सरकारी नोकर अपनी ड्यूटी के वक़्त अपनी वर्दी में न हो तो उस पर

---

1 ......المسند للامام احمد بن حنبل،مسند الكوفيين،حديث المغيرة بن شعبة،الحديث: ١٨٢٦٤،ج٦،ص٣٤٧

2 ......صحيح مسلم،كتاب الطهارة، باب خصال الفطرة،الحديث:٢٥٩،ص١٥٤

जुर्माना होता है अगर बार बार कहने पर न माने तो बरख़ास्त कर दिया जाता है इसी त़रह़ हम भी मह़कमए इस्लाम और सल्त़नते मुस-त़-फ़वी और हुकूमते इलाहिय्यह के नोकर हैं हमारे लिये अ़लाह़िदा शक्ल मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों काफ़िरों के बीच में खड़े हों तो पहचान लिये जाएं कि मुस्त़फ़ा عَلَيۡهِ السَّلَام का ग़ुलाम वोह खड़ा है अगर हम ने अपनी वर्दी छोड़ दी तो हम भी सज़ा के मुस्तह़िक़ होंगे।

﴾2﴿ क़ुदरत ने इन्सान की ज़ाहिरी सूरत और दिल में ऐसा रिश्ता रखा है कि हर एक का दूसरे पर अषर पड़ता है अगर आप का दिल ग़मगीन है तो चेहरे पर उदासी छा जाती है और देखने वाला कह देता है कि ख़ैर तो है चेहरा क्यूं उदास है ? दिल में ख़ुशी है तो चेहरा भी सुर्ख़ व सपेद हो जाता है मा'लूम हुवा कि दिल का अषर चेहरे पर होता है इसी त़रह़ अगर किसी को दिक़ की बीमारी है तो ह़कीम कहते हैं कि उस को अच्छी हवा में रखो अच्छे और साफ़ कपड़े पहनाओ इस को फुलां दवा के पानी से ग़ुस्ल दो, कहिये बीमारी तो दिल में है येह ज़ाहिरी जिस्म का इ़लाज क्यूं हो रहा है इसी लिये कि अगर ज़ाहिर अच्छा होगा तो अन्दर भी अच्छा हो जाएगा।

तन्दुरुस्त आदमी को चाहिये कि रोज़ाना ग़ुस्ल करे। साफ़ कपड़े पहने, साफ़ घर में रहे तो तन्दुरुस्त रहेगा। इसी त़रह़ ग़िज़ा का अषर भी दिल पर पड़ता है। सुवर खाना शरीअ़त ने इसी लिये ह़राम फ़रमा दिया कि इस से बे ग़ैरती पैदा होती है क्यूं कि सुवर बे ग़ैरत जानवर है और सुवर खाने वाली क़ौमें भी बे ग़ैरत होती हैं जिस का तजरिबा हो रहा है। अगर चीते या शेर की चरबी खाई जाए तो दिल में सख़्ती और बर-बरिय्यत पैदा होती है चीते और शेर की खाल पर बैठना इसी लिये मन्अ़ है कि इस से ग़ुरूर पैदा होता है, ग़रज़ कि मानना पड़ेगा

कि गि़ज़ा और लिबास का अषर दिल पर होता है तो अगर काफ़िरों की त़रह़ लिबास पहना गया या कुफ़्फ़ार की सी सूरत बनाई गई तो यक़ीनन दिल में काफ़िरों से मह़ब्बत और मुसलमानों से नफ़रत पैदा हो जावेगी ग़रज़ कि येह बीमारी आख़िर में मोहलिक षाबित होगी इस लिये ह़दीषे पाक में आया है "مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ" जो किसी दूसरी क़ौम से मुशा–बहत पैदा करे वोह उन में से है। (1)

खुलासा येह कि मुसलमानों की सी सूरत बनाओ ताकि मुसलमानों ही की त़रह़ सीरत पैदा हो।

﴾3﴿ हिन्दुस्तान में अकषर हिन्दू मुस्लिम फ़साद होता रहता है और बहुत जगह सुनने में आया कि फ़साद की ह़ालत में बा'ज़ मुसलमान मुसलमानों के हाथों मारे गए क्यूं कि पहचाने न गए कि येह मुसलमान हैं या हिन्दू चुनान्चे तीसरे साल जो बरेली और पीलीभीत में हिन्दू मुस्लिम फ़साद हुवा उस जगह से ख़बरें आई कि बहुत से मुसलमानों को खुद मुसलमानों ने हिन्दू समझ कर फ़ना कर दिया। येह इस नए फ़ेशन की ब–र–कतें हैं। मेरे वलिये ने'मत, मुर्शिदे बरह़क़, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन साह़िब क़िब्ला دام ظلہم ने फ़रमाया कि एक दफ़्आ़ हम रेल में सफ़र कर रहे थे कि एक स्टेशन से एक साह़िब सुवार हुए जो ब ज़ाहिर हिन्दू मा'लूम होते थे गाड़ी में जगह तंग थी एक लाला जी से उन का जगह लेने के लिये झगड़ा हो गया, लाला जी के साथी ज़ियादा थे इस लिये लाला जी ने उन ह़ज़रत को खूब पीटा मुसलमान मुसाफ़िर बीच बचाव में ज़ियादा न पड़े क्यूं कि समझते थे कि हिन्दू आपस में लड़ रहे हैं हमारा ज़ियादा ज़ोर देना ख़िलाफ़े मस्लह़त है। बेचारे शामत के मारे पिट कट कर एक त़रफ़ खड़े हो गए जब अगले स्टेशन पर उतरे तो उन्हों ने कहा : السلام علیکم तब मा'लूम हुवा कि येह

---

(1)......المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمه موسیٰ، الحدیث:۸۳۲۷،ج۶،ص۱۵۱

हज़रत मुसलमान हैं तब हम ने अफ़्सोस किया और उन से अ़र्ज़ किया कि हज़रत ! आप के फ़ेशन ने आप को इस वक़्त पिटवाया।"

मैं जब कभी बाज़ार वग़ैरा जाता हूं तो सोचता हूं कि सलाम किसे करूं मा'लूम नहीं कि हिन्दू कौन है और मुसलमान कौन ? बहुत दफ़्अ़ा किसी को कहा : السلام علیکم उन्हों ने फ़रमाया : बन्दगी साहिब।[1] हम शरमिन्दा हो गए। मेरा इरादा येह होता है कि जहां तक हो सके मुसलमान की दुकान से चीज़ ख़रीदूं मगर दुकानदार की शक्ल ऐसी होती है कि पहचान नहीं होती कि येह कौन हैं अगर दुकान पर कोई बोर्ड लगा है जिस के नाम से मा'लूम हो गया कि येह मुसलमान की दुकान है तो ख़ैर वरना बहुत दुश्वारी होती है ग़रज़ कि मुसलमानों को चाहिये कि शक्ल और लिबास में कुफ़्फ़ार से अ़लाहिदा रहें।

﴾4﴿ किसी को नहीं मा'लूम कि उस की मौत कहां होगी। अगर हम परदेस में मर गए जहां हमारा जान पहचान वाला कोई न हो तो सख़्त मुश्किल दरपेश होगी। लोग परेशान होंगे कि इन को दफ़्न करें या आग में जला दें क्यूं कि सूरत से पहचान न पड़ेगी चुनान्चे चन्द साल पेशतर अ़लीगढ़ के एक साहिब का रेल में इन्तिक़ाल हो गया ख़बर होने पर रात में ना'श उतार ली गई मगर अब येह फ़िक्र हुई कि येह है कौन ? हिन्दू या मुसलमान इस को सिपुर्दे ख़ाक करें या आग में डालें आख़िर उन का ख़तना देखा गया तब पता लगा कि येह मुसलमान हैं। ख़ुलासा येह है कि कुफ़्फ़ार की सी शक्ल और उन का सा लिबास ज़िन्दगी में भी ख़त़रनाक है और मरने के बा'द भी।

﴾5﴿ ज़मीन में जब बीज बोया जाता है तो अव्वलन एक सीधी सी शाख़ ही निकलती है फिर आ कर हर त़रफ़ फैलती है फिर उस में फल निकलते हैं अगर कोई शख़्स उस की चौ त़रफ़ की शाख़ों और पत्तों को

1....या'नी आदाब, तस्लीम।

काट डाले तो फल नहीं खा सकता। इसी त़रह़ कलिमए त़य्यिबा एक बीज है जो मुसलमान के दिल में बोया गया, फिर सूरत और हाथ, पाउं, आंख, नाक की त़रफ़ इस दरख़्त की शाख़ें चलीं कि इस कलिमे ने मुसलमान की आंख को ग़ैर सूरतों से अ़लाह़िदा कर दिया। हाथ को ह़राम चीज़ के छूने से रोक दिया। सूरत पर ईमानी आषार पैदा कर दिये, कान को ग़ीबत सुनने और ज़बान को झूट बोलने, ग़ीबत करने से रोका, जो शख़्स दिल से मुसलमान तो हो मगर काफ़िरों की सी सूरत बनाए अपने हाथ, पाउं, ज़बान, आंख, नाक, कान को ह़राम कामों से न रोके वोह उसी शख़्स की त़रह़ होगा जो आम का बीज बो दे और उस की तमाम शाख़ें वग़ैरा काट डाले जिस त़रह़ वोह बे वुक़ूफ़ फल से मह़रूम रहेगा इसी त़रह़ येह मुसलमान इस्लाम के फलों से मह़रूम रहेगा।

﴾6﴿ पक्का रंग वोह होता है जो किसी पानी या धोबी से न छूटे और कच्चा रंग वोह जो छूट जाए तो ऐ मुसलमानो ! तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रंग में रंगे हुए हो। صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ؗ [1] अगर तुम कुफ़्फ़ार को देख कर अपने रंग को खो बैठे तो जान लो कि तुम्हारा रंग कच्चा था। अगर पक्का रंग होता तो औरों को रंग आते।

---

1 .....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ने अल्लाह की रैनी ली और अल्लाह से बेहतर किस की रैनी (रंग)।
या'नी जिस त़रह़ रंग कपड़े के ज़ाहिर व बात़िन में नुफ़ूज़ करता है इस त़रह़ दीने इलाही के ए'तेक़ादाते ह़क़्क़ा हमारे रग व पे में समा गए हमारा ज़ाहिर व बात़िन क़ल्ब व क़ालिब उस के रंग में रंग गया हमारा रंग ज़ाहिरी रंग नहीं जो कुछ फ़ाएदा न दे बल्कि येह नुफ़ूस को पाक करता है। ज़ाहिर में उस के आषार अवज़ाअ़ व अफ़्आ़ल से नुमूदार होते हैं नसारा जब अपने दीन में किसी को दाख़िल करते या उन के यहां कोई बच्चा पैदा होता तो पानी में ज़र्द रंग डाल कर उस में उस शख़्स या बच्चे को ग़ोत़ा देते और कहते कि अब येह सच्चा नसरानी हुवा इस का इस आयत में रद फ़रमाया कि येह ज़ाहिरी रंग किसी काम का नहीं
(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 1, अल ब-क़रह .138)

मुसलमानों के उज़्र

हम मुसलमानों के वोह उज़्र भी पेश कर दें जो कि वोह बयान करते हैं और जिस से अपनी मजबूरियों का इज़्हार करते हैं।

﴾1﴿ ख़ुदा दिल को देखता है शक्ल को नहीं देखता, दिल साफ़ चाहिये ह़दीष में है[1] "اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى صُوَرِكُمْ بَلْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ" येह उज़्र पढ़े लिखे मुसलमान करते हैं।

जवाब : अच्छा साहिब अगर ज़ाहिर का कोई ए'तिबार नहीं दिल का ए'तिबार है तो आप मेरे घर खाना खाओ या शरबत पियो और मैं निहायत उ़म्दा बादाम का शरबत या उ़म्दा बिरयानी खिलाऊं पिलाऊं मगर गिलास या रिकाबी में ऊपर की त़रफ़ ख़ूब अच्छी त़रह़ गन्दगी पलीदी लगा दूं। आप उस बरतन में खा लोगे ? हरगिज़ नहीं, क्यूं जनाब ! बरतन का क्या ए'तिबार ? इस के अन्दर की चीज़ तो अच्छी है जब तुम बुरे बरतन में अच्छी ग़िज़ा नहीं खाते पीते रब तआ़ला तुम्हारी बुरी सूरतों के साथ अच्छे आ'माल क्यूंकर क़बूल फ़रमावेगा। अगर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ो तो लुत़्फ़ जब है कि मुंह में क़ुरआन शरीफ़ हो और सूरत पर इस का अ़मल हो, अगर तुम्हारे मुंह में क़ुरआन है और सूरत क़ुरआन शरीफ़ के ख़िलाफ़ तो गोया अपने अ़मल से तुम ख़ुद झूटे हो। बादशाह के आने के लिये घर और घर का दरवाज़ा दोनों साफ़ करो क्यूं कि बादशाह दरवाज़े से आवेगा और घर में बैठेगा इसी त़रह़ क़ुरआन शरीफ़ के लिये दिल और सूरत दोनों संभालो, ह़दीष के मा'ना येह हैं कि

1..... तर्जमा : या'नी अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतें नहीं बल्कि तुम्हारे दिल देखता है।

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة...الخ،باب تحريم ظلم المسلم...الخ،الحديث:٢٥٦٤،ص١٣٨٧)

अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि सूरतों के साथ दिल को भी देखता है अगर इस का वोह मत़लब होता जो तुम समझते हो तो फिर सर पर चोटी, कान में जनेवा [1] और पाउं में धोती बांध कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ होना चाहिये था, ह़ालां कि फ़ु-क़हा फ़रमाते हैं कि चोटी रखना, ज़ुन्नार बांधना कुफ़्र है।

﴾2﴿ इस्लामी शक्ल से हमारी इ़ज़्ज़त नहीं होती, जब हम अंग्रेज़ी लिबास में होते हैं तो हमारी इ़ज़्ज़त होती है क्यूं कि वोह तरक़्क़ी याफ़्ता क़ौम का लिबास है।

जवाब : आदमी की इ़ज़्ज़त लिबास से नहीं बल्कि लिबास की इ़ज़्ज़त आदमी से है अगर तुम्हारे अन्दर कोई जौहर है या अगर तुम इ़ज़्ज़त और तरक़्क़ी वाली क़ौम के फ़र्द हो तो तुम्हारी हर त़रह़ इ़ज़्ज़त होगी, कोई भी लिबास पहनो, अगर इन चीज़ों से ख़ाली हो तो कोई लिबास पहनो इ़ज़्ज़त नहीं होगी। अभी कुछ दिन पहले गांधी और इस के दूसरे साथी गोल मेज़ कॉन्फ़रन्स में शरीक होने के लिये लन्दन गए जब ख़ास पार्लामेन्ट के दफ़्तर पहुंचे तो मिस्टर गांधी उसी चोटी और उसी लंगोटी में थे जो उन का अपना क़ौमी लिबास है सुभाष चन्द्र बोष ने एक बार लन्दन का सफ़र किया तो अपनी गाय और अपनी धोतिया, लुटिया अपने साथ ले गए कहिये क्या इस लिबास से उन की इ़ज़्ज़त घट गई ? आज मुसलमानों के सिवा तमाम क़ौमें सिख, हिन्दू बल्कि काठियावाड़ में बोहरे और ख़ोजे हमेशा अपने क़ौमी लिबास में रहते हैं, सिख के मुंह पर दाढ़ी, सर पर बाल हाथ में लोहे का कड़ा हर जगह रहता है। क्यूं साहिब ! क्या वोह दुन्या में ज़लील हैं सच है कि जो उन की इस

1.... हिन्दूओं का मख़्सूस धागा

2......البحر الرائق شرح كنز الدقائق، كتاب السير، باب احكام المرتدين، ج٥، ص٢٠٨

लिबास में इ़ज़्ज़त है वोह तुम्हारी बूट सूट में नहीं, दोस्तो ! अगर इ़ज़्ज़त चाहते हो तो सच्चे मुसलमान बनो और अपनी मुस्लिम क़ौम को तरक़्क़ी दो।

﴾3﴿आख़िर दाढ़ी में फ़ाएदा क्या है कि मौलवी इस के इतने पीछे पड़े हैं ?

जवाब : दाढ़ी और तमाम इस्लामी लिबास की ख़ूबियां हम बयान कर चुके हैं अब भी अ़र्ज़ करते हैं कि इस्लाम के हर काम में सदहा ह़िक्मतें हैं। सुनो ! मिस्वाक सुन्नत है इस में बहुत फ़ाएदे हैं दांतों को मज़्बूत़ करती है, मसूढ़ों को फ़ाएदा मन्द है, मुंह को साफ़ करती है, गन्दा दहनी की बीमारी को फ़ाएदा मन्द है, मे'दा दुरुस्त करती है या'नी हज़्म करती है आंखों की रोशनी बढ़ाती है, ज़बान में कुव्वत पैदा करती है, दांतों को साफ़ रखती है, जां कनी को आसान करती है, बल्ग़म को काटती है, पित दूर करती है सर की रगों को मज़्बूत़ करती है, मौत के वक़्त कलिमा याद दिलाती है, ग़रज़ कि इस के फ़ाएदे 36 हैं देखो शामी और तिब की किताबें। इसी त़रह ख़त़ना डेढ़ सो बीमारियों के लिये फ़ाएदा मन्द है बाह को क़वी करता है इन्सान की कुव्वते मर्दी को बढ़ाता है, इस जगह मैल वग़ैरा जम्अ़ नहीं होने देता, औलाद क़वी पैदा करता है, ख़त़ना वाले की औ़रत किसी त़रफ़ रग़बत नहीं करती बा'ज़ बीमारियों में डॉक्टर हिन्दूओं के बच्चों का भी ख़त़ना करा देते हैं।

नाख़ुन में एक ज़हरीला माद्दा होता है अगर नाख़ुन खाने या पानी में डबोए जाएं तो वोह खाना बीमारी पैदा करता है इसी लिये अंग्रेज़ वग़ैरा छुरी कांटे से खाना खाते हैं क्यूं कि ईसाइयों के यहां नाख़ुन बहुत कम कटवाते हैं और पुराने ज़माने के लोग वोह पानी नहीं पीते थे जिस में नाख़ुन डूब जाएं मगर इस्लाम ने इस का येह इन्तिज़ाम फ़रमाया कि नाख़ुन कटवाने का हुक्म दिया और छुरी कांटे की मुसीबत से बचाया।

इसी त़रह़ मूंछों के बालों में ज़हरीला माद्दा मौजूद है अगर मूंछें बड़ी बड़ी हों और पानी पीते वक़्त पानी में डूब जाएं तो पानी सिह़्ह़त के लिये नुक़्सान देह होगा इसी लिये अब मौजूदा फ़ेशन के लोग मूंछ मुंडवाने लगे। इस का इस्लाम ने येह इन्तिज़ाम फ़रमाया कि मूंछें काटने का हुक्म दे दिया क्यूं कि मूंछें मुंडाने से ना मर्दी पैदा होती है।

दाढ़ी के भी बहुत फ़ाएदे हैं, सब से **पहला फ़ाएदा** तो येह है कि दाढ़ी मर्द के चेहरे की ज़ीनत है और मुंह का नूर, जैसे औ़रत के लिये सर के बाल या इन्सान के लिये आंखों के पलक और भवें (बरोटे) ज़ीनत है और इसी त़रह़ मर्द के लिये दाढ़ी, अगर औ़रत अपने सर के बाल मुंडा दे तो बुरी मा'लूम होगी या कोई आदमी अपनी भवें (बरोटे) और पलकें साफ़ करा दे वोह बुरा मा'लूम होगा इसी त़रह़ मर्द दाढ़ी मुंडाने से बुरा मा'लूम होता है।

दूसरा फ़ाएदा येह है कि दाढ़ी मर्द को बहुत से गुनाहों से रोकती है क्यूं कि दाढ़ी से मर्द पर बुज़ुर्गी आ जाती है उस को बुरे काम करते हुए येह ग़ैरत होती है कि अगर कोई देख लेगा तो कहेगा कि ऐसी दाढ़ी और तेरे ऐसे काम। दाढ़ी की भी तुझ को लाज न आई, इस ख़याल से वोह बहुत सी छिछोरी बातें और खुल्लम खुल्ला बुरे काम से बच जाता है येह आज़्माइश है कि नमाज़ और दाढ़ी بِفَضْلِهٖ تعالٰی बुराइयों से रोकती है **तीसरे** येह कि दाढ़ी के बालों से क़ुव्वते मर्दमी बढ़ती है। एक ह़कीम साहिब के पास एक ना मर्द आया जिस ने शिकायत की, कि मैं ने अपनी कमज़ोरी का बहुत इ़लाज किया कुछ फ़ाएदा न हुवा, उन्हों ने फ़रमाया कि दाढ़ी रख ले येह इस का आख़िरी और तीर ब हदफ़ नुस्ख़ा है फिर फ़रमाने लगे कि क़ुदरत ने इन्सान के बा'ज़ उ़ज़्वों का बा'ज़ से रिश्ता

रखा है ऊपर के दांत और दाढ़ों का आंखों से तअ़ल्लुक़ है अगर कोई शख़्स ऊपर की दाढ़ें निकलवा दे तो उस की आंखें ख़राब हो जाती हैं पाउं के तलवों का भी आंखों से तअ़ल्लुक़ है कि अगर आंखों में गर्मी हो तो तलवों की मालिश की जाती है अगर नींद न आवे तो पाउं के तलवों में घी और नमक की मालिश नींद लाती है इसी त़रह़ दाढ़ी का तअ़ल्लुक़ ख़ास मर्द की क़ुव्वतों और मनी से है इसी वजह से औ़रत के दाढ़ी नहीं होती और ना बालिग़ बच्चा जिस में मनी का माद्दा नहीं होता और हिजड़ा (ना मर्द या'नी ज़नाना) के दाढ़ी नहीं होती बल्कि अगर किसी मर्द के दाढ़ी हो और उस के फ़ोते निकाल दिये जाएं तो दाढ़ी ख़ुद ब ख़ुद झड़ जाएगी। जिस से मा'लूम होता है कि आ़म लोगों में मशहूर है कि मौलवियों के औलाद बहुत होती है और मौलवी की बीवी आवारा नहीं होती इस की वजह दाढ़ी ही है और नाफ़ के नीचे के बाल क़ुव्वते मर्दमी के लिये नुक़्सान देह हैं इसी लिये शरीअ़त ने इन के साफ़ करने का हुक्म दिया है अगर हो सके तो आठवें रोज़ उस्तरा ले वरना पन्दरहवें या बीसवें दिन ज़रूर ले। ग़रज़ कि सुन्नत के हर काम में ह़िक्मतें हैं हम ने एक किताब लिखी है : "अन्वारुल क़ुरआन" जिस में नमाज़ की रक्अ़तें, वुज़ू, ग़ुस्ल और तमाम इस्लामी कामों की ह़िक्मतें बयान की हैं। ह़त्ता कि येह भी उस में बताया है कि जो सज़ाएं इस्लाम ने मुक़र्रर फ़रमाई हैं म-षलन चोरी की सज़ा हाथ काटना, ज़िना की सज़ा रजम करना इस में क्या ह़िक्मतें हैं नीज़ हम ने अपनी तफ़्सीरे नईमी में इस्लामी अह़काम के फ़वाइद अच्छी त़रह़ बयान कर दिये उस का मुत़ालअ़ा करो। मूंछ के बाल भी क़ुव्वते मर्दमी के लिये फ़ाएदा मन्द हैं मगर इन की नोकों में ज़हरीला अषर है इस लिये इन को काट तो दो मगर बिल्कुल न मूंडो।

﴾4﴿ आज दुन्या में हर जगह दाढ़ी मुन्डों की ही बादशाहत है माल, दौलत, हुकूमत, इन्ही की है जिस से मा'लूम होता है कि येह ब-रकत वाली चीज़ है (मुसलमान येह मज़ाक़ में कहते हैं) ।

जवाब : अगर दाढ़ी मुंडाने से बादशाहत मिल जाती है, हुकूमत, दौलत, इ़ज़्ज़त हाथ आती है तो जनाबे वाला ! आप को दाढ़ी मुंडाते, हेट लगाते, कोट पतलून पहनते हुए अ़र्सा गुज़र गया । आप को तो हुकूमत क्या कोई चीज़ भी नहीं मिली, फिर तमाम भंगी, चमार, चोहड़े और हर क़ौम येह काम करती है वोह क्यूं बादशाह नहीं बन गई ? दोस्तो ! इ़ज़्ज़त, हुकूमत, दौलत तुम को जो भी मिलेगा वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी से मिलेगा ।

وَاَنۡتُمُ الۡاَعۡلَوۡنَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳۹﴾ (1)

आज ग़ैरों को इस लिये तुम्हारा ह़ाकिम कर दिया गया कि तुम में हुकूमत की अहलिय्यत न रही वरना येह तमाम इ़ज़्ज़तें तुम्हारे ही लिये थीं, याद रखो कि सारी क़ौमें आगे बढ़ कर तरक़्क़ी करेंगी मगर तुम साढ़े तेरह सो बरस पीछे हट कर । सुल्त़ान औरंगज़ेब, शाहजहां वग़ैरा इसी त़रह़ अ़रब व अ़जम के तक़रीबन सारे इस्लामी बादशाह दाढ़ी वाले ही गुज़रे ।

लत़ीफ़ा : एक मुसलमान हम से कहने लगे कि इस्लाम ने हम को तरक़्क़ी से रोका । मैं ने कहा : वोह कैसे ? फ़रमाने लगे कि इस ने सूद तो ह़राम कर दिया और ज़कात फ़र्ज़ कर दी फिर येह शे'र पढ़ा :

क्यूंकर हो इन उसूलों में इफ़्लास से नजात

यां सूद तो ह़राम है और फ़र्ज़ है ज़कात !

1..... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो ।

(پ۴، اٰل عمرٰن:۱۳۹)

आज दूसरी क़ौमें सूद की वजह से तरक़्क़ी कर रही हैं अगर हम भी सूद का लैन दैन करें तो हम भी तरक़्क़ी कर सकते हैं। हम ने अ़र्ज़ किया कि आज दुन्या में जो भी मुसीबत है वोह सूद ही की वजह से है, बड़े बड़े ब्योपारियों का एक दम जो दीवालिया हो जाता है वोह या तो सट्टे (जूए) की वजह से या हन्डी के लैन दैन (सूदी कारोबार) से, अगर आदमी अपनी पूंजी के मुत़ाबिक़ काम करे और मेह़नत, मशक़्क़त और दियानत दारी से तिजारत करे तो उस की तिजारत ठोस और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ला ज़वाल होगी और ज़कात की वजह से सारी क़ौम की माली ह़ालत अच्छी रहेगी बशर्त़ कि ज़कात को सह़ीह़ मा'ना में ख़र्च किया जाए। ज़कात निकालने से अपना माल मह़फ़ूज़ हो जाता है जैसे कि गवर्नमेन्ट का ह़क़ अदा करने से माल मह़फ़ूज़ होता है ज़काती माल बरबाद नहीं होता बल्कि बढ़ता है, अंगूर और बैर के दरख़्त की शाख़ें काटने से ज़ियादा फल आता है इसी त़रह़ ज़कात देने से माल ज़ियादा होता है, क़ुदरत ने हर चीज़ से ज़कात ली है आप के जिस्म पर बीमारियां आती हैं येह तन्दुरुस्ती की ज़कात है नाख़ुन और बाल कटवाए जाते हैं येह उ़ज़्व की ज़कात है तो चाहिये कि माल की भी ज़कात हो मुसलमानों के ज़वाल की वजह इन की बेकारी, तिजारत से नफ़रत और आवारगी है और येह तो तजरिबा है कि मुसलमान के लिये सूद फलता नहीं। आख़िरे कार तबाही लाता है दूसरी क़ौम सूद से बढ़ सकती है मगर मुसलमान اِنْ شَآءَاللّٰہ ! सूद लेने से न बढ़ेगा बल्कि ज़कात देने से। पाएख़ाना का कीड़ा पाएख़ाना (गू) खा कर ज़िन्दगी गुज़ारता है मगर बुलबुल की ग़िज़ा फूल है। मुसलमानो ! तुम बुलबुल हो फूल या'नी ह़लाल कमाई ह़ासिल कर के खाओ। ह़राम पर न ललचाओ। ह़लाल में ब-रकत है ह़राम में बे ब-र-कती, देखो एक

बकरी साल में एक या दो बच्चे ही देती है और हज़ारहा बकरियां हर रोज़ ज़ब्ह़ हो जाती हैं और कुतिया साल में छ सात बच्चे देती है और कोई कुत्ता ज़ब्ह़ नहीं होता मगर फिर भी बकरियों के झुन्ड के झुन्ड और रेवड़ देखने में आते हैं और कुत्तों का रेवड़ आज तक नज़र न पड़ा क्यूं ? इस लिये कि बकरी ह़लाल और कुत्ता ह़राम लिहाज़ा बकरी में ब-रकत है।

﴾5﴿ दाढ़ी, मूंछ, कपड़ा हमारी अपनी चीजें़ हैं जिस त़रह़ चाहें इस्ति'माल करें मौलवी लोग इस पर क्यूं पाबन्दियां लगाते हैं, घर की खेती है जिस वक़्त चाहो और जिस त़रह़ चाहो काटो और इस्ति'माल करो।

जवाब : येह ग़लत़ ख़याल है कि येह चीजे़ं हमारी अपनी हैं, नहीं हर चीज़ रब तआ़ला की है हम को चन्द रोज़ा इस्ति'माल के लिये दी गई है फिर चीज़ मालिक की ही होगी। किसी ने किसी से चरख़ा मांगा तो जो सूत कात लिया वोह अपना और फिर चरख़ा चरख़े वाले का, आ'माल सूत हैं और येह जिस्म चरख़ा। कारख़ाने से किसी को एक मशीन मिली मगर वोह आदमी उस मशीन के कुल पुर्ज़े को चलाने से बे ख़बर है तो मशीन के साथ एक किताब भी मिलती है जिस में हर पुर्ज़े के इस्ति'माल का त़रीक़ा लिखा होता है और कम्पनी की त़रफ़ से कुछ आदमी भी मशीन सिखाने वाले मुक़र्रर होते हैं कि बे इल्म लोग इस किताब को देखें और उस उस्ताद से मशीन चलाना सीखें। अगर यूंही कोई ग़लत़ सलत़ मशीन चलाना शुरूअ़ कर दे तो बहुत जल्द मशीन तोड़ डालेगा और मुमकिन है कि मशीन से ख़ुद भी चोट खा जाए इसी त़रह़ हमारा जिस्म मशीन है हाथ पाउं वग़ैरा इस के पुर्ज़े हैं येह मशीन हम को क़ुदरत के कारख़ाने से मिली है इस का इस्ति'माल सिखाने के लिये

कारख़ाने के मालिक ने एक किताब उतारी [1] जिस का नाम है "**कुरआने मजीद**" और इस मशीन का काम सिखाने के लिये एक उस्तादों का उस्ताद दुन्या भर का मुअ़ल्लिम भेजा जिस का नामे पाक है : मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم । इस उस्ताज़िल कुल ने हम को मशीन चला कर दिखा दी और कुरआने मजीद ने पुकार दिया कि

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (1)

ऐ ग़ाफ़िलो ! ऐ मशीन वालो ! अगर मशीन सहीह़ त़रीके़ से चलाना चाहते हो तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीके़ पर चलाओ जैसे जिस्म पर जान हुकूमत करती है कि हर उ़ज़्व उस की मरज़ी से ह़-र-कत करता है इसी त़रह़ इस जान पर इस सुल्त़ाने कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ाकिम बनाओ कि जो ह़-र-कत हो इन ही की रिज़ा से हो इसी का नाम तसव्वुफ़ है और येह ही ह़क़ीक़त, मा'रिफ़त, और त़रीक़त का मग़्ज़ है ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल دام ظلہم ने खूब फ़रमाया :

खोल दो सीना मेरा फ़ातेह़े मक्का आ कर — का'बए दिल से सनम खींच के कर दो बाहर

आप आ जाइये क़ालिब में मेरे जान बन कर — सल्त़नत कीजिये इस जिस्म में सुल्त़ां बन कर

इस्लामी शक्ल और लिबास

इस्लामी शक्ल येह है कि सर के बाल या तो सब रखाए या सब कटवा दे या सब मुंडाए कुछ बाल रखना कुछ कटवाना मन्अ़ हैं,

---

1.... इस मक़ाम पर मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में "**एक किताब बनाई**" लिखा हुवा था जो कि किताबत की ग़लत़ी है लिहाज़ा हम ने इसे "**एक किताब उतारी**" कर दिया... **इल्मिय्या**

2.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।
(پ ۲۱، الاحزاب: ۲۱)

जैसे कि अंग्रेज़ी बाल में होता है, ऐसे ही कुछ बाल रखना और कुछ मुंडाना मन्अ़ है। जैसे बा'ज़ लोग बीच सर पर पान रखवाते हैं या बा'ज़ लोग सर के अगले ह़िस्से पर छज्जे रखवाते हैं या बा'ज़ जाहिल मुसलमान किसी बुज़ुर्ग के नाम की बच्चों के सरों पर हिन्दूओं की त़रह़ चोटी रखते हैं येह सब मन्अ़ है और जिस के कुल बाल रखे हों वोह या तो कान की लौ तक या कन्धों तक रखे या'नी ता बगोश या ता बदोश कि येह सुन्नत है और ज़ियादा लम्बे बाल रखना और इस में चोटी मांग औ़रतों की त़रह़ करना मन्अ़ है।

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *की ह़याते ज़ाहिरी के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक आप* صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *की ख़िदमते बा ब-रकत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) ह़ाज़िर होता। (एक रोज़) कारीगर भाई ने सरकार* صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान* صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *ने फ़रमाया :* لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهٖ *या'नी "शायद तुझे इस की ब-रकत से रोज़ी मिल रही है।"* *(फ़ैज़ाने सुन्नत जि.1, स. 1422)*

(بحوالہ سنن الترمذی،حدیث:۲۳۴۵، ص۱۸۸۷ و اشعۃ اللمعات،ج۴،ص۲۶۲)

मूंछ इस क़दर काटना ज़रूरी है कि ऊपर के होंट की डोरी खुल जाए बिल्कुल न कटवाना या बिल्कुल मुंडा देना मन्अ़ है और दाढ़ी एक मुठ्ठी रखना ज़रूरी है या'नी ठोड़ी के नीचे जो बाल हैं उन को अपनी मुठ्ठी में पकड़े जो मुठ्ठी से आगे निकले हों वोह कटवावे या'नी मुठ्ठी से कम करना भी मन्अ़ और मुठ्ठी से ज़ियादा लम्बी रखना भी मन्अ़ है अब रही आस पास की दाढ़ी या'नी जबड़ों पर के वोह बाल जो गोल दाएरे में आ जाएं वोह न कटवाए और जो दाएरे से निकल जाएं वोह कटवा दे या'नी जब कि ठोड़ी के नीचे के बाल एक मुठ्ठी लम्बे हों और उस के दाएरे में जिस क़दर बाल आ जाएं उस का कटवाना भी मन्अ़ है। नाक के बाल कटवाना और बग़ल के बाल उखेड़ना सुन्नत है अगर बग़ल के बाल भी उस्तरे से मूंडे जाएं तो भी ह़रज नहीं नाफ़ के नीचे के बाल मूंडना सुन्नत है क़ैंची से काटना नुहूसत का सबब है। हाथ पाउं के नाखुन कटवाना भी सुन्नत है बेहतर येह है कि सारे काम हर हफ़्ते में एक बार ज़रूर करे अगर हर हफ़्ता न कर सके तो चालीस दिन से ज़ियादा देर न लगाए। मर्द को अपने हाथ पाउं में महंदी लगाना ज़ीनत के लिये मन्अ़ है।

इस्लामी लिबास

इस्लामी लिबास येह है कि मर्द को नाफ़ से घुटने तक का जिस्म ढकना फ़र्ज़ है अगर नमाज़ में खुला रहा तो नमाज़ न होगी और नमाज़ के सिवा भी अगर्चे अकेले में ही बिला वजह खोले तो गुनहगार होगा इस के सिवा बाक़ी लिबास में बेहतर येह है कि पगड़ी सर पर बांधे और पूरी आस्तीन की क़मीस या कुरता पहने और टख़्नों से ऊंचा तहबन्द या पाजामा पहने इन कपड़ों के सिवा अचकन, वास्केट जो कुछ भी पहने वोह काफ़िरों के लिबास की त़रह़ न हो। पगड़ी के नीचे टोपी होना चाहिये अगर टोपी न हो तो भी सर की खोपड़ी ढक ले अगर

खोपड़ी खुली रही और आस पास पगड़ी लपेटी रही तो सख़्त बुरा है और अगर फ़क़त़ टोपी ओढ़े तो ऐसी टोपी से बचे जो कुफ़्फ़ार या फ़ासिक़ों की ख़ास टोपी है जैसे गांधी केप, हेट, हिन्दवानी गोल टोपी, एक क़ाइदा याद रखो वोह येह कि जो लिबास काफ़िरों की क़ौमी निशानी हो उस का इस्ति'माल मुसलमानों को ह़राम है जैसे हेट और हिन्दवानी धोती वग़ैरा और जो लिबास कि काफ़िरों की मज़्हबी पहचान बन चुका है उस का इस्ति'माल कुफ़्र है जैसे कि हिन्दवानी चोटी और ज़ुन्नार और ईसाई क़ौम का सलीबी निशान वग़ैरा या'नी जिस लिबास को देख कर लोग जानें कि येह हिन्दू या ईसाई का लिबास है इस लिबास से मुसलमानों को बचना अज़ ह़द ज़रूरी है।

दूसरी ज़रूरी बातें : अपने घर में अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चरचा रखो अपनी बीवी बच्चों को नमाज़ का सख़्त पाबन्द बनाओ। सात बरस के बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो और दस बरस के बच्चों को मार मार कर नमाज़ पढ़ाओ, रात को जल्दी सो जाओ सुब्ह़ को जल्द जागो अपने बच्चों को जल्द जगा दो। क्यूं कि वोह रह़मत के नाज़िल होने का वक़्त है बच्चों को ता'लीम दो कि वोह हर काम **बिस्मिल्लाह** से शुरूअ़ करें और सुब्ह़ के वक़्त तुम्हारे घरों से क़ुरआने करीम की आवाज़ें आती हों कि क़ुरआन शरीफ़ की आवाज़ मुसीबतों को टालती है जब एक घन्टा इन नेक कामों में ख़र्च करो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर दुन्यावी कारोबार में मश्ग़ूल हो जाओ। औ़रतों का लिबास दूसरी फ़स्ल में बयान होगा।

दूसरी फ़स्ल

औ़रतों का पर्दा

औ़रतों के लिये पर्दा बहुत ज़रूरी चीज़ है और बे पर्दगी बहुत ही नुक़्सान देह, ऐ मुस्लिम क़ौम ! अगर तू अपनी दीनी और दुन्यवी

तरक़्क़ी चाहती है तो औ़रतों को इस्लामी हुक्म के मुत़ाबिक़ पर्दे में रखो, हम इस के मुतअ़ल्लिक़ एक मुख़्तसर सी गुफ़्त-गू कर के पर्दे के अ़क़्ली और नक़्ली दलाइल और बे पर्दगी के नुक़्सान बयान करते हैं।

क़ुदरत ने अपनी मख़्लूक़ को अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा कामों के लिये बनाया है और जिस को जिस काम के लिये बनाया है उस के मुत़ाबिक़ उस का मिज़ाज बनाया, हर चीज़ से क़ुदरती काम लेना चाहिये जो ख़िलाफ़े फ़ित़रत काम लेगा वोह ख़राबी में पड़ेगा इस की सेंकड़ों मिषालें हैं :

टोपी सर पर रखने और जूता पाउं में पहनने के लिये है जो जूता सर पर बांध ले और टोपी पाउं में लगा ले वोह दीवाना है, गिलास पानी पीने और उगाल दान थूकने के लिये है जो कोई उगाल दान में पानी पिये और गिलास में थूके वोह पूरा पागल है, बैल की जगह घोड़ा और घोड़े की जगह बैल काम नहीं दे सकता इसी त़रह़ इन्सान के दो गुरौह किये गए हैं एक औ़रत दूसरे मर्द। औ़रत को घर में रह कर अन्दरूनी ज़िन्दगी संभालने के लिये बनाया गया है और मर्द को बाहर फिर कर खाने और बाहर की ज़रूरियात को पूरा करने के लिये बनाया।

मिष्ल मशहूर है कि पचास औ़रतों की कमाई में वोह ब-रकत नहीं जो एक मर्द की कमाई में है और पचास मर्दों से घर में वोह रोनक़ नहीं जो एक औ़रत से है, इसी लिये शोहर के ज़िम्मे बीवी का सारा ख़र्च रखा है और बीवी के ज़िम्मे शोहर का ख़र्चा नहीं क्यूं कि औ़रत कमाने के लिये बनी ही नहीं इसी लिये औ़रतों को वोह चीजें दीं जिस से उस को मजबूरन घर में बैठना पड़े और मर्दों को इस से आज़ाद रखा। जैसे बच्चे जनना, हैज़ व निफ़ास आना, बच्चों को दूध पिलाना वग़ैरा इसी लिये बचपन से ही लड़कों को भागदौड़, उछल कूद

के खेल पसन्द हैं जैसे कबड्डी, कसरत, डन्ड लगाना वग़ैरा और लड़कियों को कुदरती तौर पर वोह खेल पसन्द हैं जिन में भागना दौड़ना न हो बल्कि एक जगह बैठा रहना पड़े जैसे गुड़िया से खेल, सीना पिरोना, छोटी छोटी रोटियां पकाना । आप ने किसी छोटी बच्ची को कबड्डी खेलते, डन्ड लगाते न देखा होगा इस से मा'लूम होता है कि कुदरत ने लड़कों को बाहर के लिये और लड़कियों को घर के अन्दर के लिये पैदा किया है ।

अब जो शख़्स औ़रतों को बाहर निकाले या मर्दों को अन्दर रहने का मश्वरा दे वोह ऐसा ही दीवाना है जैसा कि जो टोपी पाउं में और जूता सर पर रखे ।

जब आप ने इतना समझ लिया कि मर्द और औ़रत एक ही काम के लिये न बने बल्कि अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा कामों के लिये तो अब जो कोई इन दोनों फ़रीक़ों को एक काम सिपुर्द करना चाहे वोह कुदरत का मुक़ाबला करता है उस को कभी भी काम्याबी न होगी । गोया यूं समझो कि औ़रत और मर्द ज़िन्दगी की गाड़ी के दो पहिये हैं, अन्दरूनी और घरेलू दोनों के लिये औ़रत और मर्द बाहर के लिये अगर आप ने औ़रत और मर्द दोनों को बाहर निकाल दिया तो गोया आप ने ज़िन्दगी की गाड़ी का एक पहिया निकाल दिया तो यक़ीनन गाड़ी न चल सकेगी ।

अब हम अक़्ली और नक़्ली दलाइल पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ करते हैं :

﴾1﴿ सब मुसलमान जानते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बीवियां मुसलमानों की माएं हैं ऐसी माएं कि तमाम जहान की माएं उन के क़दमे पाक पर कुरबान अगर वोह बीवियां मुसलमानों से पर्दा न करतीं तो ज़ाहिरन कोई ह़रज नहीं मा'लूम होता था, क्यूं कि औलाद से पर्दा कैसा । मगर कुरआने करीम ने इन पाक बीवियों से ख़िताब कर के फ़रमाया,

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى (1)

या'नी ऐ नबी की बीवियो ! तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

इस में तो उन बीवियों से कलाम था। अब मुसलमानों से हुक्म हो रहा है :

وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ (2)

या'नी ऐ मुसलमानो ! जब तुम नबी की बीवियों से कोई इस्ति'माल की चीज़ मांगो, तो पर्दे के बाहर से मांगो।

देखो ! बीवियों को उधर घरों में रोक दिया और मुसलमानों को बाहर से कोई चीज़ मांगने का येह त़रीक़ा सिखाया।

﴾2﴿ मिश्कात, बाबुन्नज़रि इलल मख़्तूबह में है कि एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी दो बीवियों ह़ज़रते उम्मे स-लमह और मैमूना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानाक ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जो कि नाबीना थे आ गए हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों बीवियों से फ़रमाया कि "اِحْتَجِبَا مِنْهُ" इन से पर्दा करो। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह तो नाबीना हैं, फ़रमाया : तुम तो नाबीना नहीं हो। (3)

इस से मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ येह ही ज़रूरी नहीं कि मर्द औ़रत को न देखे बल्कि येह भी ज़रूरी है कि अजनबी औ़रत ग़ैर मर्द को न देखे। देखो यहां मर्द नाबीना हैं मगर पर्दे का हुक्म दिया गया।

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी। (پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

2.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम उन से बरतने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो। (پ۲۲،الاحزاب:۵۳)

3.....مشکاۃالمصابیح،کتاب النکاح،باب النظر الی المخطوبۃ...الخ،الحدیث:۳۱۱۶،ج۱،ص۵۷۳

﴾3﴿ एक लड़ाई में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जा रहे हैं आगे आगे ह़ज़रते अनजशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ कुछ गीत गाते हुए जा रहे हैं लश्कर के साथ कुछ बा पर्दा औ़रतें भी हैं ह़ज़रते अनजशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ बहुत ख़ुश आवाज़ थे, इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अनजशा رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ अपना गीत बन्द करो क्यूं कि मेरे साथ कच्ची शीशियां हैं।" (देखो मिश्कात, बाबुल बयान व शे'र)[1]

इस में औ़रतों के दिलों को कच्ची शीशियां फ़रमाया जिस से मा'लूम हुवा है कि पर्दे में रह कर भी औ़रत मर्द का और मर्द औ़रत का गाना न सुनें।

﴾4﴿ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में औ़रतों को भी हुक्म था कि नमाज़े ई़द और दूसरी नमाज़ों में ह़ाज़िर हुवा करें इसी त़रह़ वा'ज़ के जल्सों में शिरकत किया करें क्यूं कि इस्लाम बिल्कुल नया नया दुन्या में आया था। अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वा'ज़ औ़रतें न सुनतीं तो शरीअ़त के हुक्म अपने लिये कैसे मा'लूम करतीं मगर फिर भी उन के निकलने में बहुत पाबन्दियां लगा दी गई थीं कि ख़ुश्बू लगा कर न निकलें, बीच रास्ता किसी ग़ैर से बात न करें फ़ज्र की नमाज़ इस क़दर अंधेरे में पढ़ी जाती थी कि औ़रतें पढ़ कर निकल जाएं और कोई पहचान न सके, औ़रतें मर्दों से बिल्कुल पीछे खड़ी होती थीं लेकिन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उन को मस्जिदों में आने और ई़दगाह जाने से भी रोक दिया, औ़रतों ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा

---

1 ......مشکاة المصابیح، کتاب الآداب، باب البیان و الشعر، الحدیث: ٤٨٠٦، ج٢، ص١٨٨
وصحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمة النبی...الخ، الحدیث: ٢٣٢٣، ص١٢٦٩

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से शिकायत की, कि हम को ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नेक कामों से रोक दिया, ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया कि अगर हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी इस ज़माने को देखते तो औ़रतों को मस्जिदों से रोक देते, देखो शामी वग़ैरा।[1]

इन अह़ादीष में ग़ौर करो कि वोह ज़माना निहायत ख़ैरो ब-रकत का, येह ज़माना शर व फ़साद का। उस वक़्त आ़म मर्द परहेज़ गार, अब निहायत आज़ाद और फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार। उस वक़्त आ़म औ़रतें पाक दामन ह़या वाली और शर्मीली, अब आ़म औ़रतें बे ग़ैरत, आज़ाद और बे शर्म जब उस वक़्त औ़रतों से पर्दा कराया गया तो क्या येह वक़्त उस वक़्त से अच्छा है? हम ने मुख़्तसर त़रीक़े से क़ुरआनो ह़दीष की रोशनी में पर्दे की ज़रूरत बयान की।

﴾5﴿ अब फ़िक़्ह की भी सैर करते चलिये। फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि औ़रत के सर से निकले हुए बाल और पाउं के कटे हुए नाख़ुन भी ग़ैर मर्द न देखे (देखो शामी बाबुस्सित्र)[2]

औ़रत पर जुमुआ़ की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं ईद, बक़र ईद की नमाज़ वाजिब नहीं, क्यूं? इस लिये कि येह नमाज़ें जमाअ़त से मस्जिदों में ही होती हैं और औ़रतों को बिला ज़रूरते शरई घर से निकलने की इजाज़त नहीं। औ़रत पर ह़ज के लिये सफ़र करना उस वक़्त तक फ़र्ज़ नहीं जब तक कि उस के साथ अपना मह़रम न हो या'नी बाप, बेटा या शोहर

---

1 ......رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب فی حمل المیت، ج۳، ص۱۶۲
وصحیح البخاری، کتاب الاذان، باب انتظار الناس...الخ، الحدیث:۸۶۹، ج۱، ص۳۰۰

2 ......الدر المختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر والمس، ج۹، ص۶۱۳، ۶۱۴

वग़ैरा औ़रत का मुंह ग़ैर मर्द न देखे। (देखो शामी बाबुस्सित्र)[1]

हज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मुझे रात में दफ़्न किया जाए, क्यूं? इस लिये कि अगर दिन में दफ़्न किया गया तो कम अज़ कम दफ़्न करने वालों को मेरे जिस्म का अन्दाज़ा तो हो जाएगा। येह भी मन्ज़ूर नहीं ग़रज़ कि पर्दे की वजह से शरीअ़त ने बहुत से हुक्म औ़रतों से उठा लिये।

ग़ौर तो करो कि जब औ़रतों को मस्जिद में जाने की इजाज़त नहीं, क़ब्रिस्तान जाने की इजाज़त नहीं, ईदगाह में जा कर ईद पढ़ने की इजाज़त नहीं तो बाज़ारों, कॉलेजों और कम्पनी बाग़ों में सैर के लिये जाने की इजाज़त क्यूंकर होगी। क्या बाज़ार, कॉलेज और कम्पनी बाग़ मस्जिदों और मक्का शरीफ़ से बढ़ कर हैं?

नोट ज़रूरी : जिन अह़ादीष में औ़रतों का बाहर निकलना आता है वोह या तो पर्दा फ़र्ज़ होने से पहले था या किसी ज़रूरत की वजह से पर्दे के साथ था। इन अह़ादीष को बिग़ैर सोचे समझे बूझे बे पर्दगी के लिये आड़ बनाना मह़्ज़ नादानी है इसी त़रह़ उस ज़माने में औ़रतों का जिहादों में शिरकत करना इस वजह से था कि उस वक़्त मर्दों की ता'दाद थोड़ी थी अब भी अगर किसी जगह मुसलमान मर्द थोड़े हों और कुफ़्फ़ार ज़ियादा और जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो जाए तो औ़रतें जिहाद में ज़रूर जाएं उन जिहादों को इस ज़माने की बे ह़याई के लिये आड़ न बनाओ। अब जिहाद के बहाने से औ़रतों को मर्दों के सामने नंगा परेड कराया जाता है बा'ज़ दफ़्आ़ मुजाहिदीन ने ज़रूरतन घोड़ों के पेशाब

1......الدرالمختاروردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی قولھم...الخ، ج۳، ص۵۳۱

पिये, दरख़्तों के पत्ते खाए, क्या अब भी बिला ज़रूरत येह काम कराए जाएंगे, अल्लाह तआ़ला वोह वक़्त न लाए जब जिहाद में औ़रतों की ज़रूरत पड़े । यहां तक तो नक़्ली दलाइल से हम ने पर्दे की ज़रूरत षाबित कर दी अब अ़क़्ली दलीलें भी सुनिये :

﴾1﴿ औ़रत घर की दौलत है और दौलत को छुपा कर घर में रखा जाता है हर एक को दिखाने से ख़त़रा है कि कोई चोरी कर ले इसी त़रह़ औ़रत को छुपाना और ग़ैरों को न दिखाना ज़रूरी है ।

﴾2﴿ औ़रत घर में ऐसी है जैसे चमन में फूल और फूल चमन में ही हरा भरा रहता है अगर तोड़ कर बाहर लाया गया तो मुरझा जाएगा, इसी त़रह़ औ़रत का चमन उस का घर और उस के बाल बच्चे हैं इस को बिला वजह बाहर न लाओ वरना मुरझा जाएगी ।

﴾3﴿औ़रत का दिल निहायत नाज़ुक है बहुत जल्द हर त़रह़ का अषर क़बूल कर लेता है इस लिये इस को कच्ची शीशियां फ़रमाया गया । हमारे यहां भी औ़रत को सिन्फ़े नाज़ुक कहते हैं और नाज़ुक चीज़ों को पत्थरों से दूर रखते हैं कि टूट न जाएं, ग़ैरों की निगाहें इस के लिये मज़बूत़ पथ्थर है इस लिये इस को ग़ैरों से बचाओ ।

﴾4﴿औ़रत अपने शोहर और अपने बाप दादा बल्कि सारे ख़ानदान की इ़ज़्ज़त और आबरू है और इस की मिषाल सफ़ेद कपड़े की सी है, सफ़ेद कपड़े पर मा'मूली सा दाग़ धब्बा दूर से चमकता है और ग़ैरों की निगाहें इस के लिये एक बदनुमा दाग़ हैं, इस लिये इस को इन धब्बों से दूर रखो ।

﴾5﴿औ़रत की सब से बड़ी ता'रीफ़ येह है कि उस की निगाह अपने शोहर के सिवा किसी पर न हो, इस लिये कुरआने करीम ने हूरों की

ता'रीफ़ में फ़रमाया : قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ [(1)]

अगर इस की निगाह में चन्द मर्द आ गए तो यूं समझो कि औ़रत अपने जौहर खो चुकी, फिर उस का दिल अपने घर बार में न लगेगा जिस से येह घर आख़िर तबाह हो जाएगा।

ए'तिराज़ : बा'ज़ लोग पर्दे के मस्अले पर दो ए'तिराज़ करते हैं : **अव्वल** येह कि औ़रतों का घरों में क़ैद रखना इन पर ज़ुल्म है जब हम बाहर की हवा खाते हैं तो इन को इस ने'मत से क्यूं मह़रूम रखा जाए, **दूसरे** येह कि औ़रत को पर्दे में रखने की वजह से इस को तपे दिक़ हो जाती है इस लिये ज़रूरी है कि इन को बाहर निकाला जाए।

जवाब : अव्वल सुवाल का जवाब तो येह है कि घर औ़रत के लिये क़ैदख़ाना नहीं बल्कि इस का चमन है घर के कारोबार और अपने बाल बच्चों को देख कर वोह ऐसी ख़ुश रहती हैं जैसे चमन में बुलबुल, घर में रखना इस पर ज़ुल्म नहीं, बल्कि इ़ज़्ज़त व इ़स्मत की ह़िफ़ाज़त है इस को क़ुदरत ने इसी लिये बनाया है, बकरी इसी लिये है कि रात को घर में रखी जाए और शेर चीता और मुह़ाफ़िज़ कुत्ता इस लिये है कि इन को आज़ाद फिराया जाए अगर बकरी को आज़ाद किया तो उस की जान ख़त़रे में है इस को शिकारी जानवर फाड़ डालेंगे।

दूसरे सुवाल का जवाब मैं क्या दूं, ख़ुद तजरिबा दे रहा है वोह येह कि औ़रत के लिये पर्दा तपे दिक़ का सबब नहीं हमारी पुरानी बुज़ुर्ग औ़रतें घर के दरवाज़े से भी बे ख़बर थीं मगर वोह जानती भी न थीं कि तपेदिक़ किसे कहते हैं और आज कल बे पर्दगी में अव्वल नम्बर दो सूबे हैं एक काठियावाड़, दूसरा पंजाब, मगर **अल्लाह** तआ़ला की शान है

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह औ़रतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं। (پ۲۷،الرحمٰن:۵٦)

कि इन ही दोनों सूबों में तपेदिक़ ज़ियादा है यू.पी. में आ़म तौ़र पर शरीफ़ों की बहू बेटियां पर्दा नशीन हैं अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से उन में दिक़ बहुत ही कम है बल्कि अगर कहा जाए कि दिक़ है ही नहीं तो भी बे जा न होगा। जनाब ! अगर पर्दे से दिक़ पैदा होती है तो मर्दों को दिक़ क्यूं होती है।

दोस्तो : दिक़ की वजह कुछ और है याद रखो ! तन्दुरुस्ती के दो बड़े उसूल हैं इन की पाबन्दी करो। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तन्दुरुस्त रहोगे। अव्वल येह कि भूके हो कर खाओ और पेट भर कर न खाओ बल्कि रोटी से भूके उठो और दूसरे येह कि थक कर सोव। पहले औ़रतें चाय को जानती भी न थीं घर में मेह़नत मशक़्क़त के काम करती थीं। चक्की पीसना, ग़ल्ला साफ़ करना, ख़ूब पसीना आता था। भूक खुल कर लगती थी और रात को चारपाई पर ख़ूब बेहोशी की नींद आती थी इस लिये तन्दुरुस्त रहती थीं, आज हम देखते हैं कि पर्दे वाली औ़रतें हश्शाश बश्शाश मा'लूम होती हैं, उन के चेहरे तरो ताज़ा होते हैं मगर आवारा और बेहूदा औ़रतें ऐसी मा'लूम होती हैं जैसे कि उस फूल को लू लग गई है। दोस्तो ! येह सब बहाने हैं, ज़रूरी है कि मकान खुले, हवा दार, साफ़ हों, अपने मकानों के सेह़्न बड़े बड़े और खुले हुए हवा दार रखो और औ़रतों बच्चों को चाय और दूसरी ख़ुश्क चीज़ों से बचाओ और दूध घी वग़ैरा का इस्ति'माल रखो, औ़रतों को आराम त़लब न बनाओ।

इस्लामी पर्दा और त़रीक़ए ज़िन्दगी

औ़रत का जिस्म सर से पाउं तक सित्र है जिस का छुपाना ज़रूरी है सिवा चेहरे और कलाइयों तक हाथों और टख़्ने से नीचे तक पाउं के कि इन का छुपाना नमाज़ में फ़र्ज़ नहीं बाक़ी हिस्सा अगर खुला होगा तो नमाज़ न होगी लिहाज़ा उस का लिबास ऐसा होना चाहिये जो

सर से पाउं तक उस को ढका रखे और इस क़दर बारीक कपड़ा न पहने जिस से सर के बाल या पाउं की पिंडलियां या पेट ऊपर से नंगा मा'लूम हो घर में अगर अकेली या शोहर या मां बाप के सामने हो तो दुपट्टा उतार सकती है लेकिन अगर दामाद या दूसरा क़राबत दार हो तो सर बा क़ाइदा ढका हुवा होना ज़रूरी है और शोहर के सिवा जो भी घर में आवे वोह आवाज़ से ख़बर कर के आवे। अजनबी औरत को सिवाए चन्द सूरतों के देखना मन्अ़ है : ﴾1﴿ त़बीब मरीज़ा के मरज़ की जगह को ﴾2﴿ जिस औ़रत के साथ निकाह़ करना है उस को छुप कर देख सकता है ﴾3﴿ गवाह जो औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ गवाही देना चाहे ﴾4﴿ क़ाज़ी जो औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ कोई हुक्म देना चाहे। वोह भी ब क़द्रे ज़रूरत देख सकता है। आवारा औ़रतों से भी शरीफ़ औ़रतें पर्दा करें। (در مختار)[1]

औ़रत को अपने घर से निकलना भी मन्अ़ है सिवाए चन्द मौक़अ़ के

﴾1﴿ "**क़ाबिला**" : या'नी दाई पेशा करने वाली औ़रत घर से निकल सकती है ﴾2﴿ "**शाहिदा**" : गवाही देने के लिये औ़रत क़ाज़ी के दरबार में जा सकती है ﴾3﴿ "**ग़ासिला**" : जो औ़रत मुर्दा औ़रतों को ग़ुस्ल देती है वोह भी इस ज़रूरत से निकल सकती है ﴾4﴿ "**कासिबा**" : जिस औ़रत का कोई कमाई करने वाला न हो वोह रोज़ी ह़ासिल करने के लिये घर से निकल सकती है ﴾5﴿ "**ज़ाइरा**" : वालिदैन और ख़ास अहले क़राबत से मिलने के लिये भी घर से निकल सकती है वग़ैरा। अगर इस की पूरी तह़क़ीक़ करना हो तो आ'ला

---

1 ......الدرالمختاروردالمحتار، کتاب الصلوۃ،باب شروط الصلوۃ،مطلب فی ستر العورۃ،ج۲، ص۹۵تا۱۰۰ملخصاً ورد المحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی النظر والمس، ج۹،ص۶۱۳

हज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ की किताब **"मुरव्वजुन्नजा लि ख़ुरूजिन्निसाअ"** का मुतालआ करो। हम ने जो कहा इन मौक़ओं में औ़रत घर से निकल सकती है इस के मा'ना येह हैं कि पर्दे से निकले इस तरह न निकले जैसे आज कल रवाज है कि या तो बे बुरक़अ़ बाहर फिरती हैं या अगर बुरक़अ़ है तो मुंह खुला हुवा और बुरक़अ़ भी निहायत ख़ुशनुमा और चमकदार कि दूसरे मर्दों की उस पर ख़्वाह म ख़्वाह नज़र पड़े येह जाइज़ नहीं। येह अह़काम थे घर से बाहर निकलने के। अब रहा सफ़र करना इस के मुतअ़ल्लिक़ येह ज़रूर याद रखो कि औ़रत को अकेले या किसी अजनबी मर्द के साथ सफ़र करना ह़राम है ज़रूरी है कि उस के साथ कोई मह़रम हो। आज कल जो रवाज हो गया है कि घर को ख़त़ लिख दिया हम ने अपनी बीवी को फ़ुलां गाड़ी पर सुवार कर दिया है तुम स्टेशन पर आ कर उतार लेना। येह ना जाइज़ भी है और ख़त़रनाक भी। देवर और बहनोई वग़ैरा से बड़े बड़े घरों में भी पर्दा नहीं बल्कि बा'ज़ औ़रतें तो कहती हैं कि इन से पर्दा करने की ज़रूरत ही नहीं। येह मह़ज़ ग़लत़ है ह़दीषे पाक में इर्शाद हुवा कि اَلْحَمْوُالْمَوْتُ देवर तो और भी ज़ियादा मौत है। [1]

बा'ज़ जगह इन से हंसी और मज़ाक़ तक किया जाता है ख़याल रखो कि जिस औ़रत से कभी भी निकाह़ हो सके उस से पर्दा ज़रूरी है कि वोह अजनबी है और जिस से कभी भी निकाह़ जाइज़ न हो जैसे दामाद, रिज़ाई बेटा, बाप, भाई, ख़ुसर वग़ैरा। इन से पर्दा ज़रूरी नहीं अगर इन लोगों से बा क़ाइदा पर्दा न हो सके तो कम अज़ कम घूंघट से रहना और उन के सामने ह़या और शर्म से रहना ज़रूरी है ऐसा बारीक लिबास न पहनो जिस से नंगी मा'लूम हो और ऐसा

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب لا یخلون رجل... الخ، الحدیث: ۵۲۳۲، ج۳، ص ۴۷۲

लिबास न पहनो जो पिंडलियों से बिल्कुल चिमट जाता हो और जिस से बदन का अन्दाज़ा होता हो हां अगर उस घर में सिवाए शोहर वग़ैरा के कोई अजनबी न आता हो तो कोई मुज़ा-यक़ा नहीं मगर ऐसे घर आज कल मुश्किल से मिलेंगे। डॉक्टर इक़्बाल ने ख़ूब कहा है :

چو زہرا باش از مخلوق روپوش
کہ در آغوش شبّیرے بہ بینی

या'नी हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا की तरह अल्लाह वाली पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जैसी औलाद देखो।

लड़कियों की ता'लीम

अपनी लड़की को वोह इल्मो हुनर ज़रूर सिखा दो जिस की उस को जवान हो कर ज़रूरत पड़ेगी लिहाज़ा सब से पहले लड़की को पाकी पलीदी, हैज़ व निफ़ास के शरई मस्अले, रोज़ा, नमाज़, ज़कात वग़ैरा के मस्अले पढ़ा दो या'नी क़ुरआन शरीफ़ और दीनियात के रिसाले पढ़ा दो। फिर कुछ ऐसी अख़्लाक़ी किताबें जिस में शोहर के हुक़ूक़ बजा लाने, बच्चों के पालने, सास नन्दों से मैल व महब्बत रखने के त़रीक़े सिखाए गए हों वोह भी ज़रूर पढ़ा दो। बेहतर येह है कि इन को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तारीख़ भी मुत़ालआ कराओ जिस से दुन्या में रहने सहने का ढंग आ जावे। इस के बा'द हर त़रह का खाना पकाना, ब क़द्रे ज़रूरत सीना पिरोना और दूसरी ज़नाना दस्त कारी और सूई का हुनर ज़रूर सिखाओ क्यूं कि सूई ही वोह चीज़ है जिस की ज़रूरत मरने के बा'द भी पड़ती है या'नी मुर्दा सिला हुवा कफ़न पहन कर क़ब्र में जाता है सूई औरतों का ख़ास हुनर है कि अगर (ख़ुदा न करे) कभी औरत पर कोई मुसीबत पड़ जाए या बेवा हो जाए और किसी मजबूरी की वजह से दूसरा निकाह न कर सके तो घर में आबरू से बैठ कर अपनी दस्त कारियों से पेट पाल सके। आज कल खाना पकाने और सीने पिरोने की बहुत सी किताबें छप चुकी हैं।

चुनान्चे "देहली का बावर्ची ख़ाना", "ख़्वाने ने'मत", "ख़्वाने यग़मा"। खाने पकाने के हुनर के लिये ज़रूर पढ़ा दो बल्कि इन से हर त़रह़ का खाना पकवा लो और दोस्तो ! तीन चीज़ों से अपनी लड़कियों और बीवियों को बहुत बचाओ एक नाविल, दूसरे कॉलेज और स्कूलों की ता'लीम, तीसरे थियेटर और सिनेमा। येह तीन चीज़ें लड़कियों के लिये ज़हरे क़ातिल हैं। इस वक़्त लड़कियों में जिस क़दर शोख़ी, आज़ादी और बे ग़ैरती है वोह सब इन तीन ही की वजह से है। हम ने देखा कि लड़कियों के लिये पहले तो ज़नाना स्कूल खुले और उन में पर्दादार गाड़ियां बच्चियों को लाने और ले जाने के लिये रखी गईं अगर्चे उन में नाम का पर्दा था मगर ख़ैर कुछ आ़र और शर्म थी फिर वोह गाड़ियां बन्द हुईं और सिर्फ़ एक औ़रत जिस को मामां कहते थे लाने और पहुंचाने के लिये रह गई फिर वोह भी ख़त्म। सिर्फ़ येह रहा कि जवान लड़कियां बुरक़अ़ पहन कर आतीं फिर येह भी ख़त्म हुवा और आज़ादाना तौ़र से आने जाने लगीं फिर अ़क़्ल के अन्धों ने लड़कियों और लड़कों की एक ही जगह ता'लीम शुरूअ़ करा दी और शारदा एक्ट जारी कराया जिस के मा'ना येह थे की अठारह साल से पहले कोई निकाह़ न कर सके फिर लड़कियों और लड़कों को सिनेमा के इ़श्क़िया डिरामे दिखाए, बेहूदा नाविलों की रोक थाम न की जिस का मत़्लब साफ़ येह हुवा कि इन के जज़्बात को भड़काया गया और निकाह़ रोक कर भड़के हुए जज़्बात को पूरा होने से रोक दिया गया जिस का मन्शा सिर्फ़ येह है कि ह़राम कारी बढ़े क्यूं कि भड़की हुई शहवत जब ह़लाल रास्ता न पाएगी तो ह़राम की त़रफ़ ख़र्च होगी और ऐसा हो रहा है। अब इस वक़्त येह ह़ालत है कि जब स्कूलों, कॉलेजों की लड़कियां सुब्ह़ शाम ज़र्क़ बर्क़ लिबास में रास्तों से आपस में मज़ाक़ दिल लगी करती हुई, ज़ोर से बातें करती हुई, इ़त्र लगाए, दुपट्टा सर से उतारे हुए निकलती हैं तो मा'लूम होता है कि शायद हिन्द व पाक में पेरिस आ गया और दर्द

मन्द दिल रखने वाले ख़ून के आंसू रोते हैं। अक्बर इलाह आबादी ने ख़ूब फ़रमाया है :

बे पर्दा मुझ को आईं नज़र चन्द बीबियां　　अक्बर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया !
पूछा जो उन से आप का पर्दा किधर गया　　कहने लगीं कि अ़क्ल पे मर्दों की पड़ गया

कोशिश करो कि तुम्हारी लड़कियां ह़यादार और अदब वाली बनें ताकि उन की औलाद में येह औसाफ़ पाए जाएं। डॉक्टर इक़्बाल ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

बे अदब मां बा अदब औलाद जन सकती नहीं
मा'दिने ज़र मा'दिने फ़ौलाद बन सकती नहीं

याद रखो कि इस ज़माने में इन स्कूलों और कॉलेजों ने क़ौम में इन्क़िलाब पैदा कर दिया है। आज त़रीक़ा येह है कि अगर किसी क़ौम का नक़्शा बदलना हो तो उस क़ौम के बच्चों को कॉलेज की ता'लीम दिलाओ। बहुत जल्द उस की ह़ालत बदल जावेगी। अक्बर ने ख़ूब कहा है :

यूं क़त्ल से बच्चों के वोह बदनाम न होता　　अफ़्सोस कि फ़िरऔ़न को कॉलिज की न सूझी

और दोस्तो ! बा'ज़ स्कूलों और कॉलेजों के नाम में इस्लाम का नाम भी लगा होता है या'नी उन का नाम होता है इस्लामिया स्कूल, इस्लामिया कॉलेज। इस नाम से धोका न खाओ इस्लामिया स्कूल, इस्लामिया कॉलेज नाम रखना फ़क़त़ मुस्लिम क़ौम से इस्लाम के नाम पर चन्दा वुसूल करने के लिये है वरना काम सब कॉलेजों का क़रीब क़रीब यक्सां है। ग़ज़ब तो देखो कि नाम इस्लामिया स्कूल और ता'त़ील होती है इतवार के दिन। इस्लाम में तो बड़ा दिन जुमुआ़ का है। हर काम अंग्रेज़ी में, वहां के त़-लबा के अख़्लाक़ और आ़दात अंग्रेज़ी फिर येह इस्लामिया स्कूल कहां रहा ? बा'ज़ स्कूलों के नाम बजाए इस्लामिया स्कूल के मुह़म्मडन स्कूल या मुह़म्मडन कॉलेज रख दिये गए। **अल्लाह** तआ़ला ने हम मुसलमानों का नाम रखा है

"मुस्लिमीन" क़ुरआन फ़रमाता है :

هُوَسَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ (1) *अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा।*

मगर ईसाइयों की त़रफ़ से हमारा नाम मुह़म्मडन रखा गया। हम लोगों को वोही नाम पसन्द आया जो कि ईसाइयों ने हम को दिया। ग़र्ज़ कि इन स्कूलों से अपनी लड़कियों को बचाओ और अपने लड़कों को भी वहां ता'लीम ज़रूरतन दिलवाओ, मगर उन का दीन व मज़्हब संभाल कर, इस त़रह़ लड़कियों को घर जो मास्टरों से पढ़वाते हैं या ईसाई औ़रतों या लेडियों से ता'लीम दिलवाते हैं वोह सख़्त ग़-लती करते हैं बहुत जगह देखा गया कि लड़कियां मास्टरों के साथ भाग गईं और इन आवारा उस्तानियों के ज़रीए़ से हज़ारहा फ़ितने फैले। मुझे येह मा'लूम नहीं होता कि आख़िर लड़कियों को इस क़दर आ'ला ता'लीम की ज़रूरत क्या है? इन को तो वोह चीज़ें पढ़ाओ जिस से इन को काम पड़ता है। इन का सारा ख़र्चा तो शोहरों के ज़िम्मे होगा। फिर इन को इस क़दर ता'लीम से क्या फ़ाएदा है? ग़रज़ कि अपनी औलाद को दीनदार और हुनर मन्द बनाओ कि इसी में दीन दुन्या की भलाई है। अपनी लड़कियों को सिर्फ़ ख़ातूने जन्नत फ़ाति़-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलाओ। उन की पाक ज़िन्दगी का नक़्शा वोह है जो डॉक्टर इक़्बाल ने इस त़रह़ बयान फ़रमाया :

آں ادب پروردۂ شرم و حیا آسیا گرداں و لب قرآں سرا

آتشیں و نوریاں فرماں برش گم رضائش در رضاء شوھرش

हाथ में चक्की और मुंह में क़ुरआन दोनों जहान

उन की फ़रमां बरदार और वोह ख़ाविन्द की मुत़ीअ़।

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। (پ۱۷،الحج:۷۸)

ना पसन्दीदा रुसूम

हर शख़्स को एक दिन मरना और दुन्या से जाना है और क्या ख़बर है कि किस की मौत किस जगह और किस वक़्त आ जावे। इस लिये हर मुसलमान को लाज़िम है, मय्यित के ग़ुस्ल और कफ़न दफ़्न के मसाइल सीखे कि अगर किसी जगह ज़रूरत पड़ जाए तो उस का काम न रुके। हम ने आज येह समझ रखा है कि मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न सिर्फ़ मुल्लां का काम है। हमारी इस में बे इ़ज़्ज़ती है लेकिन अगर किसी का बाप या कोई क़राबत दार मर जावे और वोह अपने हाथ से उस को क़ब्र तक पहुंचाने का सामान कर दे तो इस में बे इ़ज़्ज़ती क्या होगी ? क्या बाप के मरने के बा'द उस को छूना भी बे इ़ज़्ज़ती है ?

एक मुसलमान साहिब बहादुर के वालिद का इन्तिक़ाल नई देहली में हो गया वोह ह़ज़रत पंजाब के रहने वाले थे। वहां कोई ग़ुस्ल देने वाला न मिला बहुत देर तक उन के वालिद की लाश बे ग़ुस्ल पड़ी रही। ज़िल्अ़ बदायूं में एक जगह एक शख़्स के वालिद का फ़ातिह़ा था चूंकि वोह मज्मअ़ साहिब बहादुरों का था किसी को क़ुरआने पाक पढ़ना न आता था, अब बड़ी मुश्किल पड़ी आख़िरे कार फ़ोनो ग्राफ़ में सूरए यासीन का रेकॉर्ड बजा कर उस रेकॉर्ड का षवाब मुर्दा बाप की रूह़ को पहुंचाया गया।

येह दो बातें हैं जिस पर मुसलमानों की ह़ालत पर मातम करना पड़ता है। इस लिये सब से पहले ज़रूरी है कि मौत और मीराष के ज़रूरी मस्अले मुसलमान सीखें और इन तमाम मसाइल के लिये "बहारे शरीअ़त" को मुत़ालआ़ में रखें।

हम को इस जगह उन रस्मों से गुफ़्त-गू करनी है जो मुसलमानों में ना जाइज़ या फ़ुज़ूल ख़र्चियों की पड़ी हुई हैं येह रस्में दो त़रह़ की हैं : एक तो मौत के वक़्त और दूसरी मौत के बा'द,

मौत के वक़्त की रस्में

आ़म तौ़र पर येह रवाज है कि मय्यित के मरते वक़्त जो लोग मौजूद होते हैं, वहां दुन्यावी बातें करते हैं जब इन्तिक़ाल हो जाता है तो रोने पीटने की ह़ालत में बे सब्री और बा'ज़ वक़्त कुफ़्र के कलिमे मुंह से निकाल देते हैं कि हाए ख़ुदा ने बे वक़्त मौत दे दी, म-लकुल मौत ने ज़ुल्म कर दिया, क्या हमारा ही घर मौत के लिये रह गया था वग़ैरा। मर चुकने के बा'द जो ख़्वेश व अक़रबा बाहर परदेस में होते हैं उन को तार से ख़बर देते हैं फिर उन के आने का इन्तिज़ार करते हैं। पंजाब में येह बीमारी बहुत है। मैं ने बा'ज़ जगह देखा है कि दो दिन तक लाश रखी रही। जब ख़्वेश व अक़रबा आए तब दफ़्न किया गया। फिर जिस क़ौम या जिस मह़ल्ले में मौत हो गई वहां सारी क़ौम और सारा मह़ल्ला रोटी न पकाए अब एक दिन मय्यित पड़ी रही तो ज़िन्दों की भूक के मारे आधी जान घुल गई। अब जब कि दफ़्न से फ़राग़त हो चुकी तो किसी क़राबत दार ने उन सब के लिये रोटी पकाई और रोटी पकाने पर येह ज़रूरी है कि उन तमाम लोगों के लिये खाना पकाए जिन के घर अब तक दफ़्न के इन्तिज़ार में रोटी न पकी थी या'नी सारी बिरादरी या सारे मह़ल्ले के लिये।

यू.पी. में बा'ज़ जगह देखा गया है कि मौत की रोटी मह़ल्ला दारों को रात उठा उठा कर पहुंचाते हैं अगर किसी के घर न पहुंचे तो इस की सख़्त शिकायत होती है जैसे कि शादी की रोटी की शिकायत होती है।

पंजाब में येह भी रवाज है कि मय्यित के साथ एक देग चावलों की पक कर क़ब्रिस्तान जाती है जो कि दफ़्न के बा'द वहां फु-क़रा को तक़्सीम कर दी जाती है और यू.पी. में कच्चा ग़ल्ला और पैसे ले जाते हैं जो क़ब्रिस्तान में तक़्सीम होते हैं।

इन रस्मों की ख़राबियां

इन्सान के लिये नज़्अ़ का वक़्त बहुत सख़्त वक़्त है कि उ़म्र भर की कमाई का निचोड़ इस वक़्त हो रहा है। उस वक़्त क़राबत दारों का वहां दुन्यावी बातें करना सख़्त ग़-लती है क्यूं कि इस से मय्यित का ध्यान हटने का अन्देशा है फ़क़त आंखों से आंसू बहें या मा'मूली आवाज़ मुंह से निकले और कुछ सब्र वग़ैरा के लफ़्ज़ भी मुंह से निकल जावें तो कोई ह़रज नहीं मगर पीटना, मुंह पर त़मांचा मारना, बाल नोचना, कपड़े फाड़ना, बे सब्री की बातें मुंह से निकालना नौह़ा है और नौह़ा ह़राम, नौह़ा करने वाले सख़्त गुनहगार हैं। येह समझ लो कि नौह़ा करने और नोचने, पीटने से मुर्दा वापस नहीं आ जाता बल्कि सब्र का जो षवाब मिलता है वोह भी जाता रहता है। दो ही वक़्त इम्तिह़ान के होते हैं : एक ख़ुशी का दूसरा ग़म का। जो इन दो वक़्तों में क़ाइम रहा वोह वाक़ेई मर्द है। मुसीबत के वक़्त येह ख़याल रखो कि जिस रब ने उ़म्र भर आराम दिया अगर वोह किसी वक़्त कोई रन्ज या ग़म भेज दे तो सब्र करना चाहिये। किसी क़राबत दार के आने के इन्तिज़ार में मय्यित के दफ़्न में देर लगाना सख़्त मन्अ़ है और इस में हर त़रह़ का ख़त़रा ही है अगर ज़ियादा देर रखने से मय्यित का जिस्म बिगड़ जावे या किसी क़िस्म की बू वग़ैरा पैदा हो जावे या किसी क़िस्म की ख़राबी वग़ैरा पैदा हो जावे तो इस में मुसलमान मय्यित की तौहीन है, क़राबत दार आ कर मय्यित को ज़िन्दा नहीं कर लेंगे और मुंह देख कर भी क्या करेंगे ? इस

लिये दफ़्न में जल्दी करना ज़रूरी है। चन्द चीज़ों में बिला वजह देर लगाना मन्अ़ है : लड़की की शादी, क़र्ज़ का अदा करना, नमाज़ का पढ़ना, तौबा करना, मय्यित को दफ़्न करना, नेक काम करना। किसी के मरने से महल्ले में रोटी पकाना या खाना मन्अ़ नहीं हो जाता। हां, चूंकि मय्यित के ख़ास रिश्तेदार दफ़्न में मश्ग़ूल होने और ज़ियादा रन्जो ग़म की वजह से खाना नहीं पकाते उन के लिये खाना तय्यार करना बल्कि उन्हें अपने साथ खिलाना सुन्नत है मगर ख़याल रहे कि खाना सिर्फ़ उन लोगों के लिये पकाया जाए और वोही लोग खाएं जो रन्जो ग़म की वजह से घर में न पका सकें महल्ला वालों और बिरादरी को रस्मी त़रीक़े पर खिलाना भी ना जाइज़ है और खाना भी।

ग़म और रन्ज दा'वतों का वक़्त नहीं, मय्यित के साथ देग या कुछ ग़ल्ला ले जाने में ह़रज नहीं मगर दो बातों का ज़रूर ख़याल रहे : **अव्वल** येह कि लोग इस ख़ैरात को इतना ज़रूरी न समझ लें कि न हो तो क़र्ज़ ले कर करें। अगर मय्यित के वारिषों में से कोई वारिष बच्चा हो या कोई सफ़र में हो तो मय्यित के माल से ख़ैरात न करें बल्कि कोई शख़्स अपनी त़रफ़ से कर दे। **दूसरे** येह कि क़ब्रिस्तान में तक़्सीम करते वक़्त येह ख़याल रखा जावे कि फ़ुक़रा व ग़ुरबा क़ब्रों को पाउं से न रौंदें और येह खाना या ग़ल्ला नीचे न गिरे। बेहतर तो येही है कि घर पर ही ख़ैरात कर दी जाए क्यूं कि येह देखा गया है कि ख़ैरात लेने वाले फ़ु-क़रा ग़ल्ला लेने के लिये क़ब्रों पर खड़े हो जाते हैं और चावल वग़ैरा बहुत ख़राब करते हैं।

मौत के वक़्त की इस्लामी रस्में

जांकनी की निशानी येह है कि बीमार की नाक टेढ़ी पड़ जाती है और कनपटी नीचे बैठ जाती है जब येह अ़लामत बीमार में देख ली

जाए तो फ़ौरन उस का मुंह का'बा शरीफ़ को कर दिया जाए या तो उस की चारपाई क़ब्र की त़रह़ रखी जाए या'नी शिमाल को सर और जुनूब (दक्किन) को पाउं और मय्यित को सीधी करवट पर लिटा दिया जाए मगर इस से जान निकलने में दुश्वारी होती है। बेहतर है कि मय्यित के पाउं क़िब्ले की त़रफ़ कर दिये जाएं और उस को चित लिटा दिया जाए ताकि का'बा को मुंह हो जाए करवट की ज़रूरत न रहे। चन्द जगह का'बा की त़रफ़ पाउं करना जाइज़ हैं : ﴾1﴿ लैट कर नमाज़ पढ़ते वक़्त ﴾2﴿ जान निकलने के वक़्त ﴾3﴿ मय्यित को ग़ुस्ल देते वक़्त ﴾4﴿ और क़ब्रिस्तान ले जाते वक़्त जब कि क़ब्रिस्तान मशरिक़ की त़रफ़ हो। फिर उस के पास बैठने वाले कोई दुन्यावी बात न करें और उस वक़्त ख़ुद भी न रोएं बल्कि सब लोग इस क़दर आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढ़ें कि मय्यित के कान में वोह आवाज़ पहुंचती रहे और कोई शख़्स उस वक़्त मुंह में पानी डालता रहे क्यूं कि इस वक़्त प्यास की शिद्दत होती है अगर गर्मी ज़ियादा पड़ रही हो तो कोई पंखे से हवा भी करता रहे। सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ें ताकि उस की मुश्किल आसान हो और रब तआ़ला से दुआ़ करें कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का और हम सब का बेड़ा पार लगाइयो। اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا ارْزُقْنَا حُسْنَ الْخَاتِمَةِط

जब जान निकल जाए तो किसी को रोने से न रोकें क्यूं कि ज़ियादा ग़म पर न रोना सख़्त बीमारी पैदा करता है, हां येह हुक्म दें कि नौह़ा न करें या'नी मुंह पर थप्पड़ न लगाएं और बे सब्री की बातें न बकें। ग़ुस्ल और कफ़न से फ़ारिग़ हो कर ना'त ख़्वानी करते हुए या बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ़ और कलिमए त़य्यिबा पढ़ते हुए मय्यित को ले चलें क्यूं कि आज कल अगर ज़िक्रे इलाही आवाज़ से न हो तो लोग दुन्या की बातें करते हुए जाते हैं और येह मन्अ़ है नीज़ इस ना'त ख़्वानी और दुरूद शरीफ़ की आवाज़ से घरों में लोग समझ जाते हैं कि कोई

मय्यित जा रही है तो आ कर नमाज़ और दफ़्न में शरीक हो जाते हैं। नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर कम अज़ कम तीन बार قُلْ هُوَاللّٰه और सूरए फ़लक़, सूरए नास और सूरए फ़ातिहा पढ़ कर मय्यित को षवाब बख़्शें कि जनाज़े की नमाज़ के बा'द दुआ करना सुन्नते **रसूलुल्लाह** और सुन्नते **सहाबा** है। (देखो हमारी किताब जाअल हक़) [1]

दफ़्न से फ़ारिग़ हो कर क़ब्र के सिरहाने सूरए बक़र की शुरूअ़ की आयतें مفلحون तक और क़ब्र के पाउं की तरफ़ सूरए बक़र का आख़िरी रुकूअ़ पढ़ कर मय्यित को षवाब बख़्शें। जब दफ़्न से फ़ारिग़ हो कर लोग लौट जावें तब क़ब्र के सिरहाने की तरफ़ खड़े हो कर अज़ान कह दें तो अच्छा है कि इस से अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात है और मुर्दे को नकीरैन के सुवालात का जवाब भी याद आ जाएगा फिर क़राबत दार मय्यित के सिर्फ़ घर वालों को खाना खिला दें बल्कि बेहतर येह है कि पका कर लाने वाला ख़ुद भी उन के साथ ही खावे और उन को मजबूर कर के खिलावे।

मौत के बा'द की मुरव्वजा रस्में

मौत के बा'द हर अ़लाक़े में अ़लाहिदा अ़लाहिदा रस्में होती हैं मगर कुछ रस्में ऐसी हैं जो थोड़े फ़र्क़ से हर जगह अदा की जाती हैं उन का ही हम यहां ज़िक्र करते हैं : दुल्हन का कफ़न मैके से आता है या'नी या तो उस के मां बाप कफ़न ख़रीद कर लाते हैं या बा'द को उस की क़ीमत देते हैं। इसी तरह दफ़्न और तक़रीबन मौत का तीन दिन तक का सारा ख़र्चा मैके वाले करते हैं। दुल्हन की औलाद का कफ़न भी मैके वालों की तरफ़ से होना ज़रूरी है। तीन दिन मय्यित वालों के घर क़राबत दारों और ख़ास कर सम्धियाने से खाना आना ज़रूरी है और खाना भी इतना ज़ियादा लाना पड़ता है कि सारे कुम्बे बल्कि सारी

1..... जाअल हक़, हिस्सा अव्वल, स. 223

बिरादरी को काफ़ी हो। छ वक़्त खाना भेजना पड़ता है। अगर पच्चीस पच्चीस आदमियों का हर वक़्त खाना पकाया गया तो इस क़हत़ साली के ज़माने में कम अज़ कम पचास रुपिया ख़र्च हुवा। फिर जब ख़ैर से येह तीन दिन गुज़र गए तो अब मय्यित वालों के ज़िम्मे लाज़िम है कि तीसरे दिन तीजा (सोयम) करे जिस में सारी बिरादरी बल्कि सारी बस्ती की रोटी करे जिस में अमीर व ग़रीब, दौलत मन्द लोग ज़रूर शरीक हों और ग़ज़ब येह कि बहुत जगह येह बिरादरी की दा'वत ख़ुद मय्यित के माल से होती है ह़ालां कि मय्यित के छोटे यतीम बच्चे, बेवा और ग़रीब बूढ़े मां बाप भी होते हैं मगर उन सब के मुंह से येह पैसा निकाल कर इस मेले को खिलाया जाता है। मौत के बा'द तीन दिन तक मय्यित के घर वाले ता'ज़िय्यत के लिये बैठते हैं। जहां बजाए दुआ़ और ता'ज़िय्यत के हुक़्क़े के दौर चलते हैं कुछ क़ुरआने करीम पढ़ कर बख़्शते भी हैं तो इस त़रह़ कि हुक़्क़ा मुंह में है और हाथ उठे हुए हैं फिर चालीस रोज़ तक बराबर दो रोटियां हर रोज़ ख़ैरात की जाती हैं और इस के दरमियान दसवां, बीसवां और चालीसवां बड़ी धूमधाम से होता रहता है जिस में बिरादरी की आ़म दा'वतें होती हैं और फ़ातिह़ा के लिये हर क़िस्म की मिठाइयां और फ़्रूट (मेवे) और कम अज़ कम एक उ़म्दा कपड़ों का जोड़ा रखा जाता है। फ़ातिह़ा के बा'द वोह मिठाइयां और फ़्रूट तो घर के बच्चों में तक़्सीम किया जाता है और कपड़ों का जोड़ा ख़ैरात होता है। फिर छ माह के बा'द छ माही और साल बा'द मय्यित की बरसी होती है। इस बरसी में भी बिरादरी और बस्ती की रोटी की जाती है।

लो, साह़िब ! आज इन रस्मों से पीछा छूटा, बा'ज़ जगह देखा गया है कि कफ़न पर एक निहायत ख़ूब सूरत रेशमी या ऊनी चादर डाली जाती है जो बा'दे दफ़्न ख़ैरात होती है मगर दोस्तो ! येह भी ख़याल रहे कि निनानवे फ़ी सदी येह रस्में अपने नाम और शोहरत के लिये होती हैं। अगर येह काम न होंगे तो नाक कट जाएगी।

इन रस्मों की ख़राबियां

शरीअ़त में कफ़न उस के ज़िम्मे है जिस के ज़िम्मे उस की ज़िन्दगी का ख़र्चा है लिहाज़ा हर जवान, मालदार मर्द का कफ़न उस के अपने माल से दिया जाना चाहिये और छोटे बच्चों का कफ़न उस के मां बाप के ज़िम्मे है। इसी त़रह़ अगर बीवी का इन्तिक़ाल रुख़्सत से पहले हो गया तो बीवी के बाप के ज़िम्मे है। अगर रुख़्सत के बा'द इन्तिक़ाल हुवा तो शोहर के ज़िम्मे। शोहर के होते हुए उस के बाप भाई से जबरन कफ़न लेना ज़ुल्म है और सख़्त मन्अ़। सुन्नत येह है कि मय्यित के पड़ोसी या क़राबत दार मुसलमान सिर्फ़ एक दिन या'नी दो वक़्त खाना मय्यित के घर भेजें और वोह खाना सिर्फ़ उन लोगों के लिये हो जो ग़म या मश्ग़ूलिय्यत की वजह से आज पका न सके। आ़म मह़ल्ले वालों और बिरादरी को उस खाने का ह़क़ नहीं, उन के लिये येह खाना सख़्त मन्अ़ है। हां मय्यित के घर जो मेहमान बाहर से आए हैं उन को इस खाने से खाना जाइज़ है। एक दिन से ज़ियादा खाना भेजना मन्अ़ है। मय्यित वालों के घर तीजा और चालीसवां की रोटी कराना और उस से बिरादरी की रोटी लेना ह़राम व मकरूहे तह़रीमी है। लिहाज़ा येह मुरव्वजा तीजा, दसवां, चालीसवां, छ माही, बरसी की बिरादरी की दा'वतें खिलाने वाले और खाने वाले दोनों गुनहगार हैं येह खाना सिर्फ़ ग़रीबों फ़क़ीरों का ह़क़ है क्यूं कि येह स-दक़ा व ख़ैरात है और अगर मय्यित का कोई वारिष बच्चा है या सफ़र में है तो बिग़ैर तक़्सीम किये हुए उस का माल ख़ैरात करना भी ह़राम है कि न येह फ़क़ीरों को जाइज़ और न मालदारों को, लिहाज़ा या तो कोई वारिषे ख़ास अपने माल से येह ख़ैरात करे या पहले मय्यित का माल तक़्सीम कर लें फिर ना बालिग़ और ग़ाइब का ह़िस्सा निकाल कर ह़ाज़िर बालिग़ वारिष अपने ह़िस्से से करें इन दा'वतों का येह शरई हुक्म था। अब दुन्यावी ह़ालत

पर नज़र करो तो आप को मा'लूम होगा कि इन तीजा, चालीसवां और बरसी की रस्मों ने कितने मुसलमानों के घर तबाह कर दिये, मेरे सामने बहुत सी ऐसी मिषालें हैं कि मुसलमानों की दुकानें, जाएदादें और मकानात चालीसवां और तीजा खा गया। आज वोह ठोकरें खाते फिर रहे हैं। एक साहि़ब ने बाप के चालीसवें के लिये एक बनिये (किराड़) से चार सो रुपै क़र्ज़ लिये थे। सत्ताईस सो रुपिया अदा कर चुके मगर क़र्ज़ ख़त्म नहीं हुवा। फिर लुत्फ़ येह है कि इस तीजे और चालीसवें की रस्मों से सिर्फ़ एक ही घर तबाह नहीं होता बल्कि दुल्हन के मैके वाले भी साथ तबाह होते हैं। या'नी

ع *हम तो डूबे हैं सनम, तुम को भी ले डूबेंगे*

क्यूं कि क़ाइदा येह होता है अगर तीजा मय्यित वाला करे तो चालीसवें की रोटी उस के सम्धियाने वाले करें, मेरे इस कलाम का तजरिबा उन को ख़ूब हुवा होगा कि जिन को कभी इन रस्मों से वासित़ा पड़ा हो। देखा गया है कि मय्यित का दम निकला और मह़ल्ले वाली औ़रतों मर्दों ने घर घेर लिया, अव्वल तो पानदान के टुकड़े उड़ा दिये। अब सब लोग जम्अ़ हैं खाना आने का इन्तिज़ार है। बेचारा मय्यित वाला मुसीबत का मारा अपना ग़म भूल जाता है येह फ़िक्र पड़ जाती है कि इस मेले का पेट किस त़रह़ भरूं फिर जब तक इस बेचारे का दीवालिया नहीं निकल जाता येह मेला नहीं हटता। लिहाज़ा ऐ मुसलमानो ! इन ना जाइज़ और ख़राब रस्मों को बिल्कुल बन्द कर दो।

मौत के बा'द की इस्लामी रस्में

कफ़न दफ़्न का सारा ख़र्चा या तो ख़ुद मय्यित के माल से हो और अगर किसी की बीवी या बच्चा मरा है तो शोहर या बाप के माल से हो मैके से हरगिज़ हरगिज़ न लिया जाए। मय्यित के माल से करें।

इन दा'वतों का येह शरई हुक्म है। किसी से हरगिज़ हरगिज़ न लिया जाए। मय्यित वालों के घर पड़ोसी या क़राबत दार, सिर्फ़ एक दिन खाना ले जाएं और वोह भी इतना, जितना कि ख़ालिस घर वालों या उन के परदेसी मेहमानों को काफ़ी हो और इस में सुन्नत की निय्यत करें न कि दुन्यावी बदला और नाम व नुमूद की। अगर तीन रोज़ तक ता'ज़िय्यत के लिये मय्यित वाले मर्द किसी जगह बैठें तो कोई ह़रज नहीं मगर इस में हुक़्क़े का दौर बिल्कुल न हो बल्कि आने वाले फ़ातिह़ा पढ़ते आवें और सब्र की हिदायत करते जावें। तीन दिन के बा'द ता'ज़िय्यत के लिये कोई न बैठे और न कोई आए हां जो परदेसी क़राबत दार सफ़र से आए तो जब भी पहुंचे मय्यित वालों की ता'ज़िय्यत करे या'नी पुरसा दे। औ़रतें जब किसी के घर पुरसा देने आती हैं तो ख़्वाह म ख़्वाह मय्यित वालों से मिल कर रोती हैं। चाहे आंसू न आवें, मिल कर आवाज़ निकालना ज़रूरी होता है। येह बिल्कुल ग़लत़ त़रीक़ा है। उन को सब्र की तल्क़ीन करो और दसवां और चालीसवां और बरसी वग़ैरा ज़रूर करना चाहिये मगर इस में दो बातों का ख़याल ज़रूर रहे एक तो येह कि जहां तक हो सके मय्यित के माल से न करें। अगर कोई वारिष बच्चा है तब उस के ह़क़ से येह ख़ैरात करना ह़राम है। लिहाज़ा कोई क़राबत दार खाना पीना वग़ैरा अपने माल से करे और दूसरे येह कि खाना सिर्फ़ फ़ुक़रा और ग़ुरबा को खिलाया जाए। आ़म बिरादरी की रोटी हरगिज़ हरगिज़ न की जाए और फ़ुक़रा पर इस क़दर ख़र्च किया जाए जितनी हैषिय्यत हो क़र्ज़ ले कर तो ह़ज और ज़कात देना भी जाइज़ नहीं। येह स-दक़ा वग़ैरा से बढ़ कर नहीं। इस की पूरी तह़क़ीक़ के लिये आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ की किताब **"जलिय्युस्सौति लि नह्यिद्दा'वति अ़न अहलिल मौत"** (1) देखो बल्कि देखने वालों से

---

(1)..... फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द चहारुम मत़बूआ मक-तबए र-ज़विय्या में इस रिसाले का नाम "" लिखा है।

हम को मा'लूम हुवा है कि आ'ला ह़ज़रत फ़ाज़िले बरेल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जब किसी के यहां पुरसा देने जाते तो उस के घर हुक़्क़ा, पानी भी इस्ति'माल न करते थे। किसी ने अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रत येह तो दा'वत नहीं फ़क़त़ एक तवाज़ोअ़ है येह क्यूं नहीं इस्ति'माल फ़रमाते ? तो फ़रमाया कि ज़ुकाम को रोको ताकि बुख़ार से अम्न रहे।

हमारी इस गुज़ारिश का मक़्सद येह नहीं कि तीजा, दसवां, चालीसवां वग़ैरा न करो। येह तो देवबन्दी या वहाबी कहेगा। मक़्सद येह है कि इस को औलिया के नाम व नुमूद के लिये न करो बल्कि ना जाइज़ और फ़ुज़ूल रस्मों को इस से निकाल दो। ह़क़ तआ़ला तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमावे। आमीन

मीराष

इस्लामी क़ानून में मुसलमानों की सारी औलाद या'नी लड़के लड़कियां अपने मां बाप के मरने के बा'द उस के माल से मीराष लेते हैं। लड़के को लड़की से दो गुना ह़िस्सा मिलता है मगर हिन्दूओं, आर्यों के धर्म में लड़की बाप के माल से मह़रूम होती है और सब माल लड़का ही लेता है येह साफ़ ज़ुल्म है। जब दोनों एक ही बाप की औलाद हैं तो एक को मीराष देना और एक को न देना इस के क्या मा'ना ? लेकिन काठियावाड़ और पंजाब के मुसलमानों ने अपने लिये येह हिन्दवानी क़ानून क़बूल किया है और हुकूमत को लिख कर दे दिया है कि हम को हिन्दवानी क़ानून मन्ज़ूर है जिस के मा'ना येह हुए कि हम ज़िन्दगी में तो मुसलमान हैं और मरने के बा'द نَعُوْذُ بِاللّٰه हिन्दू। याद रखो ! क़ियामत में इस का जवाब देना पड़ेगा।

अगर इस्लाम के इस क़ानून से नाराज़ी है तो कुफ़्र है और अगर इस को ह़क़ जान कर इस पर अ़मल न किया तो ह़क़ त-लफ़ी और ज़ुल्म है। लड़के तुम को क्या बख़्श देते हैं और लड़कियां क्या छीन लेती हैं ? जब तुम मर ही गए तो अब तुम्हारा माल कोई भी ले तुम को

क्या ? तुम बेटे की महब्बत में अपनी आख़िरत क्यूं तबाह करते हो ? तुम्हारा येह ख़याल भी ग़लत़ है कि लड़की तुम्हारा माल बरबाद कर देगी। हम ने तो येह देखा है कि अपने बाप की चीज़ का दर्द जितना लड़की को होता है उतना लड़के को नहीं होता। एक जगह लड़कों ने अपने बाप का मकान फ़रोख़्त किया लड़के तो ख़ुशी से फ़रोख़्त कर रहे थे मगर लड़की बहुत रोती चिल्लाती थी कि येह मेरे मरे बाप की निशानी है। इस को देख कर अपने बाप को याद कर लेती हूं मैं अपना हिस्सा फ़रोख़्त न करूंगी। उस के रोने से देखने वाले भी रोने लगे और बूढ़ापे में जितनी मां बाप की ख़िदमत लड़की करती है उतनी ख़िदमत लड़का नहीं करता फिर इस ग़रीब को क्यूं महरूम करते हो ? लड़के तो मरने के बा'द क़ब्र पर फ़ातिहा को भी नहीं आते लिहाज़ा ज़रूरी है कि लड़की और लड़के को पूरा हिस्सा दो। काठियावाड़ में एक क़ौम है आग़ाख़ानी ख़ोजा। अगर इन के दो बेटे हों तो एक का नाम क़ासिम भाई और दूसरे का नाम राम ला'ल या मूलजी और कहते हैं कि अगर क़ियामत के दिन मुसलमानों की बख़्शिश हुई तो क़ासिम भाई बख़्शवा लेगा और अगर हिन्दूओं की नजात हुई तो राम ला'ल हाथ पकड़ेगा। क्या येह ही हम ने भी समझ रखा है कि ज़िन्दगी में इस्लामी काम करें और मीराष में हिन्दूओं के क़ानून इख़्तियार करें ताकि दोनों क़ौमें ख़ुश रहें ?

अगर मुसलमानों को येही फ़िक्र है कि हमारी औलाद हमारा माल बरबाद कर देगी तो चाहिये कि अपनी जाएदाद, मकानात, दुकानें वग़ैरा अपनी औलाद पर वक़्फ़ करें। इस का फ़ाएदा येह होता है कि हमारे बा'द हमारी औलाद हमारी जाएदाद और मकानात से हर त़रह नफ़्अ़ उठाए और उस में रहे। उस का किराया खाए और हिस़्सए रसद किराया को आपस में तक़्सीम करे मगर इस को रहन (गिरवी) न कर

सके, उस को बेच न सके। इस से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी जाएदाद और मकानात मह़फ़ूज़ हो जाएंगे किसी के हाथ फ़रोख़्त न हो सकेंगे और तुम गुनाह से भी बच जाओगे। अगर मुसलमान इस क़ानून पर अ़मल करते तो आज इन की जाएदादें, हिन्दूओं के पास न पहुंच जातीं। वक़्फ़ अ़लल औलाद करने का त़रीक़ा किसी आ़लिम से पूछ लेना चाहिये और मीराष के लिये हम ने एक किताब उर्दू ज़बान में लिख दी है जिस का नाम है "**इल्मुल मीराष**" उस का मुत़ालआ़ करो।

हमारे बा'ज़ दोस्तों की फ़रमाइश थी कि किताब के आख़िर में फ़ाएदे मन्द वज़ीफ़े और आ'माल रोज़ाना पढ़ने के भी और मु-तबर्रक तारीख़ों और बड़ी रातों के भी बयान कर दिये जाएं। क्यूं कि लोग इन से बे ख़बर हैं। मैं मुसलमानों के फ़ाएदे के लिये वोह आ'माल जो कि بفضلہ تعالی सो फ़ीसदी काम्याब हैं और जिस की मुझ को मेरे वलिय्ये ने'मत, मुर्शिदे बरह़क़, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन साहिब क़िब्ला دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ القدسیہ की त़रफ़ से इजाज़त है ख़ास **लि वज्हिल्लाह** बताता हूं और सुन्नी मुसलमानों को इन की इजाज़त देता हूं।

नोट ज़रूरी : हर अ़मल की काम्याबी की दो शर्तें हैं :

अव्वल : आ़मिल का सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी होना और हर बद मज़्हब ख़ुसूसन देवबन्दी और वहाबी की सोह़बत से बचना।

दूसरे : शरई अह़काम ख़ुसूसन नमाज़ रोज़े का सख़्ती से पाबन्द होना। मरीज़ अगर दवा करे मगर परहेज़ न करे तो दवा फ़ाएदा नहीं पहुंचाती। इसी त़रह़ अगर इन मज़कूरा आ'माल का करने वाला येह दो परहेज़ न करेगा तो काम्याब न होगा। दो त़रह़ के वज़ीफ़े बयान करता हूं एक तो रोज़ाना या किसी ख़ास मौक़अ़ पर पढ़ने के, दूसरे ख़ास रातों और मु-तबर्रक तारीख़ों में पढ़ने के लिये।

सुब्ह़ व शाम

नमाज़े फ़ज्र और नमाज़े मग़रिब के बा'द हर रोज़ तीन बार येह दुआ़ पढ़े अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़

اَعُوْذُ بِكَلِمٰتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (1)

फिर येह पढ़े (2) سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ख़ुदा ने चाहा तो ज़हरीले जानवरों सांप, बिच्छू वग़ैरा से मह़फ़ूज़ रहेगा। निहायत मुजर्रब है।

रोज़ाना सुब्ह़ फ़ज्र की सुन्नतें अपने घर पढ़े और सुन्नतों के बा'द अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ तीन तीन बार दरमियान में 70 बार (3) اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّىْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ पढ़े, घर में बहुत ब-रकत रहेगी और सब घर वालों में इत्तिफ़ाक़ بفضلہ تعالٰی होगा मगर शर्त़ येह है कि मर्द सुन्नते फ़ज्र के बा'द फ़र्ज़ मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़े।

खाना खाने के वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (4)

1.... तर्जमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، احادیث شتی، باب فی الاستعاذة، الحدیث:٣٦١٦، ج٥، ص٣٤٦)

2.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : नूह पर सलाम हो जहांन वालों में। (پ٢٣، الصّٰفّٰت:٧٩)

3.... तर्जमा : मैं अल्लाह से मुआफी मांगता हू जो मेरा परवर्द गार है हर गुनाह से और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।

4.... तर्जमा : अल्लाह तआला के नाम से, जिस के नाम की ब-रकत से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोही सुनता जानता है।

जब खाना सामने आ जावे तब येह पढ़ कर खाए, रब ने चाहा तो वोह खाना नुक़्सान न करे, दवा पर भी येही दुआ़ पढ़ लेनी चाहिये।

दुश्मनों के शर से बचने के लिये

रोज़ाना सुब्ह़ व शाम अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर 3 बार येह दुआ़ पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَآءِ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ [(1)]

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मनों के शर से मह़फ़ूज़ रहेगा।

सफ़र को जाते वक़्त

जब घर से सफ़र के लिये निकले तो अगर कराहत का वक़्त न हो (नफ़्ल की कराहत का वक़्त फ़ज्र और अ़स्र के बा'द और दो पहर में है) तो दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ सफ़र की निय्यत से पढ़ ले। हर रक्अ़त में तीन तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़े और बा'द को येह दुआ़ पढ़े :

اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ [(2)]

रब ने चाहा तो ब ख़ैरियत घर वापस आएगा और सब को ख़ैरियत से पाएगा और अगर उस वक़्त नफ़्ल मक्रूह हो तो भी मह़ल्ले की मस्जिद में आ जाए और येह दुआ़ पढ़े।

1.... तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से जो तमाम नामों से बेहतर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, जिस के नाम से कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाती न ज़मीन में और न आस्मान में।

2.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जिस ने तुम पर क़ुरआन फ़र्ज़ किया वोह तुम्हें फैर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो। (پ ۲۰، القصص:۸۵)

सुवारी पर सुवार होते वक़्त

अगर घोड़ा तांगा, रेल मोटर वग़ैरा ख़ुश्की की सुवारी पर सुवार हो तो येह पढ़ कर बैठे :

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہٗ مُقۡرِنِیۡنَ وَ اِنَّاۤ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ (1)

اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उस सुवारी में कोई तक्लीफ़ न पहुंचेगी, हर मुसीबत से मह़फ़ूज़ रहेगा और दरिया की सुवारी या'नी किश्ती, जहाज़ वग़ैरा में बैठते वक़्त येह दुआ पढ़ ले :

بِسۡمِ اللّٰہِ مَجۡرٖىھَا وَ مُرۡسٰىھَا ؕ اِنَّ رَبِّیۡ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ (2)

اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ डूबने से बचेगा।

रात को सोते वक़्त

﴾1﴿ अगर सोते वक़्त आ-यतुल कुर्सी पढ़ ले तो रात भर वोह मकान चोरी आग और ना गहानी आफ़ात से मह़फ़ूज़ रहेगा और पढ़ने वाला बद ख़्वाबी और जिन्नात के ख़लल से बचा रहेगा। हर नमाज़ के बा'द आ-यतुल कुर्सी पढ़ने से اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ख़ातिमा बिलख़ैर होगा।

﴾2﴿ जो शख़्स सोते वक़्त पांचवां कलिमा और قُلۡ یٰۤاَیُّھَا الۡکٰفِرُوۡنَ एक एक दफ़्आ पढ़ कर सोया करे तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मरते वक़्त कलिमा नसीब होगा मगर चाहिये कि इस के बा'द कोई दुन्यावी बात न करे अगर बात करनी पड़ जाए तो दोबारा इस को पढ़ ले।

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है। (پ۲۵، الزخرف:۱۳،۱۴)

2.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला महरबान है। (پ۱۲، ھود:۴۱)

हर नमाज़ के बा'द

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ आख़िर रुकूअ़ तक [1] पढ़ लिया जावे तो ग़ैब से रोज़ी मिलेगी और बहुत ब-रकत होगी।

मुसीबत ज़दा को देख कर

बीमार, क़र्ज़दार और किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह दुआ़ पढ़नी चाहिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا [2]

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मुसीबत अपने को कभी न आएगी। [3] निहायत मुजर्रब है।

बारह महीनों की मुतबर्रक तारीख़ों के वज़ीफ़े और अ़मलियात

दसवीं मुह़र्रम (आ़शूरा)

मुह़र्रम की नवीं और दसवीं को रोज़ा रखे तो बहुत षवाब पावेगा। बाल बच्चों के लिये दसवीं मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-रकत रहेगी। बेहतर है कि ह़लीम (खिचड़ा) पका कर ह़ज़रत शहीदे करबला इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब है इसी तारीख़ को ग़ुस्ल

---

1 ......(پ ۱۱،التوبة:۱۲۸،۱۲۹)

2 ....तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आफ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी।

3 ......سنن الترمذی، كتاب الدعوات، باب مايقول اذا رأى مبتلى، الحديث:۳٤٤۳، ج٥، ص۲۷۳

करे तो तमाम साल اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالٰی ! बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूं कि इस दिन आबे ज़मज़म तमाम पानियों में पहुंचता है।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, पारह बारह, आयत क़िस्सए नूह़) (1)

इसी दसवीं मुह़र्रम को जो सुरमा लगाए तो اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالٰی साल भर तक उस की आंखें न दुखें। (درمختار،کتاب الصوم)(2)

रबीउ़ल अव्वल का मीलाद शरीफ़

रबीउ़ल अव्वल बारहवीं तारीख़ हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते पाक की ख़ुशी में रोज़ा रखना षवाब है मगर बेहतर है कि दो रोज़े रखें और इस महीने में मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ करने से तमाम साल घर में ब–र–कतें और हर त़रह़ का अम्न रहता है। (रूहुल बयान, ज़ेरे आयत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह) (1)

इस का बहुत तजरिबा किया गया है और ग्यारहवीं, बारहवीं तारीख़ों की दरमियानी रात को तमाम रात जागे, इस रात में गु़स्ल करे, नए कपड़े बदले, ख़ुश्बू लगाए, विलादते पाक की ख़ुशी करे और बिल्कुल ठीक सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त क़ियाम और सलाम करे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो भी नेक दुआ़ मांगे क़बूल होगी, बहुत मुजर्रब है। ए'तिक़ाद शर्त़ है। ला दवा मरीज़ और बहुत मुसीबत ज़दों पर आज़माया गया, दुरुस्त पाया मगर क़ियाम और सलाम का वक़्त निहायत सह़ीह़ हो।

---

1 ......تفسیرروح البیان،الجزء۱۲،ھود،تحت الآیۃ:۴۸،ج۴،ص۱۴۲

2 ......الدرالمختار،کتاب الصوم،باب مایفسدالصوم...الخ،مطلب فی حدیث التوسعۃ...الخ، ج۳،ص۴۵۷

3 ......تفسیرروح البیان،الجزء۲۶،الفتح،تحت الآیۃ:۲۹،ج۹،ص۵۷

रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं शरीफ़

इस महीने में हर मुसलमान अपने घर में हुज़ूरे ग़ौषे पाक सरकारे बग़दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ातिह़ा करे। साल भर तक बहुत ब–रकत रहेगी अगर हर चांद की ग्यारहवीं शब को या'नी दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ की दरमियानी रात को मुक़र्रर पैसों की शीरीनी मुसलमान की दुकान से ख़रीद कर पाबन्दी से ग्यारहवीं की फ़ातिह़ा दिया करे तो रिज़्क़ में बहुत ही ब–रकत होगी और اِنْ شَاءَاللّٰہ تعالی कभी परेशान ह़ाल न होगा मगर शर्त़ येह है कि कोई तारीख़ नाग़ा न करे और जितने पैसे मुक़र्रर कर दे उस में कमी न हो उतने ही पैसे मुक़र्रर करे जितने की पाबन्दी कर सके। ख़ुद मैं इस का सख़्ती से पाबन्द हूं और بفضلہ تعالی इस की ख़ूबियां बे शुमार पाता हूं। وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ

रजब

रजब के महीने में तेरहवीं, चौदहवीं और पन्दरहवीं तारीख़ को रोज़े रखे इन को "हज़ारी रोज़ा" कहते हैं क्यूं कि इन रोज़ों का षवाब मशहूर येह है कि एक हज़ार रोज़ों के बराबर है।

बाईसवीं रजब को इमामे जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ातिह़ा करे, बहुत अड़ी हुई मुसीबतें टल जाती हैं।

सत्ताईसवीं रजब को मे'राजुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशी में जल्से करें, ख़ुशियां मनाएं रात को जाग कर नवाफ़िल पढ़ें, पंजाब में रजब के महीने में ज़कात निकालते हैं लेकिन ज़रूरी येह है कि जब माल

का साल पूरा हो जाए फ़ौरन ज़कात निकाल दे रजब का इन्तिज़ार न करे हां साल पूरा हो जाने से पहले भी निकाल सकता है और अगर र-मज़ान में ज़कात निकाले तो ज़ियादा बेहतर है क्यूं कि र-मज़ान में नेक कामों का षवाब ज़ियादा है।

शा'बान, शबे बराअत

इस महीने की पन्दरहवीं रात जिस को शबे बराअत कहते हैं बहुत मुबारक रात है। इस रात में क़ब्रिस्तान जाना, वहां फ़ातिहा पढ़ना सुन्नत है, इसी त़रह़ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर हाज़िर होना भी षवाब है अगर हो सके तो चौदहवीं और पन्दरहवीं तारीख़ को रोज़े रखे। पन्दरहवीं तारीख़ को हल्वा वग़ैरा बुज़ुर्गाने दीन की फ़ातिहा पढ़ कर स-दक़ा व ख़ैरात करे और पन्दरहवीं रात को सारी रात जाग कर नफ़्ल पढ़े और इस रात को हर मुसलमान एक दूसरे से अपने क़ुसूर मुआफ़ करा लें, क़र्ज़ वग़ैरा अदा करें क्यूं कि बुग़्ज़ वाले मुसलमान की दुआ क़बूल नहीं होती और बेहतर येह है कि सो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े दो दो रक्अ़त की निय्यत बांधे और हर रक्अ़त में एक एक बार सूरए फ़ातिहा पढ़ कर ग्यारह ग्यारह मरतबा ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'' पढ़े तो रब तआ़ला उस की तमाम ह़ाजतें पूरी फ़रमावे और उस के गुनाह मुआफ़ फ़रमावे।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, सूरए दुखान) (1)

और अगर तमाम रात न जाग सके तो जिस क़दर हो सके इबादत करे और ज़ियाराते क़ुबूर करे (औ़रतों को क़ब्रिस्तान जाना मन्अ़ है)

---

1 ......تفسیرروح البیان،الجزء۲۵،الدخان،تحت الآیۃ:۳،ج۸،ص۴۰۳،ملخصاً

लिहाज़ा वोह सिर्फ़ नवाफ़िल और रोज़े अदा करें। अगर इस रात को सात पत्ते बैरी के पानी में जोश दे कर गुस्ल करे तो اِنْ شَاءَاللّٰهُ الْعَزِيْز तमाम साल जादू के अषर से महफ़ूज़ रहेगा।

माहे र-मज़ान

येह वोह मुबारक महीना है जिस का हर हर मिनट ब-रकतों से भरा हुवा है इस में हर वक़्त इबादत की जाती है, दिन को रोज़ा और तिलावते कुरआने पाक और रात तरावीह़ और सह़री में गुज़रती है। मगर इस माह में एक रात बड़ी ही मुबारक है। दिन तो जुमुअ़तुल वदाअ़ का दिन और रात सत्ताईसवीं रात, इस के कुछ अ़मल बताए जाते हैं :

र-मज़ान शरीफ़ की सत्ताईसवीं रात ग़ालिबन शबे क़द्र है। इस रात को जाग कर गुज़ारे अगर तमाम रात न जाग सके तो सह़री खा कर न सोए और येह दुआ़ ज़ियादा मांगे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ (1)

और अगर हो सके तो सो रक्अ़त नफ़्ल दो दो की निय्यत से पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ (الخ) एक बार और "قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ" तीन तीन बार पढ़ ले और हर सलाम पर कम अज़ कम दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता जाए और बेहतर येह है कि इसी सत्ताईसवीं शब को तरावीह़ का ख़त्मे कुरआन भी किया जाए।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, सूरए क़द्र) (2)

1....तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से आ़फ़िय्यत मांगता हूं दीन व दुन्या और आख़िरत की।

2......تفسير روح البيان،الجزء٣٠،القدر،تحت الآية:٣،ج١٠،ص٤٨٣

जुमुअ़तुल वदाअ़ में नमाज़ क़ज़ा उ़म्री पढ़े। इस का त़रीक़ा येह है कि जुमुअ़तुल वदाअ़ के दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान बारह रक्अ़त नफ़्ल दो दो रक्अ़त की निय्यत से पढ़े और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द एक बार आ–यतुल कुर्सी और तीन बार "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" और एक एक बार फ़लक़ और नास पढ़े। इस का फ़ाएदा येह है कि जिस क़दर नमाज़ें इस ने क़ज़ा कर के पढ़ी होंगी उन के क़ज़ा करने का गुनाह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ हो जाएगा। येह नहीं कि क़ज़ा नमाज़ें इस से मुआ़फ़ हो जाएंगी वोह तो पढ़ने से ही अदा होंगी। ईद, बक़र ईद की रातों में इ़बादत करना षवाब है।

जो कोई इस किताब से फ़ाएदा उठाए तो मुझ फ़क़ीरे बे नवा के लिये दुआ़ करे कि रब तआ़ला **ईमान पर ख़ातिमा** नसीब फ़रमाए

اٰمِیْن وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِہٖ وَ نُوْرِ عَرْشِہٖ سَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا
مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ بِرَحْمَتِہٖ وَ ھُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ

जन्नत से महरूम

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ *से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम* صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :* لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ *या'नी चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।*

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 1283, ब ह़वाला صحیح البخاری،ص۱۲ ۵،حدیث:۶۰۵۶*)*

ज़मीमा इस्लामी ज़िन्दगी

मुसलमान और बेकारी

मुसलमानों को बरबाद करने वाले अस्बाब में से बड़ा सबब इन के जवानों की बेकारी और बच्चों की आवारगी है। पाकिस्तान के मुसलमानों पर अख़राजात ज़ियादा और आमदनी के ज़रीए़ मह़दूद बल्कि क़रीबन नाबूद हैं, यक़ीन करो, बेकारी का नतीजा नादारी है। नादारी का अन्जाम क़र्ज़दारी और क़र्ज़दारी का अन्जाम ज़िल्लतो ख़्वारी है बल्कि सच तो येह है कि नादारी व मुफ़्लिसी सदहा ऐ़बों की जड़ है। चोरी, डकैती, भीक, बद मआ़शी, जा'लसाज़ी, इस की शाख़ें हैं और जेल फांसी इस के फल, मुफ़्लिस की बात का वज़्न ही नहीं होता। पेशावर वाइज़ और उ़-लमा को बदनाम करने वाले मुहज़्ज़ब भिकारी आ'ला द-रजे का वा'ज़ कह कर जब अख़ीर में कह दें कि भाइयो ! मेरे पास किराया नहीं, मैं मुफ़्लिस हूं, मेरी मदद करो, इन दो लफ़्ज़ों से सारा वा'ज़ बेकार हो जाता है।

भीक वोह खटाई है जो वा'ज़ के सारे नशे को उतार देती है। ह़क़ तो येह है कि मुफ़्लिस की न नमाज़ इत़्मीनान की न रोज़ा, ज़कात व ह़ज का तो ज़िक्र ही क्या। येह इबादतें उसे नसीब ही कैसे हों। शैख़ सा'दी علیہ رحمۃ ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

غم اهل و عیال و جامه و قوت   بازت آرد ز سیر در ملکوت!

شب چو عقد نماز بر بندم   چه خورد بامداد فرزندم

या'नी बीवी बच्चों और रोटी कपड़े का ग़म आ़बिद साह़िब को म-लकूत की सैर से नीचे उतार लाता है, नमाज़ की निय्यत बांधते ही ख़याल पैदा होता है कि सुब्ह़ बच्चे क्या खाएंगे।

इस लिये मुसलमानों को चाहिये की बेकारी से बचें, अपने बच्चों को आवारा न होने दें और जवानों को काम पर लगाएं दूसरी क़ौमों से सबक़ लें देखो हिन्दूओं के छोटे बच्चे या स्कूल व कॉलेज में नज़र आएंगे या ख़्वान्चा बेचते। मुसलमानों के बच्चे या पतंग उड़ाते दिखाई देंगे या गेंद बल्ला खेलते, दीगर क़ौमों के जवान कचहरियों, दफ़्तरों और उ़म्दा उ़म्दा ओ़हदों की कुरसियों पर दिखाई देंगे या तिजारत में मश्ग़ूल नज़र आएंगे मगर मुसलमानों के जवान या फ़ेशनेबल और ऐ़श परस्त मिलेंगे या भीक मांगते दिखाई देंगे या बद मुआ़शी करते नज़र आएंगे।

सिनेमा मुसलमानों से आबाद, खेल तमाशों में मुसलमान आगे आगे, तीतर बाज़ी, बटेर बाज़ी और पतंग बाज़ी, मुर्ग़ बाज़ी ग़रज़ सारी बाज़ियां और हलाकत के सारे अस्बाब मुस्लिम क़ौम में जम्अ़ हैं। मैं तो येह देख कर ख़ून के आंसू रोता हूं कि ज़लील पेशावर मुसलमान ही मिलते हैं मीराषी मुसलमान, रन्डियां अकषर मुसलमान, ज़नाने (हीजड़े) मुसलमान, यक्का व तांगा वाले अकषर मुसलमान, जुवारी व शराबी अकषर मुसलमान, अफ़्सोस ! जो दीन बद मुआ़शियों को दुन्या से मिटाने आया उस दीन के मानने वाले आज बद मुआ़शियों में अव्वल नम्बर।

यक़ीन करो कि हमारा ज़िन्दा रहना और हम पर अ़ज़ाबे इलाही न आना सिर्फ़ इस लिये है कि हम हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में हैं। रब तआ़ला ने फ़रमाया : وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ [1]

1....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** का काम नहीं कि इन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो। (پ۹،الانفال:۳۳)

वरना पिछली हलाक शुदा क़ौमों ने जो जुर्म एक एक कर के किये थे हम उन सब के बराबर बल्कि उन से बढ़ कर करते हैं, शुऐब عَلَيۡهِ السَّلَام की क़ौम कम तोलने की मुजरिम थी, लूत़ عَلَيۡهِ السَّلَام की क़ौम ने ह़राम कारी की, लेकिन दूध में से मक्खन निकाल लेना, विलायती घी देसी बना कर बेच देना वग़ैरा वग़ैरा। उन के बाप दादों को भी न आता था लिहाज़ा मुसलमानो ! होश में आओ जल्द कोई ह़लाल कारोबार शुरूअ़ करो। अब हम बेकारी की बुराइयां और ह़लाल कमाई के नक़्ली व अ़क़्ली फ़ज़ाइल बयान करते हैं।

कस्ब के नक़्ली फ़ज़ाइल

﴾1﴿ हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से बेहतर ग़िज़ा वोह है जो इन्सान अपने हाथों की कमाई से खाए। दावूद عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी अपनी कमाई से खाते थे।

(بخاری و مشکوٰۃ باب الکسب)[1]

﴾2﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) कि त़य्यिब चीज़ वोह है जो तुम ने अपनी कमाई से खाई और तुम्हारी औलाद तुम्हारी कमाई है। या'नी मां बाप औलाद की कमाई खा सकते हैं। (ترمذی،ابن ماجہ)[2]

﴾3﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) कि एक ज़माना ऐसा आएगा जिस में रुपिये पैसे के सिवा कोई चीज़ काम न देगी।[3]

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل...الخ، الحدیث:۲۰۷۲، ج۲، ص۱۱ ومشکاۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الکسب...الخ، الحدیث:۲۷۵۹، ج۱، ص۵۱۳

2 ......سنن الترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء ان الوالد یاخذ من مال ولدہ، الحدیث: ۱۳۶۳، ج۳، ص۷۶

3 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الشامیین، المقدام بن معدیکرب، الحدیث: ۱۷۲۰۱، ج۶، ص۹۶

﴾4﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) : ह़लाल कमाई फ़र्ज़ के बा'द फ़र्ज़ है। (بیہقی)[1] या'नी नमाज़ रोज़े के बा'द कस्बे ह़लाल फ़र्ज़ है।

﴾5﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) कि रब तआ़ला ने मुसलमानों को उस चीज़ का हुक्म दिया जिस का पैग़म्बरों को दिया था कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا[2]

ऐ पैग़म्बरो ! ह़लाल रिज़्क़ खाओ और नेक अ़मल करो।

और मुसलमानों से फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ[3]

ए मुसलमानो ! हमारी दी हुई ह़लाल चीज़ें खाओ।

बा'ज़ लोग हाथ फैला फैला कर गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगते हैं ह़ालां कि उन की ग़िज़ा, उन का लिबास ह़राम कमाई का होता है फिर उन की दुआ़ क्यूं कर क़बूल हो। (مسلم)[4]

﴾6﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) कि तीन शख़्सों के सिवा किसी को मांगना जाइज़ नहीं एक वोह जो किसी मक़्रूज़ का ज़ामिन बन गया और क़र्ज़ उसे देना पड़ गया। दूसरा वोह जिस का माल आफ़ते ना गहानी से बरबाद हो गया। तीसरा वोह जो फ़ाक़ा में मुब्तला हो गया, इन के सिवा किसी और को सुवाल ह़लाल नहीं। (مسلم، مشکوٰۃ کتاب الزکوٰۃ)[5]

---

1 ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، الحدیث:۸۷٤۱، ج٦، ص ٤٢٠

2 ....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ पैग़म्बरो पाक़ीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो। (پ۱۸، المؤمنون:۵۱)

3 ....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें। (پ۲، البقرۃ:۱۷۲)

4 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب قبول الصدقۃ...الخ، الحدیث:۱۰۱۵، ص ۵۰٦

5 ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب من تحل لہ المسئلۃ، الحدیث:۱۰٤٤، ص ۵۱۹

﴾7﴿ एक बार हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में किसी अन्सारी ने सुवाल किया, फ़रमाया : "क्या तेरे घर में कुछ है ?" अ़र्ज़ किया : सिर्फ़ एक कम्बल है जिस का आधा बिछाता हूं, आधा ओढ़ता हूं और एक पियाला जिस से पानी पीता हूं। फ़रमाया : वोह दोनों ले आ, वोह ले आया। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मज्मअ़ से ख़िताब कर के फ़रमाया : इसे कौन ख़रीदता है, एक ने अ़र्ज़ किया कि मैं एक दिरम से लेता हूं फिर दो तीन बार फ़रमाया कि दिरम से ज़ियादा कौन देता है ? दूसरे ने अ़र्ज़ किया : मैं दो दिरम (नव आने) में ख़रीदता हूं। हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने वोह दोनों उन्हीं को अ़ता फ़रमा दीं (नीलाम का सुबूत हुवा) और येह दो दिरम उन साइल साहिब को दे कर फ़रमाया कि एक का ग़ल्ला ख़रीद कर घर में डालो दूसरे दिरम की कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास लाओ फिर उस कुल्हाड़ी में अपने दस्ते मुबारक से दस्ता डाला और फ़रमाया : जाओ लकड़ियां काटो और बेचो और पन्दरह रोज़ तक मेरे पास न आना। वोह अन्सारी पन्दरह रोज़ तक लकड़ियां काटते और बेचते रहे पन्दरह रोज़ के बा'द जब बारगाहे न-बवी में ह़ाज़िर हुए तो उन के पास खाने पीने के बा'द दस दिरम या'नी पौने तीन रुपै बचे थे। उस में से कुछ का कपड़ा ख़रीदा कुछ का ग़ल्ला। हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया येह मेह़नत तुम्हारे लिये मांगने से बेहतर है।

(ابن ماجه،مشکوٰة کتاب الزکوٰة)[1]

﴾8﴿ फ़रमाते हैं (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) कि जो कोई भीक न मांगने का ज़ामिन बन जाए मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं। [2](نسائی وابوداود)

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب التجارات، باب بيع المزايدة، الحديث:٢١٩٨، ج٣، ص٣٦

2 ......سنن ابى داود، كتاب الزكاة، باب كراهية المسئلة، الحديث:١٦٤٣، ج٢، ص١٧٠

《9》 हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने अबू ज़र से फ़रमाया कि तुम लोगों से कुछ न मांगो। अ़र्ज़ किया : बहुत अच्छा। फ़रमाया : अगर घोड़े पर से तुम्हारा कोड़ा गिर जाए तो वोह भी किसी से न मांगो, उतर कर खुद लो।

(احمد،مشکوٰۃ)[1]

《10》 फ़रमाते हैं (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) : जो कोई अपना फ़ाक़ा मख़्लूक़ पर पेश करे। **अल्लाह** तआ़ला उस की फ़क़ीरी बढ़ाएगा।[2]

तृम्अ़ फ़क़ीरी है और यास ग़िना[3]

कमाई के अ़क़्ली फ़वाइद

《1》 ह़लाल कमाई पैग़म्बरों की सुन्नत है।

《2》 कमाई से माल बढ़ता है और माल से स-दक़ा, ख़ैरात, ह़ज, ज़कात, मस्जिदों की ता'मीर, ख़ानक़ाहों की इमारत हो सकती है। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने माल के ज़रीए जन्नत ख़रीद ली कि उन के लिये फ़रमाया गया : اِفْعَلُوْا مَا شِئْتُمْ۔[4]

《3》 कमाई खेल कूद और सदहा जुर्मों से रोक देती है, चोरी, डकैती, बद मुआ़शी, चुग़ली, ग़ीबत, लड़ाई झगड़े सब बेकारी के नतीजे हैं।

《4》 कस्ब से इन्सान को मेह़नत की आ़दत पड़ती है और दिल से ग़ुरूर निकल जाता है।

---

1 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الزکاۃ،باب من لا تحل لہ المسالۃ...الخ،الحدیث:۱۸۵۸، ج۲،ص۳۵۳

2 ......سنن ابی داود،کتاب الزکاۃ،باب فی الاستعفاف،الحدیث:۱۶۴۵،ج۲،ص۱۷۰

3 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الزکاۃ،باب من لاتحل...الخ،الحدیث:۱۸۵۶،ج۱،ص۳۵۳

4 ..... या'नी तुम जो चाहो करो।

﴾5﴿ कस्ब में गुरबत व फ़क़ीरी से अम्न है और ग़रीबी दीन व दुन्या बरबाद कर के दोनों जहां में मुंह काला करती है, اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ

﴾6﴿ जो कोई कमाई के लिये निकलता है तो आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्ते कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला तेरी इस ह़-र-कत में ब-रकत दे और तेरी कमाई को जन्नत का ज़ख़ीरा बनाए इस दुआ़ पर ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह दुवुम)(रूहुल बयान) (1)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क्या पेशे इख़्तियार किये

किसी पैग़म्बर ने न सुवाल किया, न ना जाइज़ पेशे किये, हर नबी ने कोई न कोई ह़लाल पेशा ज़रूर किया। चुनान्चे आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अव्वलन कपड़ा बुनने का काम किया और बा'द में आप खेती बाड़ी में मश्ग़ूल हो गए। हर क़िस्म के बीज जन्नत से साथ लाए थे उन की काश्त फ़रमाते थे, इन के सिवा सारे पेशे किये। नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श लकड़ी का काम था (बढ़ई पेशा)। इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام दरज़ी गरी फ़रमाते थे। ह़ज़रते हूद और सालेह़ عليهما السلام तिजारत करते थे। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का मश्ग़ला खेती बाड़ी था। ह़ज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام जानवर पालते और उन के दूध से मआ़श ह़ासिल करते थे। लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام खेती बाड़ी करते थे। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने चन्द साल बकरियां चराईं। दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ज़िरह बनाते थे। सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام इतने बड़े बादशाह हो कर दरख़्तों के पत्तों से पंखे और ज़म्बीलें बना कर गुज़र फ़रमाते थे। ईसा عَلَيْهِ السَّلَام सैरो सियाह़त में रहे न कहीं मकान

---

(1)......تفسیرنعیمی،ج۲،ص۱۳۷وروح البیان،الجزء۲،البقرة،تحت الاية:۱٦٩،ج۱،ص۲۷۳

बनाया, न निकाह़ किया और फ़रमाते थे कि जिस ने मुझे नाश्ता दिया है वोह ही शाम का खाना भी देगा।

हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरियां भी चराई हैं और ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के माल की तिजारत भी फ़रमाई, ग़रज़ हर क़िस्म की ह़लाल कमाइयां सुन्नते अम्बिया है इस को आ़र जानना नादानी है। (तफ़्सीरे नई़मी, अ़ज़ीज़ी)

बेहतर पेशा

अफ़्ज़ल पेशा जिहाद फिर तिजारत फिर खेती बाड़ी फिर सन्अ़त व ह़रफ़त है, उ़-लमाए किराम ने फ़रमाया कि जाइज़ पेशों में तरतीब है कि बा'ज़ से बा'ज़ आ'ला हैं।

जिन पेशों से दीन व दुन्या की बक़ा है दूसरे पेशों से अफ़्ज़ल हैं चुनान्चे बेहतर सन्अ़त दीनी तस्नीफ़ और किताब है कि इस से क़ुरआनो ह़दीष और सारे दीनी उ़लूम की बक़ा है फिर आटे की पिसाई और चावल की साफ़ कराई कि इस से नफ़्से इन्सान की बक़ा है फिर रूई धुनाई, सूत कताई और कपड़ा बुनना है कि इस से सित्र पोशी है फिर दरज़ी गरी का पेशा भी कि इस का भी येही फ़ाएदा है फिर रोशनी का सामान बनाना कि दुन्या को इस की भी ज़रूरत है फिर मे'मारी, ईंट बनाना (भट्टा) और चूने की तय्यारी है कि इस से शहर की आबादी है। रही ज़रगरी, नक़्क़ाशी, कारचोबी, ह़ल्वा साज़ी, इ़त्र बनाना येह पेशे जाइज़ हैं मगर इन का कोई ख़ास द-रजा नहीं क्यूं कि फ़क़त़ ज़ीनत के सामान हैं। ख़ुलासा येह है कि बेकार रहना बड़ा जुर्म है और ना जाइज़ पेशे करना इस से बढ़ कर जुर्म, **रब तआ़ला** ने हाथ पाउं वग़ैरा बरतने के लिये दिये हैं न कि बेकार छोड़ने के लिये। (तफ़्सीरे नई़मी, तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी)

ना जाइज़ पेशे

बे मुरुव्वती के पेशे मकरूह हैं जैसे ज़रूरत के वक़्त ग़ल्ला रोकना (एह्तिकार), ग़स्साली, कफ़न दोज़ी के पेशे, वकालत और दलाली। हां ब वक़्ते ज़रूरत इन दोनों में ह़रज नहीं जब कि झूट वग़ैरा से बचे, ह़राम चीज़ों के कारोबार ह़राम हैं जैसे गाना बजाना, नाचना, शकरे बाज़ी, बटेर बाज़ी वग़ैरा झूटी गवाही के पेशे ऐसे ही शराब की तिजारत कि शराब खींचना, खिंचवाना, बेचना, बिकवाना, ख़रीदना, ख़रीदवाना, मज़दूरी पर ख़रीदार के घर पहुंचाना येह सब ह़राम हैं। ऐसे ही जानवर के फ़ोटो की तिजारत ना जाइज़ है। फ़ोटो भी खींचना, खिंचवाना सब ना जाइज़, जूए के कारोबार ह़राम, जूआ खेलना, खिलवाना, जूए का माल लेना सब ह़राम हैं। ऐसे ही मुसलमानों से सूदी कारोबार ह़राम, सूद लेना, दिलवाना, खाना और इस का गवाह बनना, वकालत करना सब ह़राम है।

उ़-लमाए मु-तक़द्दिमीन इमामत, अज़ान, मस्जिद की ख़िदमत, इ़ल्मे दीन की ता'लीम पर मज़दूरी लेने को मकरूह फ़रमाते थे मगर उ़-लमाए मुतअख़्ख़िरीन ने जब येह देखा कि इस सूरत में मस्जिदें वीरान हो जाएंगी, ता'लीमे दीन बन्द और इमामत, अज़ान मौक़ूफ़ हो जाएंगी लिहाज़ा इसे बिला कराहत जाइज़ फ़रमाया, ता'वीज़ की उजरत बिला कराहत जाइज़ है।

ख़ुलासा येह कि ह़राम और मकरूह पेशों के सिवा किसी जाइज़ पेशे में आ़र नहीं जो लोग पेशे को आ़र समझ कर क़र्ज़दार हो गए वोह दीन व दुन्या में नुक़्सान में रहे। मुसलमानों की अ़क़्ल पर कहां तक मातम

किया जाए, इन **अल्लाह** के बन्दों ने **सूद लेना ह़राम जाना** और देना ह़लाल समझा बिला ज़रूरत मुक़द्दमा बाज़ी, शादी, ग़मी की रुसूम अदा करने के लिये बे धड़क सूदी क़र्ज़ ले कर बरबाद होते हैं।

ख़याल रखो कि सूद लेने वाला सिर्फ़ गुनाहगार है और सूद देने वाला गुनाहगार भी है और बे वुक़ूफ़ भी कि सूदख़ोर अपनी आख़िरत बरबाद कर के दुन्या तो बना लेता है मगर सूद देने वाला बे वुक़ूफ़ अपने दीन व दुन्या दोनों बरबाद करता है। मैं ने एक किताब में देखा कि इस वक़्त हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर दीगर क़ौमों का डेढ़ अरब वोह सूदी रुपिया क़र्ज़ है जिन के मुक़द्दमात दाइर हैं और येह तो देखने में बहुत आता है कि मुसलमानों के मह़ल्ले के मह़ल्ले मकानात, दुकानें, जाएदादें इस सूद की बदौलत बनियों के पास पहुंच गईं।

काश ! अगर मुसलमान सूद देने को सूदख़ोरी की त़रह़ ह़राम समझते तो इन्हें येह रोज़े बद देखना नसीब न होता, काश ! अब भी मुसलमानों की आंखें खुल जाएं और अपना मुस्तक़्बिल संभालें, समझ लो कि अगर तुम ज़मीन से मह़रूम हो गए तो हिन्दुस्तान में तुम्हारी ह़ैषिय्यत मुसाफ़िर की सी है कि कुफ़्फ़ार जब चाहें तुम से अपनी ज़मीन ख़ाली करा लें।

मा'ज़ूर मुसलमान

आ़म तौ़र पर देखा गया है कि मुसलमानों में अन्धे, अपाहिज लोग और बेवा औ़रतें, यतीम बच्चे भीक पर गुज़ारा करते हैं, जगह जगह रेलों और घरों में यतीम बच्चे यतीम ख़ानों के नाम पर भीक मांगते फिरते हैं मगर हिन्दू नाबीना, लूले, लंगड़े अपने लाइक़ मेह़नत मज़दूरी कर के पेट पालते हैं। मैं ने बहुत से अन्धे और लंगड़े हिन्दू सुर्ख़ी

कूटते, तम्बाकू बनाते और ऐसी मज़दूरी करते हुए देखे जो वोह न कर सकें। उन के यतीम बच्चों के लिये आश्रम और पाठशाले [1] खुले हुए हैं।

अमृतसर में एक गुरूकुल (दारुल यतामा) है जिस में हिन्दू यतीमों को ता'लीम दी जाती है वहां का त़रीक़ए ता'लीम येह है कि सुब्ह़ दो घन्टे पढ़ाई और दो घन्टे किसी हुनर की ता'लीम म-षलन साबून साज़ी, दरज़ी गरी, कारचोबी वग़ैरा फिर बा'द दो पहर वोह बच्चे दिया सलाई की डिबियां, बटन और दीगर छोटी छोटी चीज़ें ले कर बाज़ार में बैठ जाते हैं और शाम तक आठ दस आने कमा ही लेते हैं। ग़र्ज़े कि भीक से भी बचते हैं और मद्रसे से इल्म के साथ हुनर भी सीख कर निकलते हैं।

अब बतलाओ कि जब मुसलमानों के येह भिकारी यतीम ख़ाने से और हिन्दूओं के कारोबारी यतीम गुरूकुल से निकलेंगे तो इन की ज़िन्दगी में कितना फ़र्क़ होगा।

ऐ मुस्लिम क़ौम ! अपनी आने वाली नस्ल को संभाल, येह समझना कि मा'ज़ूर आदमी कुछ नहीं कर सकता सख़्त ग़लत़ है, मैं ने गुजरात पंजाब में एक ऐसा नाबीना मुसलमान भी देखा जो हज़ारों रुपों की तिजारत करता है, इस से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मा'ज़ूरी के बा वुजूद भी कारोबार हो सकता है। मेरे नज़्दीक वोह मुसलमान जो सिर्फ़ पन्ज वक़्ती नमाज़ पढ़े और कमा कर खाए उस कम हिम्मत से अफ़्ज़ल है जो क़वी और तन्दुरुस्त हो कर सिर्फ़ वज़ीफ़े पढ़ा करे और भीक को ज़रीअ़ए मआ़श बनाए।

1.... या'नी स्कूल।

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن सिर्फ़ नमाज़ी ही न थे वोह मस्जिदों में नमाज़ी थे, मैदाने जंग में बहादुर ग़ाज़ी। कचहरी में क़ाज़ी और बाज़ार में आ'ला द-रजे के कारोबारी। ग़र्ज़ें कि मद्रसए न-बवी में उन की ऐसी आ'ला ता'लीम हुई थी कि वोह मस्जिदों में मला-इ-कए मुक़र्रबीन का नुमूना होते थे मस्जिदों से बाहर मुदब्बिराते अम्र का नक़्शा पेश करते थे।

पेशा और क़ौमिय्यत

मुसलमानों की बेकारी की वजह इन की झूटी क़ौमिय्यत और ग़लत़ क़ौम परस्ती है। हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने पेशे पर क़ौमिय्यत बनाई और पेशावर क़ौमों को ज़लील जाना, उन बे वुक़ूफ़ों के नज़्दीक जो कमा के ह़लाल रोज़ी खाए वोह कमीन है और भिकारी, सूदी, मक़रूज़, चोरी, डकैती करने वाला शरीफ़। अल्लाह तआ़ला अ़क़्ल नसीब फ़रमाए। जो कपड़ा बुनने का पेशा करे वोह जूलाहा हो गया, जो मुसलमान चमड़े का कारोबार करने लगें उन्हें मोची का ख़िताब मिल गया, जो कपड़ा सी कर अपने बच्चों को पाले वोह दरज़ी कहला कर क़ौम से बाहर हुवा, जो रूई धुनने का काम करे वोह धुनिया कहलाया गया और उठते बैठते उन पर ता'ने भी हैं उन का मज़ाक़ भी उड़ाया जा रहा है, बात बात में कहा जाता है : हट जूलाहे, चल बे धुनिये, दूर हो मोची, यहां तक देखा गया है कि अगर किसी ख़ानदान में किसी ने चमड़े की तिजारत की तो उस के पड़पोतों को अपनी क़ौम में लड़की नहीं मिलती। कहा जाता है कि इस की फ़ुलानी पुश्त में चमड़े की दुकान होती थी। इस बे वुक़ूफ़ी का येह अन्जाम हुवा कि मुसलमान सारे पेशों से मह़रूम रह गए अब इन के लिये सिर्फ़ तीन रास्ते हैं या लालाजी के हां ज़िल्लत की नोकरी करें या ज़मीन जाएदाद बेच कर खाएं या भीक मांगें, चोरी करें और अपनी शराफ़त को ओढ़ें और बिछाएं। ख़याल

रखो कि तमाम मुल्कों में मुल्के अ़रब आ'ला व अफ़्ज़ल है कि वहां ही ह़ज होता है और वोह ही मुल्क आफ़्ताबे नुबुव्वत का मश्रिक़ व मग़्रिब बना। बाक़ी पंजाब, बंगाल, यू.पी., सी.पी., ईरान, तहरान, चीन व जापान सब यक्सां हैं, ह़ज कहीं नहीं होता। न पंजाबी होना कमाल है न हिन्दुस्तानी होना फ़ख़्र, न ईरानी होना विलायत है न तहरानी होना, बेशक अहले अ़रब हमारे मख़्दूम हैं कि वोह हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोसी हैं ऐसे ही ह़ज़राते सादाते किराम इस्लाम के शहज़ादे और मुसलमानों के सरदार हैं।

हु़ज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत में सारे नसब ह़सब बेकार होंगे, सिवाए मेरे नसब के। (شامی)[1]

बाक़ी सारी इस्लामी क़ौमें शैख़, मुग़ल, पठान और दीगर अक़्वाम बराबर हैं। इन में नबीज़ादा कोई नहीं, शराफ़त आ'माल पर है न कि मह़ज़ नसब पर, रब तआ़ला फ़रमाता है :

جَعَلۡنٰكُمۡ شُعُوۡبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوۡا ؕ اِنَّ اَكۡرَمَكُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ اَتۡقٰكُمۡ ؕ[2]

*हम ने तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़बीले इस लिये बनाया कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचान सको, **अल्लाह** के नज़्दीक इ़ज़्ज़त वाला वोही है जो तुम में जियादा परहेज़ गार हो।*

जैसे कि ज़मीन में मुख़्तलिफ़ शहर और गाउं हैं और शहरों में मुख़्तलिफ़ मह़ल्ले ताकि मुल्की इन्तिज़ाम में आसानी रहे और हर एक से ख़त़ व किताबत की जा सके। ऐसे ही इन्सानों में मुख़्तलिफ़ क़ौमें हैं और हर क़ौम के मुख़्तलिफ़ क़बीले ताकि इन्सान एक दूसरे से मिले

---

1 ......المعجم الكبير للطبرانی،عکرمة عن ابن عباس،الحدیث:۱۱۶۲۱،ج۱۱،ص۱۹٤

2 ....तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें शाखें और कबीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है। (پ۲٦،الحجرات:۱۳)

जुले रहें और इन में नज़्म और इन्तिज़ाम रहे, महूज़ क़ौमिय्यत को शराफ़त या रिज़ालत का मदार ठहराना सख़्त ग़-लती है यक़ीन करो कि कोई मुसलमान कमीन नहीं और कोई काफ़िर शरीफ़ नहीं। इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत मुसलमानों के लिये है। रब तआ़ला फ़रमाता है :

لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ (1)

इ़ज़्ज़त अल्लाह और रसूल के लिये है और मुसलमानों के लिये।

फिर मुसलमानों में जिस के आ'माल ज़ियादा अच्छे उसी की इ़ज़्ज़त, ज़ियादा शरीफ़ वोह जो शरीफ़ों के से काम करे और कमीन वोह जो कमीनों की सी ह़-र-कतें करे। शैख़ सा'दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं :

هـزار خویش که بے گانه از خدا باشد　　فـدائے یك تـنِ بے گـانـه کاشنا باشد

हमारे वोह अपने जो अल्लाह व रसूल के ग़ैर हों उस एक ग़ैर पर क़ुरबान हो जाएं जो अल्लाह व रसूल के अपने हों

جَلَّ وَاَعْلٰی تَبَارَکَ وَتَعَالٰی وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم

किसी हिन्दी शाइ़र ने कहा है :

राम नाम कश्ते भले कि टप टप टपके जाम
दारों कन्चन देह को कि जिस सुख नाहीं राम

ग़रज़ कि ह़लाल पेशों को ज़िल्लत समझ कर छोड़ बैठना सख़्त ग़-लती है अब तो ज़माना बहुत पलट चुका है। बड़े बड़े लोग कपड़े और सूत के कारख़ाने क़ाइम कर रहे हैं। तुम कब तक सोओगे, ख़्वाबे ग़फ़्लत से उठो और मुस्लिम क़ौम की ह़ालत पलट दो, बेकारों

1.... तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों के लिये है। (پ۲۸،المنافقون:۸)

को बा कार बनाओ, क़र्ज़दारों को क़र्ज़ से आज़ाद करो, अपने बच्चों को जाहिल न रखो इन्हें ज़रूर ता'लीम दिलवाओ और साथ ही कोई हुनर भी सिखा दो ताकि वोह किसी के मोहताज न रहें।

तिजारत

पहले मा'लूम हो चुका है कि तिजारत पेशए अम्बिया है इस के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं। हदीष शरीफ़ में है कि ताजिर मरज़ूक़ है और ज़रूरत के वक़्त ग़ल्ला रोकने वाला मलऊन है। (ابن ماجه)[1]

बा'ज़ रिवायात में है कि रब तआला ने रिज़्क़ के दस हिस्से किये नव हिस्से ताजिर को दिये और एक हिस्सा सारी दुन्या को।

नीज़ रिवायत में है कि क़ियामत के दिन सच्चा और अमीन ताजिर अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सिद्दीक़ीन और शु-हदा के साथ होगा।[2]

ताजिर दर हक़ीक़त ताजवर है। मिष्ल मशहूर है कि ताजिर के सर पर ताज है, तिजारत से दुन्या का क़ियाम है। तिजारत से बाज़ारों की रोनक़, मुल्कों की आबादी, इन्सान की ज़िन्दगी क़ाइम है। मरे, जीते तिजारत की ज़रूरत है, मय्यित का कफ़न और क़ब्र के तख़्ते ताजिर ही से ख़रीदे जाते हैं। सल्तनत का मदार तिजारत पर है आज मुल्की जंगें तिजारत के लिये होती हैं।

ता'मीरे मस्जिद के लिये ईंट, चूना वग़ैरा ताजिरों के हां से आता है, मस्जिद के मुसल्ले, चटाइयां ताजिर की दुकान से आते हैं, ग़िलाफ़े का'बा के लिये कपड़ा ताजिर ही से मिलता है। सित्र पोशी के

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب التجارات، باب الحكرة والجلب، الحديث:٢١٥٣، ج٣، ص١٣

2 ......سنن الدار قطنى، كتاب البيوع، الحديث:٢٨١٢، ٢٨١٣ ج٣، ص٣٨٧

लिये कपड़ा और रोज़ा इफ़्तार करने के लिये इफ़्तारी दुकान से ही ख़रीदी जाती है, क़ुरआनो ह़दीष छापने के लिये काग़ज़, रोशनाई ताजिर से ही मिलती है ग़रज़ कि तिजारत दीन व दुन्या के लिये ज़रूरी है मगर अफ़्सोस कि हिन्दुस्तान के मुसलमान इस से बे बहरां हैं।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की ता'दाद दस करोड़ है अगर फ़ी कस आठ आने यौमिया ख़र्च का औसत् हो तो मुसलमान पांच करोड़ रुपिया रोज़ ख़र्च करते हैं और सब तक़रीबन ग़ैर क़ौमों के पास जाता है गोया हर दिन मुस्लिम क़ौम पांच करोड़ रुपिया कुफ़्फ़ार की जेब में डालती है। इसी ह़िसाब से मुसलमानों का माहवार डेढ़ अरब रुपिया और सालाना अठ्ठारह अरब ग़ैर क़ौम के पास पहुंचता है।

काश ! अगर इस का आधा रुपिया भी अपनी क़ौम में रहता तो आज हमारी क़ौम के दिन फिर जाते। येह सब "ब-र-कतें" तिजारत से दूर रहने की हैं, हम ह़ज को जाएं तो ग़ैरों की जेब भरें, ईद मनाएं तो ग़ैर खाएं, ग़र्ज़ कि जियें तो ग़ैरों को दें और मरें तो ग़ैरों को दे कर जाएं इस लिये उठो और तिजारत में कूद पड़ो। आहिस्ता आहिस्ता मन्डियों पर क़ब्ज़ा कर लो और अपने क़ब्ज़े का काम करो क्यूं कि दियानत दार और ख़ैर ख़्वाह आदमी नहीं मिलते हर शख़्स अपना उल्लू सीधा करना चाहता है।

ह़िकायत

एक बार सुल्तान मुह़युद्दीन औरंगज़ेब ग़ाज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बहुत लम्बी दुआ मांगी। एक फ़क़ीर बोला कि ह़ज़रत : अब क्या गधा चाहते हो ? तख़्त पर बैठे हो, ताज वाले हो राज कर रहे हो, बाज ले रहे हो, अब इतनी लम्बी दुआएं काहे के लिये मांगते हो ? आप ने फ़ौरन

फ़रमाया कि ह़ज़रत : गधा नहीं आदमी मांगता हूं, अल्लाह तआ़ला अच्छा मुशीर अ़त़ा फ़रमाए। ग़र्ज़े कि बेहतरीन साथी बहुत मुश्किल से हाथ आता है।

ह़िकायत

किसी ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा कि इस की क्या वजह है कि तीन ख़ु-लफ़ा के ज़माने में फ़ुतूह़ाते इस्लामिया बहुत हुईं और आप के ज़मानए ख़िलाफ़त में ख़ाना जंगी ही रही। आप ने फ़ौरन जवाब दिया कि वजह सिर्फ़ येह है कि उन के वज़ीर व मुशीर हम थे और हमारे मुशीर हो तुम। जैसा मुशीर, वैसा सुल्त़ान।

ख़ुश अख़्लाक़ी

यूं तो हर मुसलमान को ख़ुश ख़ुल्क़ होना लाज़िम है मगर ताजिर को ख़ुसूसिय्यत से ख़ुश ख़ुल्क़ी ज़रूरी है। मुसलमान ताजिरों की नाकामी का एक सबब इन की बद ख़ुल्क़ी भी है कि जो गाहक उन के पास एक बार आ गया वोह उन की बद ख़ुल्क़ी की वजह से दोबारा नहीं आता। हम ने हिन्दू ताजिरों को देखा कि जब वोह किसी मह़ल्ले में नई दुकान रखते हैं तो छोटे बच्चों को जो सौदा ख़रीदने आएं कुछ रौंक या चोंगा भी देते रहते हैं ताकि बच्चे इस लालच में हमारे ही यहां से सौदा ख़रीदें, बड़े सौदागर ख़ास गाहकों की पान, बीड़ी, सिगरेट बल्कि कभी खाने से भी तवाज़ोअ़ करते हैं। येह सब बातें गाहक को हिला लेने की हैं अगर तुम येह कुछ न कर सको तो कम अज़ कम गाहक से ऐसी मीठी बात करो और ऐसी मह़ब्बत से बोलो कि वोह तुम्हारा गिरवीदा हो जाए।

दियानत दारी

ताजिर को नेक चलन, दियानत दार होना ज़रूरी है, बद चलन, बद मुआ़श, ह़राम ख़ोर कभी तिजारत में काम्याब नहीं हो सकता। उसे बद मुआ़शी से फ़ुरसत ही न मिलेगी, तिजारत कब करे। मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार तिजारत में बहुत दियानत दारी से काम लेते हैं। दियानत दारी से ही बाज़ार से क़र्ज़ मिल सकता है, दियानत दारी से ही लोग उस पर भरोसा करेंगे, दियानत दारी से ही बेंक और कम्पनियां चलती हैं। कम तोलने वाला, झूटा, ख़ाइन कुछ दिन तो ब ज़ाहिर नफ़्अ़ कमा लेता है मगर आख़िरे कार सख़्त नुक़्सान उठाता है।

मेह़नत

यूं तो दुन्या में कोई काम बिग़ैर मेह़नत नहीं होता मगर तिजारत तो सख़्त मेह़नत, चुस्ती और होशियारी चाहती है। काहिल सुस्त आदमी कभी किसी काम में काम्याब नहीं हो सकता। मिष्ल मशहूर है कि बिग़ैर मेह़नत तो लुक़्मा भी मुंह में नहीं जाता, ताजिर ख़्वाह कितना ही बड़ा आदमी बन जाए मगर सारे काम नोकरों पर ही न छोड़ दे, बा'ज़ काम अपने हाथ से भी करे। हम ने बनियों को अपने हाथ से दालें दलते और सौदा ख़ुद उठा कर लाते हुए देखा।

तिजारत के उसूल

तिजारत के चन्द उसूल हैं जिस की पाबन्दी हर ताजिर पर लाज़िम है या'नी पहले ही बड़ी तिजारत शुरूअ़ न कर दो बल्कि मा'मूली काम को हाथ लगाओ। आप ह़दीष शरीफ़ सुन चुके कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को लकड़ियां काट कर फ़रोख़्त करने का हुक्म फ़रमाया।

हिकायत

एक शख़्स तिजारत करना चाहते थे वोह किसी मशहूर फ़र्म के मालिक के पास मश्वरे के लिये पहुंचे। उन का ख़याल था कि तिजारत में निहायत पोशीदा राज़ होंगे जिन्हें मा'लूम करते ही मैं एक दम लाख पती बन जाऊंगा। मालिके फ़र्म ने मश्वरा दिया कि आप पांच रुपिये की दिया सलाई की डिबियां ले कर बाज़ार में बैठ जाएं, अगर शाम को पांच आने के पैसे भी कमाए तो आप काम्याब हैं, जब इस की बिकरी कुछ बढ़ जाए तो इस के साथ कुछ सिगरेट की डिबियां भी रख लें जब येह काम चल पड़े तो पान छालिया भी रख लें यहां तक कि एक दिन पूरे पनवाड़ी बल्कि पूरे पन्सारी बन जाएंगे। देखो हिन्दूओं के बच्चे पहले ही मुनीम नहीं बन जाते बल्कि अव्वलन मा'मूली ख़्वान्चे बेचते हैं उसी ख़्वान्चे से एक दिन लखपती बन जाते हैं। हम ने काठियावाड़ में मैमन ताजिरों को देखा कि जब वोह किसी को तिजारत सिखाते हैं तो एक साल बावर्ची रखते हैं, दूसरे साल उधार वुसूल करने पर, तीसरे साल बिल्टियां छुड़ाने और माल रवाना करने पर, चौथे साल ख़ुर्दा फ़रोशी पर, फिर दुकान की चाबियां सिपुर्द कर देते हैं।

﴾1﴿ हर शख़्स अपने मुनासिब ताक़त तिजारत करे, क़ुदरत ने हर एक को अ़लाहिदा अ़लाहिदा काम के लिये बनाया है किसी को ग़ल्ला की तिजारत फलती है, किसी को कपड़े, किसी को लकड़ी की, किसी को किताबों की, ग़र्ज़ कि तिजारत से पहले येह ख़ूब सोच लो कि मैं किस क़िस्म की तिजारत में काम्याब हो सकता हूं।

अपनी कहानी

मेरा मश्ग़ला शुरूअ़ से ही इल्म का रहा, मुझे भी तिजारत का शौक़ था कि मैं ने ग़ल्ले की मुख़्तलिफ़ तिजारतें कीं मगर नुक़्सान उठाया, अब किताबों की तिजारत को हाथ लगाया। रब तआ़ला ने बड़ा फ़ाएदा दिया। मा'लूम हुवा कि उ़-लमा और मुदर्रिसीन को इल्मी तिजारत फ़ाएदा मन्द हो सकती है, हम ने बा'ज़ ऐसे हिन्दू मास्टर भी देखे जो पढ़ाते हैं और साथ साथ क़लम, दवात, पेन्सिल, काग़ज़ वग़ैरा की मद्रसे ही में तिजारत भी करते हैं इस नफ़्अ़ से अपना माहवारी ख़र्च चला कर तन-ख़्वाह सारी बचाते हैं ग़र्ज़े कि तिजारत के लिये इन्तिख़ाबे कार की बड़ी सख़्त ज़रूरत है।

﴾2﴿ किसी ऐसे काम में हाथ मत डालो जिस की तुम्हें ख़बर न हो और सब कुछ दूसरों के क़ब्ज़े में हो।

एक सख़्त ग़-लती : अव्वलन तो मुसलमान तिजारत करते ही नहीं और करते भी हैं तो उसूली ग़-लतियों की वजह से बहुत जल्द फ़ेल हो जाते हैं, मुसलमानों की ग़-लतियां ह़स्बे ज़ैल हैं।

﴾1﴿ मुस्लिम दुकान दारों की बद ख़ुल्क़ी

कि जो गाहक उन के पास एक दफ़्आ़ आता है फिर उन की बद मिज़ाजी की वजह से दोबारा नहीं आता।

﴾2﴿ जल्द बाज़ या ना वाक़िफ़ ताजिर

दुकान रखते ही लखपती बनना चाहते हैं अगर दो दिन बिकरी न हो या कुछ घाटा पड़े तो फ़ौरन बद दिल हो कर दुकान छोड़ बैठते हैं इस की बहुत मिषालें मौजूद हैं।

﴾3﴿ नफ़्अ़ बाज़ी

आ़म तौर पर मुसलमान ताजिर जल्द मालदार बनने के लिये

ज़ियादा नफ़्अ़ पर तिजारत करते हैं। एक ही चीज़ और जगह सस्ती बिकती है और इन के हां गिरां तो इन से कौन ख़रीदेगा। आ़म तिजारत में नफ़्अ़ ऐसा चाहिये, जैसे आटे में नमक, हां नादिर व नायाब चीज़ों पर ज़ियादा नफ़्अ़ लिया जाए तो ह़रज नहीं।

﴾4﴿ बे जा ख़र्च

ना वाक़िफ़ ताजिर मा'मूली कारोबार पर बहुत ख़र्च बढ़ा लेते हैं, उन की छोटी सी दुकान इतना ख़र्च नहीं उठा सकती आख़िर फ़ेल हो जाते हैं।

मुसलमान ख़रीदारों की ग़-लती

हिन्दू मुसलमान ताजिर को देखना चाहते ही नहीं, उन्हें मुसलमान की दुकान कांटे की त़रह़ खटकती है। बहुत दफ़्आ़ देखा गया है कि जहां किसी मुसलमान ने दुकान निकाली तो आस पास के हिन्दू दुकानदारों ने चीजें फ़ौरन सस्ती कर दीं वोह समझते हैं कि हम तो बहुत कमा भी चुके और आइन्दा कमाएंगे भी। दो चार महीने अगर न कमाया तो न सही, मुसलमान ख़रीदार एक पैसे की रिआ़यत देख कर बनियों पर टूट पड़ते हैं। अपने ग़रीब भाई पर नज़र नहीं करते। अगर हिन्दू के हां पैसे के चार पान मिल रहे हों और मुसलमान के हां तीन तो मुसलमान से तीन लो और दिल में समझ लो कि अगर येह मुसलमान भाई हमारे घर आता तो इसे एक पान खिलाना ही पड़ता, हम ने एक पान से इस की तवाज़ोअ़ ही कर दी। दिल में कुछ गुन्जाइश पैदा करो। दिली गुन्जाइश से क़ौमें बनती हैं।

हि़कायत

मुझ से एक ताजिर ने कहा कि एक अंग्रेज़ मेरी दुकान पर छड़ी ख़रीदने आया मैं ने निहायत नफ़ीस जापानी छड़ी पेश की जिस की क़ीमत बारह आने थी। उस ने छड़ी बहुत पसन्द की और बहुत ख़ुश हुवा मगर जापान की मोहर पढ़ते ही झुंझला कर पटक दी बोला : डैम [1] जापान, इंग्लिश माल लाओ, मैं ने लन्दन की बनी हुई मा'मूली छड़ी दी जिस की क़ीमत पूरे तीन रुपै थी वोह ब ख़ुशी ले गया। येह है क़ौम परस्ती कि जापानी सस्ता और ख़ूब सूरत माल न लिया और लन्दन का बना हुवा मा'मूली माल ज़ियादा क़ीमत से ले गया। मुसलमान ख़रीदार इस से इ़ब्रत पकड़ें।

माल के लिये उलट पलट

ताजिर के लिये येह भी ज़रूरी है कि उस का माल बिला वजह रुका न रहे जो लोग गिरानी के इन्तिज़ार में माल क़ैद कर देते हैं वोह सख़्त ग़-लती करते हैं कि कभी बजाए महंगाई के माल सस्ता हो जाता है और अगर कुछ मा'मूली नफ़्अ़ पा भी लिया तो भी ख़ास फ़ाएदा नहीं ह़ासिल होता। साल में एक बार अठन्नी रुपिया नफ़्अ़ हो जाने से रोज़ाना इकन्नी रुपिया नफ़्अ़ बेहतर है। तिजारत के और भी बहुत से उसूल हैं जो किसी ताजिर से ह़ासिल हो सकते हैं।

मुसलमानो ! ह़लाल रिज़्क़ ह़ासिल करो, बेकारी सदहा गुनाहों की जड़ है, रिज़्क़े ह़लाल से इ़बादत में ज़ौक़, नेकियों का शौक़ और इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा होता है जिस घर के बच्चे आवारा और जवान बेकार हों वोह घर चन्द दिन का मेहमान है। मस्नवी शरीफ़ में है :

1.... तह़क़ीर और तरदीद के लिये बोला जाता है।

علم و حکمت زاید از لقمہ حلال — عشق و رقت زاید از لقمہ حلال

لقمہ تخم است و برش اندیشھا — لقمہ بحر و گوھرش اندیشھا!

زاید از لقمہ حلال اندر دھاں — میل خدمت عزم سوئے آں جھاں

چون ز لقمہ تو حسد بینی و دام! — جھل و غفلت زاید آں را داں حرام (1)

हक़ तआला मेरी इस नाचीज़ गुफ़्तगू में अषर दे और मेरी मुस्लिम क़ौम को बेकारी से बचाए और मुझे वोह दिन दिखाए कि मैं अपने हर मुसलमान भाई को दीनदार, फ़ारिगुल बाल और मुसलमान का ख़ैर ख़्वाह देखूं।

اٰمِيْن وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِهٖ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ

भलाई की मुहर और गुनाह मुआफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मुहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ येह है :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 176 بحوالہ ابوداؤد شریف، کتاب الادب، ص ٦٦٧، ج ٢)

तर्जमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।

1.... तर्जमा : इल्मो हिक्मत ह़लाल के लुक़्मे से पैदा होती है, इश्क़ो रिक्क़त भी ह़लाल के लुक़्मे से नसीब होती है, जब लुक़्मे से ह़सद और जहल व ग़फ़लत पैदा हो समझो वोह लुक़्मा ह़राम है लुक़्मा बीज है और उस का समर फ़क़रात, लुक़्मा दरिया है और इस का मोती तफ़क्कुरात, लुक़्मए ह़लाल मुंह में होता है तो उस की ब-रकत से आख़िरत के उमूर की त़रफ़ तवज्जोह हो जाती है।

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۴۰ھ	برکات رضا ہند
تفسیر روح البیان	امام اسماعیل حقی البروسوی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل البخاری ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابن ماجہ محمد بن یزید القزوینی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن الاشعث السجستانی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیہقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
سنن الدار قطنی	امام علی بن عمر الدار قطنی ۳۸۵ھ	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت
کشف الخفاء	امام الشیخ اسماعیل بن محمد العجلونی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مشکاۃ المصابیح	امام ولی الدین محمد بن عبد اللہ التبریزی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مجمع الزوائد	امام نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
عمدۃ القاری	امام بدر الدین محمود بن احمد العینی ۸۵۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
رد المحتار	امام محمد امین ابن عابدین الشامی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت
الدر المختار	امام علاء الدین محمد بن علی الحصکفی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت
البحر الرائق	امام زین الدین ابن نجیم المصری ۹۷۰ھ	کوئٹہ

فتح القدير	امام ابن الهمام كمال الدين محمد بن عبدالواحد الحنفی ٨٦١ ھ	کوئٹہ
الفتاوی الهندية	مولانا الشيخ نظام ١١١٨ھ وجماعة من علماء الهند	کوئٹہ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی ١٣٦٧ھ	مکتبة المدینه کراچی
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی ١٣٦٧ھ	مکتبہ رضویہ کراچی
نماز کے احکام	علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبة المدینه کراچی
جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی ١٣٩١ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
مدارج النبوت	شیخ محقق شاہ محمد عبدالحق محدث دہلوی ١٠٥٢ھ	نوریہ رضویہ پبلشنگ لاہور
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ١٣٤٠ھ	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
فیضان سنت	علامہ مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری رضوی	مکتبة المدینه کراچی
اردو لغت	ترقی اردو بورڈ کراچی	ترقی اردو بورڈ کراچی
فیروز اللغات	مولوی فیروز الدین	فیروز سنز لاہور

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाहुल जीद फ़ी तह्लीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)

(9) राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उक़ूक़) (कुल सफ़हात : 125)

(11) दुआ के फ़ज़ाइल (अह्सनुल विआअ लि आदाबिद्दुआअ मअ़ह् ज़ैलुल मुद्दआ लि अह्सनिल विआअ) (कुल सफ़हात : 140)

शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
मौलाना अह्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74) । (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77) । (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62) । (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़हात : 60) । (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46) । (17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70) । (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93) । (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह्तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी) (कुल सफ़हात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)

(26) इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)
(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)
(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)
(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)
(36) अर-बई़ने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)
(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)
(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)
(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)
(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)
(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)
(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)
(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)
(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)
(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)
(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)
(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
(59) अह़ादीषे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)
(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)
(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबिह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)
(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्हात : 102)

(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद)(कुल सफ़्हात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बहरुद्दुमूअ़) (कुल सफ़्हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्हात : 136)

(70) उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़्हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हि़स्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हि़स्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हि़स्सए दुवुम) (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जैल खाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्ह़ात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इलाज (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़्ह़ात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्ह़ात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़कमत (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्ह़ात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्ह़ात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्ह़ात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्ह़ात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2)(कुल सफ़्ह़ात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्ह़ात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (4) (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 32)

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाखें

अह़मद आबाद : सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मद आबाद-1, (M) 09327168200

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6

फ़ोन : (011) 23284560

Web : www.dawateislami.net / E-mail : maktabadelhi@gmail.com

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)